# संसारदर्पण ।

जिसमें यह उत्तम रीति से झलकाया गया है कि कतिपय
आधुनिक पढ़े लिखे फैशन् के पीछे अपनी प्राचीन
परिपाटी को छोड़ अँग्रेजी ढंग को ग्रहण
कर कैसी दुर्दशा भोगते हैं।

इस ग्रन्थ को काज़ी अज़ीज़ुद्दीन अहमद साहब डिप्टी कलेक्टर
गढ़वाल (हाल जौनपुर) व मेम्बर एशियाटिक सुसाइटी
की आज्ञा से उनके उर्दू ग्रन्थ से अनुवाद करके
भारतजीवनसम्पादक बाबू रामकृष्ण
वर्म्मा ने प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।
सम्वत् १९५२ ।

# संसारदर्पण ।

## भूमिका

पाठकगण,

आज हम इस नवीन पुस्तक को लेकर आपके सन्मुख उपस्थित होते हैं आपने अनेक नाटक उपन्यास देखे होंगे पर इस किस्से से आपको एक विलक्षण प्रकार की शिक्षा प्राप्त होगी । जैसी शिक्षा की परिपाटी आज कल बिगड़ रही है और जैसा प्रवाह फ़ैशन् का इन दिनों उमड़ रहा है हम देखते हैं कि हमारे सैकड़ों नवयुवक इस प्रवाह के रेले में बहे जाते हैं और सैकड़ों गोते खाने पर भी उसमें से नहीं निकल सकते । इसमें सन्देह नहीं कि कुछ लोग दोही चार गोते खाकर इस पार निकल आते हैं पर कितनेही गोता खाते जाते और आगेही को तैरते जाते हैं, यहां तक कि थक कर उसी प्रवाह में डूब जाते हैं, ऐसे डूबते उतराते नवयुवकों की शोचनीय दशा को सुधारने के लिये अवश्य किसी उपयुक्त नाविक और नौका की आवश्यकता थी कि जिसपर उनका हाथ धर के उठा लिया जाय और फिर उन्हें सूखे तीर पर ला धर दिया जाय । हम देखते हैं कि काज़ी अजीजुद्दीन अहमद साहब ने उस आवश्यकता को इस ग्रन्थ रूपी नौका को रच दूर किया है । पाठकगण देखेंगे कि अमीरहसनमें किसी दूसरे प्रकार का ऐब न था, यह अच्छी खासी अँगरेज़ी फ़ार्सी की लियाक़त रखते थे किन्तु फ़ैशन् का शैतान कुछ ऐसा सवार था कि जिसके आगे उनकी विद्या बुद्धि कुछ भी काम न करती थी । मिसेज़ होल से जो कुछ उनका सम्बन्ध था वह केवल फ़ैशन् के अनुरोध से, क्योंकि ज्योंहीं उन्हें यह विदित हुआ कि वह दूसरे की विवाहिता स्त्री है और उसका पति जीवित है और उसने उन्हें धोखा दिया

बस उसी समय से उसका नाम तक भी न लिया। इस काम में भी उनने फ़ैशन् का निर्वाह किया। पाठकगण इस ग्रन्थ में देखेंगे कि इसके जितने पात्र हैं उनमें उनके २ स्वभाव की विशेषता है और प्रत्येक व्यक्ति का जैसा स्वभाव रक्खा गया है उसका निर्वाह अन्त तक बड़ीही उत्तमता के साथ किया गया है। सैयद काज़िमहुसैन साहब के पुराने तौर ख़्याल से कैसी उत्तम शिक्षा मिलती है, यद्यपि वे लोग आधुनिक रीति रसम के अज्ञ हों किन्तु पुराने ढंग के जाननेवाले और संसार में उत्तम रीति से चलनेवाले वेही थे। नज़ीरहसन की बिरादरपर्वरी, मुकर्रमहुसैन और शेर खां की सच्ची ख़ैरख़्वाही और अपने मित्र स्वर्गवासी काज़िमहुसैन के मैत्री का ध्यान, हिदायतरसूल की चालाकी और स्वार्थसिद्धि, मिसेज़ फ़ील का चंचलपन और लालच, मिस्टर गर्नर की धूर्तता और लोभ, जान्स का सच्चा प्रेम, बी कुन्दन का वेश्यापन, मि॰ पिसनजी का रोज़गारीपन और मि॰ मावेल की मिलनसारी और हितैषिता तथाच उनके परोपकारी स्वभाव का बहुतही उत्तम चित्र खींचा गया है। वह कौन व्यक्ति है जो मि॰ अमीर हसन की माता और स्त्री का स्वच्छ स्वभाव देख भारतवासी स्त्रियों की नेक चलनी पर मोहित न हो जाय॥

इस समय ऐसे ग्रन्थ की बड़ीही आवश्यकता थी, यदि इसे पढ़ कर हमारे देश के बिगड़े हुए दो चार नवयुवक सुधर जायँगे अथवा उस मार्ग पर पैर रखने की इच्छा करनेवाले अपनी इच्छा चरितार्थ करने मे रुक रहेंगे तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सुफल हुआ॥

अन्त में हम काज़ी अज़ीज़ुद्दीन अहमद साहब को विशेष धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने अपने उर्दू ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद छापने की आज्ञा देकर हिन्दी-पाठक मात्र का बहुत कुछ उपकार किया है॥

रामकृष्ण वर्म्मा

भारतजीवन सम्पादक—बनारस।

## बाब पहिला ।

## ॥ सैयद काज़िम हुसैनखां बहादुर ॥

———o———

शहर अकबराबाद में बहुत दिन नहीं गुज़रे जब सैयद काज़िम हुसैनखां बहादुर का खानदान बहुतही मशहूर व मारूफ था, सैयद साहब बहुत आली खानदान और नेकमिज़ाज रईस थे, गो पुरानी किता के आदमी थे लेकिन निहायत सुतदीन नेकनाम मुमताज़ और सर्बर-आवुर्दह थे। अंगरेज़ी खुद नहीं जान्ते थे लेकिन अपने लड़कों की तालीम का ज़्यादा खेयाल था और यही सबब था कि उनके खानदान में बहुत लड़के अङ्गरेज़ी पढ़े हुये और अच्छी २ नौकरियों पर मौजूद थे। सैयद साहब कुछ बहुत उमररसीदः या बूढ़े न थे लेकिन हमेशः दायमउल मर्ज़ और अलील रहा करते थे इस वजह से हुक्काम वक्त ने उनको खास उन्हीं के वतन में तैनात कर दिया था, यह ऐसी बात थी जो अङ्गरेज़ी नौकरी में सिवा किसमत कमाईयों के और कहीं कम नसीब होतीहै और जो शायद सैयदसाहब की दियानत और अमानत की एक बड़ी सारटिफिकेट थी और ज़ाहिर करती थी कि हुक्काम की किस क़द्र उनका वकार और ऐतबार मलहूज़ था।

सैयद साहब ने निहायत शान व शौकत से २५ बरस सबजजी करके चार सौ रुपैया माहवारी पेंशिन और खिताब खां बहादुर गवर्नमेण्ट इंगलिशया से हासिल किया और अपने वतन में खान:नशीनथे। जिस वक्त यह किस्सा शुरू होता है वे आगरे में तशरीफ रखते थे। उनका मकान निहायत आलीशान और उमदा मौके पर वाका था। गो फर्नीचर के ऐतबार से बहुत आरास्ता न हो मगर कुदरती तौरपर बहुत पुर्फिज़ा और दिलचस्प था, दरिया किनारा ताज का निज़ारा यह सब बातें इत्तफाकिया उसको हासिल थीं और हमारे सैयद साहब इसी वजह से अपने मकान पर गवर्मेण्ट या बाग खुशरवी को भी तर्जीह न देते थे। सैयदसाहब गो बहुत मम्सिक और बखील न थे मगर साथही उसके फज़ूलखर्च और मसरिफ भी नथे। अपनी आमदनी और खर्च का हमेशः पूरा २ हिसाब किया करते थे और हर महीने में पहली तारीख को अपने और अपने घर के हर किस्म के मुसारफ का बजट तैयार कर

लिया करते थे, और फिर उसमें चाहे कैसीही जरूरत पेश आये रद व बदल नहींकरते थे। उनका हमेश: दस्तूर था कि तनख्वाह पातेही तीन हिस्सों में तकसीम कर दिया करते थे, एक हिस्सा तो बङ्क में जमा करते थे और एक हिस्सा बेगम साहब के मसारिफ के लिये और एकहिस्सा अपने और अपने लड़कों के खर्च के वास्ते रखते थे। यह इन्तजाम इस मज़बूती और एहतियात से वह करते थे कि कभी इसके तोड़ने की नौबत न आई। बंक में एक मर्तब: जो रुपैया पहुंच गया वो फिर उनकी जिंदगी भर न निकला। जब नौकर थे जब भी उनका यह इन्तज़ाम रहा और पेन्शन के बाद भी उन्होंने अपनी कदीमी आदत न छोड़ी। जिस रोजसे पेनशन ली, उन्होंने हर किस्म का खर्च निस्फ कर दिया। चार घोड़े थे दो नीलाम कर दिये, चार खिदमतदार थे दो रहने दिये, यहां तक कि नौकरोंकी तनख्वाह, अखबारों की कीमत, सभी खर्च उन्होंने निस्फ घटा दिये, जो आधे साझे के मज़मून पर रज़ामन्द न हुआ उसीवक्त उसको जवाब दे दिया। खाना पीना हर किस्म के अखराजात उन्हों ने आधे कम करदिये। पहले दो सेर रोज़ गोश्त आताथा वो भी निस्फ कम कर दिया मगर अपनी आदत और तरीके में फर्क न आने दिया।

सैयदसाहब के दो शाहबजादे थे नज़ीरहसन और अमीरहसन, ये दोनों लडके--लडके काहेको, माशा अल्ला दोनों नौजवान जेहानत और लेआकत में अपने बाप के कदम बकदम थे-नज़ीरहसन तो इन्तज़ाम और अखराजात में भी अपने बाप के अक्सी तस्वीर थे लेकिन अमीरहसन किसी कदर फजूल खर्च और शौकीन थे। बापकी जिन्दगी भर तो न किसी का शौक मालूम हुआ न फजूलखर्ची ही जाहिर हुई। जिस रोज़ पेंशन के सबब से तखफीफ हुई मिआंनज़ीरहसन लाख चीखे चिल्लाये एक भी न सुनी गई और तीस२ रुपैया माहवारीसे पन्दरह रुपैया अलौएन्स रह गया और उसपर तुर्रा यह कि कर्ज़ की सख्त मुमानियत। बूढे सैयदसाहब का कौल था कि अगर उनकी बीबी भी कर्ज लें तो वह बावजूदे बेहद इश्क व मुहब्बत के फौरन् तिलाक दे देंगे, लडके बिचारे किस शुमार और कितार में थे। लेकिन लड़कोंकी तालीममें कोई

इक्तोका: कोशिश का उठा नहीं रक्खा। शुरू में अरबी फारसी मकतब में पढ़-वाई, जैसेही श्रद बुद हो गई स्कूल में भेज दिया, वहां भी उम्दा निगरानी और ताकीद की बदौलत बहुत जल्द तरक्की की, बारहवें वर्ष इन्ट्रेंस पास किया और १७वें वर्ष चश्मबददूर दोनों लड़के एम॰ ए॰ थे।

जिस साल सैयद साहब ने पेनशन ली दोनों लडकों की मजमूई उम्र ३६ साल थी और हाइकोर्ट की वकालत के लिये तैयारी कररहे थे। सैयदसाहब का कौल था कि हर आदमी को अपने पास वकालत की सनद ज़रूर रखनी चाहिये, फिर उसे अखत्यार है चाहे व-कालत करे या नौकरी-वह कहतेथे कि जिसके पास वकालत की सनद नहीं नौकरी का पाबन्द है और गुलामी कर नें को मजबूर, और जिसके पास यह स-नद मौजूद हो उसकी नौकरी शौकिया है और उसकी गुलामी अखत्यारी। गो इनके अहबाब इस अनोखी मन्तिक को बहुत पसन्द न करते थे और चाहते थे कि लड़कों की कहीं सिलसिल:बन्दी होजाये मगर सैयदसाहब भला कब कि सकी मानते थे, और चारनाचार लड़कों को साल दो साल के लिये तालिबइल्मी की हालत फिर दोहरानी पड़ी।

नाज़रीन सुन चुके हैं कि दोनों साहबज़ादे माशाअल्ला ज़हीनतबा और होशियार थे लेकिन उनके हालात कि-सी कदर तफसील के मोहताज हैं। सूर त में दोनों लड़के एक दूसरे की तस्वीर थे—लेकिन सीरत में ज़मीन आसमान का फर्क था। नजीरहसन नेकमिजाज मिनकसिर हमदर्द था—आकिल और कमसखुन था, गो खुदाने जिस्म की म ज़बूती और तन्दुरस्ती में उसको पूरा हिस्सा न दिया था।

अमीरहसन फजूलखर्च मग़रूर ज-ल्दबाज़ ज़रीफ और बेअक्ल था मगर जिस्म की तरोताज़गी और तवानाई में वह अपने भाई से बदर्जहा बेहतर था नजीरहसन पर सच्चेदिल से आशिक था और हमेशा अपने भाईकी रजाजोई और अतायत को मुकद्दम रखता था। अमीरहसन अगर कोई हरकत नाप-सन्दीदह या खिलाफमिजाज भी करते नजीरहसन सब अंगेज करते अपने भाई की मुहब्बत और इश्कमें उसकी तमाम खतायें माफ करने को तयार रहते थे। नजीरहसन की कुतबबीनी और

अखबारात का मर्ज़ था और अमीर-हसन को उनसे नफरत। घुड़दौड़, किरकेट, शिकार इन सब बातों पर अमीरहसन दिलदाद: थे कालिज में भी अ-मीरहसन ने कभी पढ़ने की तरफ तवज्जह नकी। गो जेहानत और इत्तफाक के सबब से किसी इम्तिहान में फेल न हुये और हमेश: कामयाब होते गये। एक अजीब बात और थी सैयद काजिम हुसैनखां बहादुर को अपने दोनों लड़कों में नजीरहसन से बेहद मुहब्बत थी और उनकी बीबी सिकन्दरज़मां बेगम साहबा को अमीरहसन से।

दोनों लड़कों की सैयद साहब ने लड़कपन ही में बहुत अच्छे २ खानदानों में शादी करदी थी। दोनों बहुयें बहुत खूबसूरत तालीमयाफ्त: और बा तमीज थीं नजीरहसन को अपनी बीबी से बहुत मुहब्बत थी मगर अमीरहसन को नफरत. अमीरहसन लड़कपनही से अंग्रेजी वजह पसन्द करतेथे मगर उनके वालिद माजद साहब को कोट पतलून से सख्त नफरत थी इसी वजह से उनको जिन्दगी भर तबदीलवजह गैर-मुमकिन बल्कि मुहाल थी, अङ्गरेजी पोशाक तो दरकिनार उस नेक बन्दे ने अपनी उम्र में अंग्रेजी बूट या बिलायती कपड़ा भी इस्तियामाल न किया और न अपने बीबी और बच्चों को इस्तियामाल करने दिया।

एक साल आगरे में हुजूर वाइसराय का दरबार था और कवायद के मुताबिक सब लोग जो अङ्गरेजी बूट न पहिने हों जूता उतारने पर मजबूर थे। हरचन्द उनके तमाम अङ्गरेज और हिन्दुस्तानी दोस्तों ने समझाया कि ऐसे मौके पर नंगेपैर जाना जिल्लत है एक जोड़ा बूट वलायती मंगवा लीजिये मगर सैयद साहब ने किसी की भी न सुनी और एक सावरी मोजा जेब में रख कर दरबार में पहुंचे। जैसेही जूता उतारने का वक्त आया जवान ने सावरी मोजा चढ़ा लिया, वो भी एक किस्म का स्लिपर या सावरी बूट के बराबर मुफीद हुआ। अलगरज हमारे मखदूम जनाब सैयद साहब इन मामलात में आलेदरजे के कनसर्वेटिव और पुरानी लकीर के फकीर थे। सबसे ज्यादा जो बात अमीरहसन को अपने बाप की नापसन्दथी वो रेलकी सवारी थी। सैयदसाहब बेताअम्मुल थर्डक्लास में सवार होतेथे और अपने लड़कों को भी

इस बात पर मजबूर करतेथे। एक दिन फर्वरी का महीना था अमीरहसन और उनके वालिदमाजद आगरे से इटावा को नुमाइशगाह देखने तशरीफ लिये जाते थे। स्टेशन पर खां बहादुर मिर्जा हिमायतहुसेन डिपटीकलक्टर और राय पण्डित प्राणकृष्णसाहब सबजज और बहुतसे मोजजीन मौजूद थे, और सबने औव्वल दर्जे के टिकट खरीदे।

अमीरहसन—अब्बाजान! आपके लिये किस दर्जे का टिकट लिया जाय?

बाप—क्यों बेटा! यह नई फिक्र तुमको क्यों पैदा हुई? मैं जिस दर्जे में हमेशा सफर करता हूं उसी दर्जे का आज भी टिकट लूंगा।

अमीरहसन-मैं समझा था कि शायद डिपटी साहब और जजसाहब के साथ के ख्यालसे आप औव्वल दर्जे का टिकट लें। अब्बा! इन सबके सामने तो तीसरे दर्जे में सफर करने से शरम मालूम होती है।

बाप – शर्मकी तो कोई बात नहीं, तुम्हारे दिलकी कमजोरी और तुम्हारी नादानी ने तुमको शर्म दिलाई – औव्वल दरजा और दूसरा दरजा हो या तीसरा दरजा सबके मुसाफिर एकही वक्त इटावे पहुंचेगी, फिर रुपैया खराब करने से हासिल? शर्म तो डिपटी साहब को करनी चाहिये जो सिरसे पैर तक कर्ज से लदे हुये हैं और फिर औव्वल दर्जे में चढे २ घूमते हैं। बेटा! असली इज्जत और असली शर्म तुम जान्ते नहीं क्या चीज है। इज्जत और जिल्लत का ख्याल यह भी गलत है, खुदावन्द करीम के हाथ में इज्जत और जिल्लत है।

जो इज्जत खुदा ताला ने अता की है वो तीसरे दरजे में बैठने से हरगिज कम नहीं हो सकती। असली इज्जत चालचलन और अफआल से है फजूलखर्ची और असराफ से नहीं॥ 'सदर हरजा के नशीनद सदरअस्त' हम जहां बैठें वहीं मुअजिज और बफज्ल खुदा सरबुलंद हैं क्याकोई कसबी औव्वल दर्जे की गाडी में सवार हो जाये तो वो मुअजिज समझी जायेगी क्या कोई भडुआ औव्वल दर्जे का टिकट ले ले तो वह साहबइज्जत समझा जायगा? हरगिज नहीं २

अमीरहसन— अब्बाजान! अब मैं समझ गया, आप ज्यादा तकलीफ न फरमायें।

बाप—बेटा ! हमें तुम्हारे खयालात ने सख्त खौफजदा कर दिया और खुदा जाने क्या २ खराबियां मेरे आंखों के सामने फिर गईं। जब अभी तुम्हारा यह हाल है तो आगे मालूम नहीं तुम किन २ अच्छो बातों को खराब और जलील समझोगे और खुद खराब और जलील होगे।

अमीरहसन—माफ कीजिये अब्बा जान! मैं अपने खयालात पर नादिम हूं हां फिर आप इटावे में किसके मेहमान होंगे? पहलेसे गालबन् आप इसका इन्तजाम फरमा चुके होंगे।

बाप—मैं इतना जलद इस मजमून को नहीं भूल सकता जो तुम चाहते हो—तुमको मालूम है कि सफर रेल में औव्वल व दोयम दरजे की गाडियां किस दरज: खतरनाक हैं?।

अमीरहसन—मैं तो किसी तरह औव्वल दरजेकी गाडियोंको खतरनाक नहीं समझता, बलकि ईमान से पूछिये तो मेरे खयाल में दरजा सेयमकी गाड़ी खतरनाक होती है। चोर उचक्के बदमाश सभी उसमें घुस आते हैं और मौका पाकर असबाब ले भागते हैं।

बाप—माल और असबाब की चोरी का खतरा महज खयाली खतरा है, अगर आदमी होशियार रहे तो कहीं भी खतरा नहीं है और अलावा इसके तीसरे दरजे की गाडी में आराम से नौकर चाकर सभी साथ होते हैं वो हिफाजत भी करते रहते हैं चोरी का खतरा तो औव्वल दरजे की फजूलखर्च गाडियों में ज्यादा होता है। आप अकेले पड़े सो रहे हैं रातको चोर साहब आए जो कुछ मिला ले उड़े अगर जरा आंख दिखलाई मारने को मुस्तैद। अकेले आप क्याकर सकते हैं, चिल्लाइये चीखिये—चलती गाडी में कौन सुनता है, स्टेशन जहां करीब पहुंचा और गाडी आहिस्ते हुई चोरसाहब कूद पड़े आप औव्वल दरजे का टिकट लिये हुये शहद लगा कर चाटा कीजिये, और इज्जत २ पुकारा कीजिये। अजी यह तो दूसरी बात है और जो खतरात हैं वो मुझसे सुनो। मेरे एक दोस्त औव्वल दरजे की गाडी में सफर कर रहेथे दो स्टेशन आराम से तनहा गये तीसरे स्टेशन पर चार गोरे आ मौजूद हुये, बोतलें खोलीं और शराबें उड़ने लगीं, थोडी देरमें सब बदमस्त हुये।

एक—तुम शराब पीता है ?

दोस्त—नहीं हम मुसलमान हैं शराब नहीं पीते।

दूसरा—तुम मुसलमीन है, मुसलमीन है! कुछ परवाका बात नहीं! तुम पिश्रो

दोस्त—अजी जनाबआप क्या फरमाते हैं हम शराब को नापाक समझते हैं।

तीसरा नापाक किसको बोलताहै?

दोस्त—नजिस को, गलीज को, गैर साफ को—

एक—गलीज किसको बोलता है?

दोस्त—मैलेको और खराब चीजको।

दूसरा—और मैला बोलता है,कमोड वालो चीज को! — यू हरामजादा तुम हमारी पीनेवाली चीजको मैला बत लाया! —

तीसरा—तुम उल्लू का बच्चा गुस्ताखी का बात बोला! —

अलगरज इस पर चारों बदमस्त शराबियों ने मिलकर उन हिन्दुस्तानी बेचारे को इतना मारा कि बेदम कर दिया और जबरदस्ती पकड़ के गुसल खाने में बंद कर दिया, उनके सिर पर पेशाबकिया और तरह की बिहतें। वो लाख चिल्लातेथे उनकी सुन्ता कौन था। गाड़ी में कोई दूसरा हिन्दुस्तानी न था वो चार यह अकेले वो सवार यह पैदल, वह गोरेसिपाही यह काले मर्द शरीफ, २० मिनट में जब तक स्टेशन पर रेल पहुंचे २ इन बेचारे के बहत्तर कर्म हो गये, पीछे को रिपोर्टारिपोर्टी हुई तह-कीकात हुई. फर्याद हुई, और शायद उन लोगो की कुछ चश्मनुमाई भी हुई लेकिन उसका नतीजा ही क्या था? इन बेचारे पर जो बीतनी थी बीत गई— अगर वो दरजा सेकंड में होते तो कोई मरदूद ऐसी शरारत क्यों करता? । सब मुसाफिर हमदरदी करते और इतना मारते कि उन मरदों को छठी का दूध आ जाता। इसतरह के सदहा वाकआत हो चुके हैं और बालाखैर मेरी यही मजबूत राय कायम हो गई कि,—

अगर ख़्वाही सलामत बर किनारस्त
खैर-उलउमूर औसतहा +

दरजः सेकंड से ज्यादा काबिल इतमीनान दरजा रेल में कोई नहीं है बकौल शख्से कमखर्च बालानशीन।

अमीरहसन— अब्बाजान! पाखाने पेशाब की हाजत हुई तो उस वक्त भी दरजा सेकंड की गाड़ी में बड़ा आ-राम मिलता है। पाख़ाना शामें पिलेट-फार्म पर घूम रहे.हैं पाखाने में पचासों

आदमी घुसे पड़ते हैं घंटी हुई और पेशाब करतेही भागे, रेल छुट गई तो और तमाशा हुआ न छुटी तब भी कपड़े खराब किये यह जिल्लत नहीं है ?

बाप--औव्वल तो सहीह और तवाना आदमी को बेवक्त पायखाना पेशाब की हाजत क्योंलगे? दूसरे इसमें जिल्लत क्या है? जायेजरूर तो उसका नाम ही है पायेखाने कोई बेजरूरत नहीं जाता बेटा ! तुम्हारी तरफ से आज मुझ को सख्त खतरा पैदा हो गया मेरे बाद तुम्हारे ये खेयालात खुदा जाने तुम्हें क्या नुकसान पहुंचायेंगे। या अल्ला तू ही मुहाफिज हो और मेरे नाम और आबरूको मेरे मरनेके बादभी बचाइयो!

अमीरहसन- अच्छा अब्बाजान फिर आप इस किस्से को जाने दीजिये दूसरी बातें कीजिये।

बाप बेटों में देर तक इसका मुबाहसा रहा, खुदा २ करके इटावे का स्टेशन नमूदार हुआ और हमारे दोस्त मिस्टर अमीरहसन की जान बँची।

स्टेशन में चंद घंटा तो गाड़ियों में कैद महज रहे क्योंकि टिकट कलक्टर साहब की आमद में तवक्कुफ था। वो बुजुर्ग जिनके यहां सैयदसाहब मेहमान होनेको थे जुदा परेशान थे, और अमीर हसन अपनी तरफ घबड़ारहे थे, लेकिन सैयदसाहब को जराभी बेचैनी या ताजिलो नज्रो इतमीनान से अपना बेग हुक्का खासदान बिस्तर सब चीजें उठा २ कर कुलियों को दे दीं और एक दो कश हुक्के के पिये, इतने में टिकट कलक्टर भी आगया और कैद से रेहाई हुई —

मौलवी मुकर्रम हुसैन साहब तहसीलदार इटावा और सैयद काजिमहुसैन खां साहब से बहुत कदीम मरासिम थे, कई जगह एक साथ काम करने का इत्तफाक हो चुका था और आपस में एक दूसरेसे मुहब्बत भीथी। इसी वजह से जब सैयद साहब इटावा जाते थे उन्ही के मेहमान होते थे। चुनान्चे इस मर्तबा भी तहसीलदार साहब अपना टमटम लिये हुये स्टेशन पर मौजूद थे और निहायत तपाक से बाप बेटे दोनों को अपने घर ले गये—

——ooo——

## बाब दोयम्।

## इटावे की नुमाइशगाह।

सैयद काजिमहुसैनसाहब और उनके साहबजादे मीर अमीरहसन दोनों

तहसीलदार साहब के मेहमान थे, हर रोज अपने मोअज्जिज़ मेहमानके साथ नुमाइशगाह की सैर को तशरीफ ले जाते थे। इटावे में चंद अरसे से हर साल निहायत शान व शौकत और एह-तमामसे अशिआये ज़रायत व सनअत व हिरफत् की नुमाइश हुआ करती थी इस साल भी मामूली धूम धाम से इन्त-जाम था।- घुड़ दौड़ - हाथी दौड़ और इसी किस्म के सदहा सामान तफ़रीह और सैर व तमाशे के मोहैया थे — सैयद काज़िमहुसेन इन सब तमाशोंके बहुत शायक न थे और न एक तमा-शाई की हैसियत से वो नुमाइशगाह में गये थे — बल्कि मिस्टर माबेल साहब कलक्टर इटावा की मुलाकात और बहुत से दोस्तों से मिलना उनका खास मक्सद था। उसी नुमाइश के हफते में एक ज़्याफतहोनेवाली थी इलावह युरो पियन हुक्काम और लेडियों के बहुत से मुअज्जिज़ हिन्दुस्तानी भी उसमें बुलाये गये थे मिनजुमला उनके साहब कल-क्टर ने सैय्यद काज़िमहुसेन और उनके साहबज़ादह को भी बुलाया, नेवता पहुंचने पर सैय्यद साहब औरउनके बेटे से बहुत मुबाहसा रहा। सैय्यदसाहब इनकार करना चाहते थे और अमीर हसन की राल टपकी पड़ती थी। तह-सीलदार साहबने इस झगड़े का फैस-ला किया—

तहसीलदार—मेरे नजदीक भी इन-कार बेमौका है-जनाब साहबकलक्टर ने बड़े इत्तिफाक रक्खा दावत भेजा आपके इनकार से जरूर उनकी दिल-शिकनी होगी।

सैय्यदसाहब—आप वाकिफ हैं कि रद्द-दावत अज़रूये इखलाक मह्म्मदी भी मना है और मुझे निसारे के साथ खाने पीने में मज़हबी खयाल से पर-हेज़ भी नहीं मगर मैं अंग्रेज़ी कवायद से वाकिफ नहीं हूं, शायद कोई बात खिलाफ आदाब सर्ज़द हो जाय। दूसरे मुझे अपने लड़के का खौफ है "खर-बूज़ा खरबूजे को देख कर रंग पकड़ता है" अगर मेरा लड़का खुदा न ख्वास्ता छुरी कांटों का शायक होगया और अंग्रेज़ी तरीका खुर्द व नोश का उसको चस्का पड़गया तो मेरा घर तबाह हुआ और मैं कहीं का न रहा।

तहसीलदार—जनाब एक दिन में कुछ नहीं हो सकता, मुझे भी तो सा-हब बहादुर ने बुलाया है। हम लोग

सब लड़कों की बखूबी निगरानी कर सकते हैं।

**सैय्यदसाहब**—मुझे आपके तामील इर्शाद में क्या उज्र हो सकता है, खैर अगर आपकी यह मर्जी है तो यही सही (बेटे की तरफ मुखातिब होकर) अच्छा मियां साहबजादे जवाब लिख दो कि मैं, मै बर्खाजादे के ब सरोचश्म हाज़िर होऊँगा।

**अमीरहसन**—बहुत बेहतर (अमीर हसन ने मुताबिक कायदे के जवाब लिख दिया)

**सैय्यदसाहब**—आपने इलकाब क्या लिखा?

**अमीरहसन**—नेवते के जवाबमें इलकाब की जरूरत नहीं होती, मुताबिक कायदेके मैंनेजवाब लिख दियाहै।

**सैय्यदसाहब**—अरे गज़ब! तुमने यह क़यामत बर्पा करदी। कहर खुदाका! इतने मुअज्जिज़ कलेक्टर के नाम खत और इलकाब नदारद! तुमने एम॰ ए॰ पास किया और खतकिताबत की तमीज़ न आई?।

**तहसीलदार**—खुदानेखैरकी कि आप ने पूछ लिया वर्ना वे तहज़िबीके साथ जवाब चला जाता और मालूम नहीं कि क्या उफताद पड़ती।

**अमीरहसन**—अब्बाजान! आप अंग्रेजी से वाकिफ नहीं, नेवतेमें इलकाब आदाब की जरूरत नहीं होती यह. देखिये आदाबफिरङ्गवाले क्या लिखता है।

**सैय्यदसाहब**—आदाबफिरङ्ग की आपने भली चलाई आप जानते हैं वह किताब किसकी तसनीफ है?।

**तहसीलदार**—जनाब आदाबफिरंग क्या कोई आयतेहदीसहै? उसका मुसन्निफ एक नेचरी शख्स है, उसकी तहरीर का क्या एतबार?।

**अमीरहसन**—अंगरेजी में जवाब लिखना फुजूल है आप उर्दू में जो मुनासिब समझिये लिखदीजिये।

**तहसीलदार साहब**—मैंने भी अभी रिपोर्ट मंजूरी दावत लिख कर मुहर्रिर मुतफरिकात को देदी है आप भी उर्दू ही में जवाब लिख दीजिये।

सैयदसाहब ने कलम व दावात खिसकाई और हसब जैल जवाबलिखा-

जवाब।

मजमए खूबीहाय अतम बलीग़ एखलाक व कारम खुदावन्द नेयाजमंदान साहबे जीशान अजीज़ हर दिल जनाब

मिष्टर माबेलसाहेब सलामत—बाद अदाय मरातिब खलूस व अमाबेत व लवाज़िम अबूदियात व इताअत आरिज़ मुद्दआ़ई नवेद सरापा जावेद मअ़अरे शिरकते जलसये दावत मौसूलहोकर बाइसे सरबलन्दी व एज़ाज़हुई यह ख़ाकसार बकमाल मुसर्रत व शुक्रगुज़ारी वक़्ते मुऐयन: पर मय बरख़ुर्दार ख़जिस्त: अतवार असअद अमन सैयद अमीरहसन सल्लमअल्लाह ताआला हाजिरे खिदमत व शरीके दावत होगा अदाय शुक्रिये से जबान क़ासिर ख़ुदावन्द करीम बई यादावरी व इज्जतअफ़जाई सलामत बा करामत रक्खे ब: मुहम्मद व आलही अलअमजादे —

हकीर सरापा तकसीर ख़ाकसार जर्रे बेमेकदारसैद काजिम हुसैन तकवीदक आगरवी अफी अल्लाह अनहो साबिक सब जज दरजे औव्वल हाल नमकख्वारे सरकार।

तहसीलदारसाहब—निहायत मुनासिब इसीको रवाना फरमा दीजिये। अमीरहसन बेचारे चुपचाप थे उनकी क्या मजाल थी कि अपने वालिद बुजुर्गवार की फ़रमूदियत भाव तहरीर पर एतराज़ करते या इस हर्कत लगो से बाज़ आने की तहरीक करते। वह ख़त एक मामूली बदामी कागज़ के टुकड़े पर लिखा गया और उसी किस्म के लिफाफे में बन्द करके रवाना कियागया वह दिन तो ख़ुदा ख़ुदा कर ख़त्म हुआ, दूसरे दिन सात बजे रात को खाना था। तहसीलदार साहब और उनके मुअज्ज़िज़ मेहमान चारही बजे से तहीये सफर दावत में मसरूफ हुये। हज्जाम बुलाया गया ,तहसीलदार साहब और सैय्यद साहब दोनों ने खिजाब किये ख़त बनवाये और ज़र्क बर्क पोशाकें निकालीं।

सैयद साहब—बेटा अमीरहसन! तुम भी कपड़े पहिन लो, वक्त करीब है।

अमीरहसन - अब्बाजान! अभी चार बजे हैं, साढ़े सात बजे चलना चाहिये इतना जल्द जाना बेकार है।

तहसीलदार साहब – अजीज़ अज़ जान! आप इन मुआमलात में नातजरिबाकार हैं सवेरे जाने से अच्छी जगह बैठने को मिलती है और देर को जाने से सिवाय जिल्लत और नाउमैदी के कोई नतीजा नहीं होता।

सैय्यद साहब—हां जनाब यह लड़के है यह क्या जानें, ठीक पांच बजे

पहुँच जाना चाहिये। अमीरहसन! तुम जामेवार वाला दगला और मशरू का मोहरीदार पायजामा पहिन लो और शाली रूमाल ओढ़ लेना, मैं सब कलाबत्तू के काम की मखमली अचकन पहनूंगा और ज़री के काम का दोशाला ओढूंगा।

तहसीलदार साहब—और पगड़ियां किस किस्म की बांधियेगा?।

सैय्यद साहब—पगड़ी की ज़रूरत नहीं, मन्दील काफी है।

अमीरहसन—अच्छा! अगर आप नाराज़ न हों तो मैं स्याह बानात का अचकन और चूड़ीदार पायजामा पहिन कर चलूं। इस मजमअमें शाली चादर ओढ़ना या हिन्दोस्तानी किस्म के रंगीन कपड़े पहिना बेमौका है और खासकर मशरू का बड़े पायचौंवाला पायजामा।

सैय्यद साहब—सुना आपने, तहसीलदार साहब देखिये यह दूसरी हुई! मियां साहबजादे मोहरीदार पायजामा नापसन्द करते हैं और बन्दूक के गिलाफ का सा चूड़ीदार पायज़ामा पहिना चाहते हैं! ।

तहसीलदार साहब—लड़के हैं इन की बातोंपर खयाल न फरमाइये। भैया अमीरहसन आदमी वह बात करे जो अपनी शान व खान्दान के मुनासिबहाल हो। खुदा के फज्ल व करम से तुम्हारा खान्दान ऐसा नहीं है जो इस जलसे में मामूली प्याद:रविश आदमियों की तरह चले जाओ, तुमको एक कीमती जामेवार या दुशाला वैसाही ज़रूर है जैसा फौजी अफसरों को वर्दी। खुदा जाने कितने रईस आज जमा होंगे उनके सामने अच्छे कपड़ों की बहुत एहतियाज है।

अमीरहसन—मेरा कुछ बोलना शायद बेअदबी समझी जाय, लेकिनयह ज़रूर अर्ज करूंगा कि यह जलसा अंगरेजी दावत का है किसीके खतने या निकाह का जलसा नहीं। इसमें जहां तक मुमकिन हो अंगरेजी असूल के मुताबिक पोशाक होनीचाहिये। देखिये नव्वाब मुहम्मदहसनखां मौलवी शरीफुल्लाह ये लोग ऐसे जलसों में किस वजअ से जाते हैं।

सैय्यद साहब—नऊज़ुबिल्लाह! इस्तगफिरुल्लाह! खुदा न करे। किसी इनसानकी अक्ल ज़ायल हो तुम शरीफुल्लाह को इस काबिल समझे हो कि उनकी

तक़लीद*की जाय।उनका चचा कल तक बड़े भाई साहब का खिदमतगार था उसकेघरमें आजतक आबाईपेशा†जारी है कलन्दरपूर का जोलाहा आज डिपटी कलेक्टर होगया तो इससे यह लाजिम हुआ कि मियां अमीरहसन उसके मुरीद हो जायँ ! तौबा ! तौबा !!

तहसीलदार साहब—लाहौलविलाकुव्वतइल्लाबिल्लाहे शरीफुल्लाह भी इस काबिल हुआ किहमलोग उसकी पैरवी करें जनाब मेरा वह एक किस्म का अफसरहै लेकिन मैं बातभी नहीं करता और बखुदा यह भी नहीं समझता कि वह किस खेत की मूली है ।

अमीरहसन बेचारे को सिवाय खामोशी के कोई चारा न था वह चाहे कैसेही नासमझ और नाआक़िबतअन्देश हों मगर बेअदब न थे और अपने बाप का हत्तलएम्कान पूरा लिहाज करना चाहते थे और करते थे ।

अल्क़िस्सः पांच बजे सबलोग तैयार हो कर साहब कलेक्टर बहादुर की कोठी पर पहुँचे। पहुँचतेही चपरासी ने दरख्तों के नीचे कुरसियां डालदीं और तीनों साहब बैठे ।

तहसीलदार साहब—क्यों जनाब! यह क्या कायदा है कि आयें दावत खाने और बैठें दरख्त के नीचे ! चलिये खाने के कमरे में बैठें ।

सैयद साहब—हां क्या मुजायका आप नेवते का टिकट हमराह लाए हैं?

तहसीलदार साहब—नहीं, क्या उसकी जुरूरत पड़ेगी ।

सैयद साहब—शायद इसकी तहकीकात शुरू हो कि कोई शख्स बे बुलाए तो नहीं आया । ऐसी हालत में सबूत के लिये कार्ड का मौजूद होना जुरूरी है । दाग़तः शायद बकार !

तहसीलदार साहब ने अपनी भूल पर सख्त अफसोस किया और फ़ौरन् टमटम पर सवार होकर दौड़ाते हुवे मकान गये और टिकट लेकर वापस आए । इस दरमियान में सैय्यद साहब मय साहबजाद दरख्त के नीचे बआराम तमाम बैठेथे । तहसीलदार की वापसी पर सैय्यदसाहब और वह खाने के कमरे मे बैठने को चले, अमीरहसन ने फिर रोका ।

अमीरहसन—जनाब, औव्वल तो आपलोगों ने यही गलती की कि ढाई घंटे पहिले तशरीफ लाए । देखिये अभी तक कोई अंगरेज या हिन्दोस्तानी नहीं

† पानी भरनेका पेशा * तक़लीद करना—उनके मुताबिक चाल चलना

आया, दूसरे यह गजब कर रहे हैं खाने के कमरे मे अभी जाना महज फुजूल है

तहसीलदार साहब—( हँस कर ) मियां साहबजादे! आपकी मन्तिक हम बुड्ढों की समझ मे नहीं आने की। धूप में बाहर बैठने से क्या फायदा? अन्दर चलकर आराम से बैठेंगे और एकाद चुरुट पियेंगे।

अमीरहसन – आप तशरीफ लेजायँ, मैं पीछे से हाजिर होऊंगा।

सैय्यदसाहब और तहसीलदार साहब दोनो अमीरहसन की इस हरकत से नाराज हुए और सीधे खाने के कमरे की तरफ रवाना हुए। डाइनिङ्ग रूम यानी खाने का कमरा तहसीलदारसाहब का देखा हुआ था। सीधे घुसे चले गये, दरवाजेपर जूता उतारा और कमरे में जाकर कुरसियों पर बैठे। इत्तिफाक से उस वक्त कोई चपरासी या नौकर मौजूद न था इस वजह से उन को अन्दर जाने से किसीने नहीं रोका। कमरे में पहुँच कर तहसीलदार साहब और जनाब सैयद साहब दोनों सामान आराइश देख कर तारीफ करनेलगे।

तहसीलदार साहब—हजरत साज व सामान और सफाई यही फिरंगियों का हिस्सा है।

सैय्यद साहब—जनाब फिरंगियों पर क्या मुनहसर जो मुसरिफ औरफुजूल खर्च हो वही जाहिरी ठाठ बना सकता है!

तहसीलदार साहब—लेकिन यह खूबसूरती कहां; पाइयेगा? देखिये गुलदस्ता किस नजाकत से तारों पर लटका हुआ है। एक शीशे का निहायत बारीक और उमदा नकलीफूलों का गुलदस्ता तार से बँधा हुआ बीच कमरे मे लटक रहा था। मुख्तलिफ अकसाम के पत्थर और शीशे तारों के सहारे से इसतरह जमाए गये थे कि बिलकुल असली फूलों का गुलदस्ता मालूम होता था!

तहसीलदार—क्यों जनाब यह फूल असली हैं या नकली?

सैय्यद साहब—मुझे तो नकली मालूम होते हैं!

तहसीलदार साहब ने उचक कर उस गुलदस्ते को छूना चाहा। धक्का लगा और वह मेज पर गिरा झनझनझनन! इस बेहङ्गाम आवाज ने तमाम बँगले में खलबली डालदी और दूसरेलोग जबतक पहुँचें मेम साहब पहिले ही प-

हुँचगईं, उनको देखते ही दोनों बुजुर्गों ने झुक कर मुअद्दब सलाम किया !

मेम साहब—कौन कौन ?

तहसीलदार—खुदावन्द मैं हुजूर का तहसीलदार हूँ !

मेम साहब—हम नहीं पहिचानता तुम कमरे में क्यों घुसा ? बेयरा ! अन्दर आओ । इतने में नौकर चाकर सभी पहुँच गये और सबने अपने अपने मौके से अफसोस ज़ाहिर किया । तहसीलदार साहब तो नेवतेवाला खत दिखला कर बच गये मगर सैय्यदसाहब धरे गये, उनका कार्ड जेब में से गिर गया था और साहब कलेक्टर उस वक्त बङ्गले पर मौजूद न थे ।

मेम साहब—इस गुलदस्ते को किस ने तोड़ा ? ।

तहसीलदार साहब—(खौफजद: होकर) हुजूर मुझसे यह हरकत नहीं हुई ।

सैय्यद साहब—मर्देखुदा क्यों झूंठ बोलते हो ! तुम्हीं ने तो तोड़ा ।

तहसीलदार साहब—अपनी बला दूसरे के सर न डालिये, जनाब सैयद साहब आप पेन्शनयाफ्ता हैं आपको पेन्शन कोई छीन नहीं कर सकता, मुझसे कलेक्टर साहब नाराज होजावेंगे तो मेरा बेड़ा बेड़ा न लगेगा ।

सैय्यद साहब—मेरी आदत झूंठ बोलने की नहीं है, मैंने हरगिज नहीं तोड़ा ।

अलगरज दोनों हजरात दस्त बदस्त दीगरे, व पाये बदस्त दीगरे, कमरे से निकाले गये, और मेम साहब ने अपने प्यारे गुलदस्ते के टूटने का सख्त रंज किया । यह गुलदस्ता उनकी छोटी बहिन की निशानी थी जिसने हाल ही में इन्तिकाल किया था और मेमसाहब को इस वजहसे बहुत अजीज था । मेम साहिबा बरखिलाफ अपने शौहर के निहायत बदमिजाज और गुस्सावरथीं । साहब कलेक्टर खुद बहुत सञ्जीदा खलीक और हलीम थे मगर अपनी बीबी की कजमिजाजी से उनका भी काफ़िया तङ्ग रहताथा । हिन्दोस्तानियों से मिष्टर माबिलको एक खास मुहब्बत थी और वह उनसे पूरा पूरा बिरद्राना और बरताव करना चाहतेथे लेकिन मेमसाहब की बदमिजाजी और तङ्गज़र्फी के खयाल से हमेश: डरा करतेथे।

शादी से पेश्तर मिष्टर माबिल का नाम उस कोर्टशिप में था जो फातह

और मफतूह अकवाम के दरमियान में तुख्मे मुहब्बत बोनेवाले हैं मगर ब्याह के बाद वह बात बाकी न रही। शेर।
"थोरी हुई गुजर गए आलम शबाब के।
एक धूप थी कि साथगई आफताबके,,॥
खुदा जाने किस किस इसरार और कितने दिनों की कोशिश से मिस्ट्रेस मावेल इस हिन्दोस्तानी डिनर पर रजामन्द हुई थीं उन्हें यह एक ऐसी गैर मामूली बात मालूम हुई थी कि उन्हों ने विलायत मे अपनी मां से मशविरा लिया और लिखा था कि मेरे शौहर को चन्द हिन्दोस्तानी दोस्तों को खिलाना मंजूर है मैं उनसे सख्त मुतनफ्फिर हूँ क्योंकि अमूमन हिन्दोस्तानी बदवजअ कपड़ा पहिन्ते हैं और गैर मुहज्जब एक बदबूदार चीज अपने सर और कपड़ों में लगाया करते हैं जिससे दिमाग खराब हो जाता है क्या ऐसे शख्सों के साथ मुझे मेज पर बैठना आप गवारा करेंगी ?।

मेमसाहब की वालिद: बहुत माकूल शख्स थी उन्होंने अपनी बेटी को बहुत कुछ नसीहत लिखी और यह जवाब दिया कि तुम नहीं जानतीं कि हिन्दोस्तानी शुरफा किस दरज: बा अदब और मुहज्जब हमीद:खिसाल होते हैं। हैदराबाद के नव्वाब फतह नवाज जङ्ग बहादुर साल गुजश्त: में लन्दन आए थे और सोसाइटी मे मैंने उन्हें देखा था वह हरगिज ऐसे नहीं हैं जब तुम हिन्दोस्तानियों का हाल लिखती हो इससे मालूम होता है कि अच्छे हिन्दोस्तानी तुमने देखे नहीं! अगर एडवर्ड तुमको अपने दोस्तों के साथ खिलाना चाहता है तुम खुशी से खाओ और उनकी मेजमानी करो तुम्हारा शौहर किसीतरह नावाकिफ या नातजरिब:कार नहीं है।

इसी खत की आमद ने मिस्ट्रेस मावेल को अपने शौहर के हिन्दोस्तानी दोस्तों के साथ खाने पर आमादा किया था लेकिन पहिली ही खिश्तिबाह गलत हुई उनका गुस्सा हक बजानिब था अौवल तो ढाई घंटे पहिले बेवक्त की शहनाई कैसी ? खाने के कमरे में पहिले से घुस जाना क्यामानी ? शीशे का गुलदस्ता उचक कर तोड़ना कैसा ? यही सब बातें थीं जो मिस्ट्रेस मावेल को सख्त पेचीदा और गजबनाक कर रही थीं वह अपने दिल में कहती थीं कि जिन बेतमीज़ हिन्दोस्तानियों ने ऐसी

हरकात की वह मेज़ पर बैठकर खुदा जाने क्या २ करते उन्हें अगर कोई बात तसकीन देनेवाली थी तो यही कि थोड़े नुकसान बरदाश्त करने से उनको नजदीक बड़े २ खतरात से नजात मिली। इधर तो मेम साहब अपने कमरे में मुंह फुलाए थीं और वहां हमारे दोनों दोस्त दरख्त के नीचे डटे हुवे एक दूसरे से शिकवा व शिकायत कररहे हैं।

अमीरहसन अपने दिल में बेहद खुश थे, लेकिन ज़बान से कुछ नहीं बोलते चुपचाप खड़े हैं।

**तहसीलदार साहब** - क्यों जनाब! अगर आप मेरी आबरू बचाने को यह इलजाम अपने सर लेलें तो इसमें क्या बुराई है? मैं तमाम उम्र बन्द: बेदिरम रहूंगा।

**सैयद साहब**— इस्तगफिरुल्लाह। यह मेरे खसलत के खिलाफ है कि ऐसी हर्कत अपनी तरफ मनसूब करूं। कोई मर्द मुहज्जब ऐसा करसकता है? आप को अपनी नौकरी का खौफ़ है और मुझे अपनी इज्जत आबरू का! देखिये खुदायकरीम क्या करताहै जनाब बहुत बेढब मुआमिलाहै लाइलाहइल्ला अन्ता सुबहानका अनी कुन्ते मिनज़्ज़ालिमीना

**तहसीलदार साहब**— जनाब सैयद साहब! मेरे आपके देखिये कितनी पुरानी मुलाकात है अगर मुझे कोई नुकसान पहुँचातो मैं समझूंगा कि आप ही की ज़ात से मैं तबाह हुआ, खुदा के लिये मुझ पर रहम कीजिये।

**सैयदसाहब**—किबलय-मन् मुझको अपनी खसलत् के मुकाबले में तमाम दुनियां की किसी दौलत या नेअमत की परवा नहीं, मैं उनकी हरकात अपने निसबत मनसूब करके मुबुक नहीं हो सकता। ये बातें होही रहीं थीं कि मिस्टर माबिल पहुँच गये और दरवाजे ही पर बेयरा और खानसामां ने कुल वाकअ़ कह सुनाया साहब फौरन मेम साहब के पास गये।

**साहब**—डियर क्यों खफा हो कुछ रंज का मकाम नहीं है गुलदस्ता टूट गया टूट जाने दो।

**मेम साहब**—मुझे गुलदस्ते की परवा नहीं है, रञ्ज यह है कि वह मेरी डियर बहिन की निशानी थी।

**साहब** - मुझे खुद इसका रंज है मगर शुदनी बात थी।

**मेम**—मैं हमेश: से जानती थी कि हिन्दुस्तानी वहशी और गैर मुहज्जब

होती है, देखो वही बात पेश आई, जो दावत करके अदावत मोल ली। डियर चाहे तुम कैसेही खफ़ा हो मैं इन गैर-मुहज़्ज़ब वहशियों के साथ खाना न खाउंगी।

साहब—देखो मेरी आबरू तुम्हारे हाथ है, मैं सबके पास नेवता भेज चुका और नेवते में तुम्हारा नाम भी लिखा है अब कुछ नहीं होसकता।

मेम—मैं यह नहीं कहती कि अपने दोस्तों की दावत न करो मगर मैं हरगिज़ न शरीक होऊँगी।

इतनेमें मिस्टर गिप्सन् असिसटेंट मजिस्ट्रेट आये और कुल किस्सा उनसे भी बयान कियागया, उन्होंने मिस्टर मावेल से इत्तफ़ाक़राय किया और खतावार हिन्दुस्तानियों की तरफ से माज़रत की।

मेमसाहब—अच्छा मैं आज अपने ऊपर तकलीफ़ गवारा करूंगी क्योंकि और मेमें और साहबलोगों के पास भी नवेद जाचुका है, लेकिन तुम वादा करो कि आज के बाद फिर किसी हिन्दुस्तानी को न बुलावोगी।

मावल—मैं निहायत खुशीसे इसका वादा करताहूं।

मिस्टर मावेल बहुत तारीफ़ के मुस्तहक थे कि उन्होंने होलतन् वसराहतन इस बेहूदा हरकत का तज़किरा अपने मेहमानों से नहीं किया और यही सज़ा उनको काफ़ी समझी जो वो लोग तीन घंटे से बाहर टहलते रहे, खुदा २ करके डिनर का वक्त आया हस्बज़ैल मेहमान थे।

अंग्रेज़

कलेक्टर साहब मय मेम साहब, पादरी जान साहब मय मिस साहबा, ऐसिस्टेंट मैजिस्ट्रेट साहब मय मेम साहबा, डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेण्डेण्ट साहब पूलिस, ऐसिस्टेंट महकमय अफीउन, डिस्ट्रिक्ट इञ्जिनियर।

हिन्दोस्तानी।

सैयद काजिमहुसैन मय साहबज़ादः, नव्वाब मुहम्मद हुसैनखां, मौलवी मुकर्रमहुसैन तहसीलदार, मुंशी शरीफउल्ला डिपटी कलेक्टर।

सबलोग करीने से बिठलाए गये इस मजमअ में नव्वाब मुहम्मद हुसैन और मौलवी शरीफउल्ला, खास बानात की बाकायदा पोशाक पहिनेथे। शरीफुल्ला की वज़अ में इतनी खामी थी कि मोज़े रेशमी न थे और पतलून रंगीन कश्मीरे

का था बाकी और हिन्दोस्तानी साहबान की वजय और लिबास से भाजरीम आगाह हो चुके हैं।

सबसे पहिले शोरबा आया वाकिफ़कारों ने चमचे से शोरबा पी लिया, मगर सैयद साहब और तहसीलदार साहब ने रोटी छुरी से काटकर शोरबे में डुबोकर हिन्दोस्तानी कायदेके मुताबिक खाना शुरू किया; अभी किसीकी निगाह नहीं पड़ी। शोरबे के बाद मछली आई सैयद साहब ने छुरी से काट काटकर मछली खाई हालांकि मछली सिर्फ़ कांटे से खाई जाती है, जब छुरीसे लुकमा मुंह तक न पहुँचता बेतामुल हाथ से मदद लेते थे इसी तरह वह हर चीज जुरूरत से ज्यादः काब में ले लेते थे और बाज चीजें खानसमां से दोबारा मांगते थे उसपर तुर्रा यह कि जैसेही खानसामां प्लेट लाता सैयद साहब दरयाफ्त फरमाते कि भाई हम मुसलमान हैं कोई चीज़ गैर-मशरूअ हमारे सामने मत लाना। तहसीलदार और सैय्यदसाहब दोनों ने बवज: नावाकफियत कवायद-मेज़ के ऐसी ऐसी बेतमीजियां कीं कि तमाम अंग्रेज़ हँसते थे इतने में बटेरों की बारी आई तहसीलदार साहब को बटेर बहुत पसंद थे, जैसेही खानसामां और मेहमानों की तरफ चला तहसीलदार साहब ने आवाज़ दी।

तहसीलदार—खानसामांजी पहले इधर होते जाओ।

खानसामा—पहिले और साहब लोगों को दिखाकर तब आपके सामने लाऊंगा।

तहसीलदार—यह कैसी बेतमीजी है पहिले इधर देते जाओ।

मेमसाहब—(कलक्टरसे) डियर अब मैं इस बेहूदगी को बर्दाश्त नहीं कर सकती, मैं उठ जाती हूं।

कलक्टर—खुदा के लिये गजब न करो जिसतरह बने यह वक्त काट दो फिर उम्र भर ऐसी हरकत न होगी।

मेमसाहब—मुझे बएवज़ गुस्से के सख्त हँसी आरही है भला ऐसा तमाशा कभी तुमने देखा था?।

तहसीलदार—अरे मियां तुम कैसे आदमीहो? बटेर इधर देजाओ क्या हम मेहमान हीं नहीं हैं मौलवी शरिफ़उल्ला के सामने लेगये और हमारे सामने नहीं लाते।

खानसामा—दंम लीजिये लाताहूं।

**शरीफउल्लाह**—(आहिस्तः से) छुरी तले।

**तहसीलदार**—यह क्या बेहूदापन है, साहब से कहदूंगा जो खिलाफ़ तहज़ीब कलमा मुंह से निकालोगे।

**सैयदसाहब**—चुपरहिये जनाब यह क्या मौका है खिलाफ़ तहज़ीब बातें मुनासिब नहीं। शरीफउल्लाह बिचारा चुप होरहा, तहसीलदार साहब और सैय्यदसाहब के आगे खानसामा ने एक एक बटेर रखदी तहसीलदारसाहब भी छुरी कांटेसे बटेर को न खा सके फौरन् हाथ से तोड़ तोड़ खाना शुरू किया।

**सैय्यदसाहब**—जनाब ये बटेर तो गैरज़बीहा मालूमहोती है इसका खाना तो हराम है, अमीरहसन गैरज़बीहा खा रहा है, हाथ रोकलो।

**तहसीलदार**—अहहा! यह गैरज़बीहा थी लाहौलविलाकुव्वतइल्लाबिल्लाह! खानसामां बर्तन उठा लेजाओ तुम को मुसल्मान हो कर गैरज़बीहः चीज हमारे सामने रखते शर्म न आई।

**खानसामा**—और चीजें खा गये तब आपको खयाल न आया?!

**सैयद साहब**—चुप, क्या बेहूदा बकता है।

यह सब रंग देख कर कलेक्टर साहब ने इसका भी इन्तिजार न किया कि कुल खाने खत्म होते, अङ्गरेजों से कानाफूसी होकर जलसये दावत फौरन् बर्खास्त किया और खानसामां को इशारा किया उसने हाथ धोने के बरतन मेज़ पर लगा दिये उसमें एक एक गुलाब का फूल था तहसीलदार और सैयद साहब समझे कि यहभी कोई खाने की चीज है फूल उठा कर मुंह मे रक्खा इसपर बड़ा कहकहा पड़ा; तहसीलदार साहब केवड़ा समझकर पानी को पीगए इसपर दूसरा कहकहा हुआ।

**साहब**—अच्छा अब आपलोग जाइये, मेम साहबा की तबिअत अच्छी नहीं है इस वजह से यह जलसा बर्खास्त किया जाता है हम आपलोगों के बहुत शुक्रगुजार है।

**तहसीलदार**—खुदावन्द मैं रुखसत होता हूं मेरा लड़का अबतक बेकार है हुजूर ने कांजीहौस में मुहर्रिर मुकर्रर कर दिया था फिर जबसे कोई जगह नहीं मिली।

**साहब**—हम कहता है आप जाइये नौकरी की दरख्वास्त का यह मौका नहीं है।

सैयदसाहब ने हाथ धोने को खानसामा से पानी मांगा क्योंकि शोरबे से उनके हाथ तर थे, खानसामा गुसुलखाने से चिलमची लाया, तहसीलदार और सैयदसाहब ने हाथ धोये और मेहमानान जीशान वहां से बहजार खराबी बाहर निकले। नवाब महम्मदहुसेन औ मौलवी शरिफउल्ला अपने दिलोंमें सख्त नादिम और पशेमान थे, लेकिन सैयद साहब और तहसीलदार दोनों निहायत खुश और बश्शाश!

**तहसीलदार**—क्यों हजरत! गुलदस्ते वाला मज़मून कैसा चोखा रहा "रसीदा बूद बलाये वले बखैर गुज़श्त"।

**सैयदसाहब**-और मैंनेभी गैर ज़बीहा वाला मज़मून कैसा कहा, सबके होश उड़गये।

**अमीरहसन**—खुदा चाहेगा तो उमर भर अब कोई हिन्दुस्तानी घुसने न पायेगा।

**तहसीलदार**—क्या लड़कपन की बातें करते हो, बाप का कुछ तो अदब चाहिये।

**सैयदसाहब**—न बुलाये मर्दूद यहां परवाह किसको है।

यह लिखना फजूल है कि अंग्रेजों में इसकी निसबत क्या बात चीत हुई। अब तक जब उस दावत का तज़किरा आता है लोग हस्ते हंसते बेचैन होजाते हैं। हमारे सैयद साहब उसी रोज़ शब की रेल में इटावे से चलदिये, मुसाफिरगाड़ी तीन बजे शब को इटावा से छूटती थी मालूम नहीं क्या इत्तफ़ाक पेश आया कि इधर तो इटावे से मुसाफिर गाड़ी चली और दूसरे स्टेशन से मालगाड़ी छुटी, बीचमें दोनों गाड़ियों की मुठभेड़ हुई हरचन्द इञ्जिन ड्राइवरों ने अपनी२ रेलें रोकनी चाहीं मगर न रुक सकीं। सैयदसाहब खिड़की में से सर निकाल कर देखनेलगे कि दूसरी रेल कितनी दूर है, इतनी देरमें इंजनों ने एक दूसरे से कुश्ती लड़नी शुरू करदी, पहिली ही दो टक्करों में मुसाफिर गाड़ी सड़क से उतर कर नीचे गिर पड़ी,-सैयदसाहब चूंकि खिड़की में खड़े हुये थे सदमः से निकल कर बाहर गिरे सर फट गया, और उसी वक्त राही मुल्क-आदम हो गये।

सिर्फ सैयदसाहबही शहीद नहीं हुये बल्कि पचासों आदमी उस सदमे से चोटीले और मकतूल हुये, अमीरहसन अलबत्ता बाल २ बच गये क्योंकि उस

वक्त वो बेंच पर लेटे हुयेथे उनपर सदमा नहीं पहुंचा ।

उसवक्त की हालत एक अजीब हालत थी, हजारों आदमी आह व बका करते थे और सदहा जख्मी मुर्ग-नीमबिस्मल की तरह तड़प रहेथे, किसीका सर तन से जुदा था अलगरज पल मार ने में क्या था क्या हो गया ।

अमीरहसन के जैसेही होश संभले अपने बाप की लाश देख कर बेएखतियार रोने लगे थोड़ी ही देर में दूसरी रेल आई अमीरहसन ने लाश उठवाई और उसको आगरे लाए निहायत शान व शौकत से तजहीज व तकफीन हुई ।

नजीरहसन और उनकी मां को इस नागहानी औ कयामत खेजवाकअ़ से जो सदमः पहुँचा तहरीर नहीं होसकता । नजीरहसन की आंखों में जो जो उलट फेर होनेवाले थे खुदबखुद फिर गए और यही हालत बिचारी सिकन्दर बेगम की हुई । उनपर क्या मुनहसर है आम तौर पर इस नागहानी वफात से हर शख्स दिलगिरफ्तः और मुतअस्सुफ था ।

सैयद काजिमहुसैन गो कैसेही पुरानी कितअ़ के शख्स थे मगर अपने फ़ेअ़ल के आदमियों में निहायत मकबूल और मुमताज थे और उनकी बेवक्त वफात से आगरे के तमाम मुसल्मानों का एक मजबूत और कवी बाज़ू टूट गया ।

---

## बाब तीसरा ।

## असरे सोहबत ।

इटावे में इस खबर के मशहूर होते ही एक आम हलचल मच गया फौरन मिस्टर माबेल मेजिस्ट्रेट और डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट पूलिस मौके पर आए उनको उसवक्त तक नहीं मालूम था कि मुर्दों में उनके दोस्त कदीम सैयद काजिमहुसैन भी थे वहां पहुँचकर उन को यह हाल मालूम हुआ । वह फौरन् अमीरहसन के पास गए और हर तरह उनकी हमदर्दी की और सब हालात दरयाफ्त किये, लाश के आगरे भिजवाने में पूरी मदद दी और अमीरहसन से ताकीद कर दी कि बाद अदाय मरासिम तजहीज व तकफीन दोनों भाई मेरे पास आयें मैं जो कुछ मुमकिन् है मदद दूँगा । चुनांचे तजहीज व तकफीन के दो तीन रोज़ बाद अमीरहसन ने नजीरहसन से मिस्टर माबिल की हमदर्दी का किस्सा बयान किया और

ख्वाहिश ज़ाहिर की कि वह नौकरी करने इटावे जाना चाहते हैं ।

नज़ीरहसन भाई इतनी जल्दी क्या है अभी अब्बाजान मरहूम के सब फ़ातिहे बाक़ी हैं दसवां, बीसवां, चालीसवां इन सब से फ़रागत होके इटावे चलना, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा ।

अमीरहसन—मेरे नजदीक यह सब काम औरतों के हैं उन्हीं के जिम्मे छोड़ कर चलदेना चाहिये, देखो देर ऐसे मुआमिलात में हमेश: मुंसिक़ातिल का असर रखती है ।

नज़ीरहसन—मगर मेरी राय हरगिज नहीं कि हमलोग अभी से नौकरी की तलाश में निकलें। देखो अभी अब्बा को मरे कै दिन हुवे अम्मांजान का जख्मेदिल अबतक ताज़ा है अगर हम लोग उन्हें तनहा छोड़ कर चले जायँगे तो उनकी जिन्दगी दुश्वार होजायगी।

अमीरहसन—मालूम नहीं किस दर्ज: पुराने खयालात तुम्हारे दिमाग में बसे हुवे हैं। हमलोगों के मकान पर रहने से न अब्बाजान फिर जिन्दा हो सकते और न अम्मांजान हमलोगों के चले जाने से कल्बअजवक हो सकती हैं आखिर यहां क्या धरा है जिसके लिये हमलोग पा-बजञ्जीर रहें।

नज़ीरहसन—भाई अव्वल तो मेरी हरगिज यह राय नहीं कि कब्ल वकालत पास करने के हमलोग नौकरी करें। अब्बाजान अपनी जिन्दगी में हमेशा समझाते थे कि हमलोगों का पहिला काम यह है कि वकालत हाइकोर्ट पास कर लें फिर जो खुदा की मर्जी हो।

अमीरहसन—मेरे लिये अब वकालत पास नहीं होसकती। तुम जानतेहो मेरा दिमाग़ किस दर्जा कमज़ोर हो गया है, अलावा इसके मुझे वकालत का पेशा भी पसन्द नहीं, जिसके सामने देखो हाथ बांधे खड़े हैं, हुजूर २ कर रहेहैं, तवक्कुल पर सहारा किये बैठे हैं मिली तो रोज़ी, नहीं तो रोज़ा।

नज़ीरहसन—मुझे तुमसे इस बारे में भी इत्तिफ़ाक़ नहीं, मेरे नज़दीक वकालत एक निहायत मुअज़िज़ पेशा है और हज़ार उस गुलामी से बेहतर है जो नौकरी में करनी पड़ती है। नौकरी में तुम कभी खुदमुख्तार नहीं होसकते तुम चाहते हो आज इलाहाबाद जांय हाकिम इजाज़त नहीं देता मजबूर हो! तुम चाहते हो इटावे में रहें गवर्मेंट

ने फांसी भेजदिया मजबूर हो। भाई नौकरी और गुलामी बराबर है, देखो किसी हिन्दीशायर का माकूला है " उत्तम खेती मध्यम बांन। निकृष्ठ चाकरी भीख निदान।

**अमीरहसन**—फिर क्या है बिसमिल्लाह! कल से हम आप दोनों लँगोटे बांध २ के चलें खेत में हल चलावें। लेकिन अगर उन्हीं सैयदसाहब की नसीहत पर चलना है तो फिर हमारा भी खुदा है।

**नज़ीरहसन**—मेरा यह मतलब नहीं कि तुम इस माकूले पर अमल करो मगर यह मैं ज़रूर कहूंगा कि जबतक मुमकिन हो इन्सान नौकरी से बचे — क्या तुम नहीं देखते कि नौकरी करने वाले किसदर्जे परेशान और शाकी रहते हैं तुम्हारी इसी तक़रीर से मुझे मालूम होताहै कि तुम्हारी राये में सिवाय सर्कारी नौकरी के और कोई बइज्जत नहीं और न तुम्हारे नज़दीक दुनियां में कोई पेशा सिवाय नौकरी बइज्ज़त है। यह सख्त गलती है नौकर फिर नौकर है, नौकर और गुलाम में कोई फर्क नहीं, अपनी आज़ादी, अपना आराम, अपना वकत सब आक़ा के हाथ बेच डालने का नाम नौकरी है मैं नहीं समझता कि तुम क्यों नौकरी के दिलदादह होरहे हो; देखो अभी कल का तज़किरा है, सरचार्लस ईलियट ने हुक्म दिया कि कोई मुलाज़िम-सर्कार कांग्रेस के जलसे में तमाशा देखने भी न जाये, फिर किसी सर्कारी नौकर की यह मजाल नथी कि उस रास्ते भी निकल जाता, तुमको मालूम है कि सर्कारी नौकरियां किस दिक़्क़त से मिलती हैं और तुम्हारे खयाल के ऐसे आदमी नौकरी की तलाश से मारे मारे फिरते हैं यही सबब नौकरी के बेइज़्ज़त और ज़लील होजाने का है, ऐ भाई इस शौक को दिल से निकाल डालो। अब्बाजान की नसीहत दिल से माननी चाहिये, पहिले हाईकोर्ट की वकालत पास करले फिर देखा जायगा।

**अमीरहसन**—वकालत का मेरे सामने नाम मत लीजिये, देखिये मिष्टर सलीमउद्दीन बेरष्टरी पास कर आये और कोई टके को नहीं पूछता, पहले कोठी में बड़े शान व शौकत से रहते थे, अब शहर में मकान लिया है मुश्किल से एक नकलनवीस की भी तनखाह के बराबर उनकी आमदनी नहीं है अभी

परसों एक बड़े नामी वकील साहब को एक कोतवाल ने पिटवा दिया कुछ बनाये न बनी और तौहीन अदालत में मुकदमा कायम हुआ यह तो मुआवरों के बायें हाथ का खेल है।

नज़ीरहसन—सख्त मुशकिल है कि जो बात तुम्हारे जेहन में जम जाती है फिर नहीं निकलती क्या आनरेबिल पं० अयोध्यानाथजी ने नौकरी के ज़रिये से इज्ज़त पाई? नौकरी करके रुपया जमा किया? जो इसवक्त लाखों रुपै के आदमी हैं, क्या यह नौकरी में कुदरत है कि मुन्सी कालीप्रसादको इतनी दौलत मिल सकती जो वो कायस्थ-पाठशाला के लिये छोड़गये? क्या मुन्शी इमतियाज़अली और मिस्टर जैकशन ने वकालत में कुछ कम मर्तबा हासिल किया? दुनियां की वो कौन इज्ज़त, वो कौन दौलत और वो कौन न्यामत थी जो इन मुअज़िज़ वकला ने वकालत में नहीं हासिल कीं, मैं ऐसे भी वकील जानता हूं कि जिन्होंने अपनी वकालत के मुकाबले में हाईकोर्ट की जजी तक नहीं मंजूर की। देखो नौकरी में सिवा मुकर्रर: तनख्वाह के और कोई जायज़ आमदनी नहीं होसकती, तनख्वाह जो इस ज़माने में हुक्काम और हिन्दुस्तानी अफ़सरान की है वो हर्गिज़ इज्ज़त से बसर करने को काफ़ी नहीं पस नौकरी में या आदमी रिशवत ले और दुनिया व अकबा दोनों में ज़लील व रुसवा हो या तकलीफ से बसर करे पस इन दोनों में से एक बात लाज़मी है। वकालत में अगर तकदीर रहबरी करे और इन्सान नेकचलन और खुशलयाकत हो तो एकही मुकद्दम: में वारा न्यारा है और न वहां कोई पूछने वाला है कि तुमने यह दौलत कहां पाई और न किसी का खौफ़ व खतर है। ऐसी आज़ादी और ऐसे मौकों को छोड़ कर अपनी गर्दन गुलामी के फन्दे में फसाना मेरे नज़दीक सख्त हिमाकत है।

अमीरहसन—आप अपना लेक्चर रहने दीजिये मैं सिवाय नौकरी के हर्गिज़ वकालत के पास न जाउंगा और न मुझसे अब वकालत का इम्तहान दिया जासकता है, मुझे अगर पेशकारी भी मिल जायगी तो मैं निहायत खुशी से कबूल करूंगा, पचास रुपै मेरे बसर के लिये काफी हैं।

नज़ीरहसन—तुमको अख़तियार है

जो चाहे करो मैं तुम्हारा जां निसार भाई हूं जो कहोगे तुम्हारी खुशी के आराम के लिये कबूल करूंगा लेकिन मैं अपनी इस राय पर साबितकदम हूं और मैं हर्गिज़ अपने लिये सिवाय वकालतके दूसरा पेशा पसन्द नहीं करता

अलकिस्सा दोनों भाईयों में नौकरी और वकालत के मज़मून पर मुतवातिर गुफ्तगू हुई, अमीरहसन के सर पर हुकूमत और नौकरी का जो भूत सवार हुआ था उसने उतरने का नाम न लिया। अमीरहसन ने अपना सामान भी बढ़ाना शुरू करदिया, एक टमटम और घोड़ा नीलाममें से खरीद लाये, दो तीन बेफिकरे मसाहबत में भी दाखिल कियेगये। जिस रोज़ टमटम खरीदी गई दोनों भाइयों में फेर गुफ्तगू हुई।

नज़ीरहसन—टमटम तुमने नाहक खरीदी, पालकीगाड़ी और वेगनट तुम्हारे लिये काफी थी, मैं तो कभी सवार भी नहीं होता।

अमीरहसन—पालकीगाड़ी और अब्बाजान वाला टमटम जिसके काबिल था वह चलबसे, अब सिवा फूक देने के दुसरा इस्तयामाल उसका नहीं होसकता। नजीरहसन! अब्बाजान के मरतेही तुम इसकदर दकियानूसी खयालात के आदमी क्यों होगये?।

नज़ीरहसन - आखिर इन गाड़ियों में आपने कौन बुराई तजवीज़ की?।

अमीरहसन - आप को पसन्द हैं आप सवार हों मैं मना नहीं करता लेकिन इसकदर लचर और बेहूदा फैशन की गाड़ी शहर में दूसरी नही है अब इन लग़वियात में बसर नहीं कर सकता हर चीज़ आला दरजे की और फैशन के मुआफ़िक़ रखना चाहता हूँ चाहे तुम पसन्द करो या नापसन्द।

नज़ीरहसन ने कुछ जवाब न दिया और उठ कर अन्दर चले गये। उनके जातेही इनायतअली और हिदायतरसूल मुसाहबीन अमीरहसन ने आहिस्ता २ बात चीत आग़ाज़ की।

हिदायतरसूल—देखा आपने मियां नज़ीरहसन साहब को आप का टमटम ख़रीदना सख्त नागवार हुआ।

इनायतअली – गोया कुल माल व असबाब में आपका हिस्सा ही नहीं!।

अमीरहसन—नज़ीरहसन पागल हैं उनको बात का खयालही क्या।

हिदायतरसूल मैं ऐसी ऐसी बातें सुन रहा हूँ कि ज़बान पर लाते डर

मालूम होता है लेकिन हक़े नमक भी अदा करना फ़र्ज़ है इसलिये बग़ैर अर्ज़ किये रहा नहीं जाता ।

इनायतअली—क्या वही बड़वाली बात आप कहने को हैं ? ।

हिदायतरसूल—हां क्या वह तुम्हारे नज़दीक ज़रूरी बात नहीं है ? ।

इनायतअली—ज़रूरी नहीं बल्कि अशद ज़रूरी है हुज़ूरेआलम की तमाम उम्र की दौलत का इसी पर दारोमदार है ॥

अमीरहसन—क्या क्या? खुदा के लिये जल्दी कहो ।

हिदायतरसूल—कहें क्या, हुज़ूर अपने भाई से कह देंगे, हमलोग निकाल बाहर होंगे ।

इनायतअली—खुदावन्द

भाग इन बुर्द फ़रोशों से कहां के भाई । बेच ही डालें जो यूसुफ़ सा बिरादर पाएँ ॥

अमीरहसन तुमलोग क़िस्से को नाहक़ तूल दे रहे हो और साफ़ २ बयान नहीं करते ।

हिदायतरसूल—दस रोज़ की हुज़ूर मुहलत दें, दसवें दिन यह नमकख्वार कुल हालात बाद तहक़ीक़ात व शरह व बिसत अर्ज़ करेगा । खुदानख्वास्ता हम नमकख्वारों की यह मन्शा नहीं कि हुज़ूर के घर में नाइत्तिफ़ाक़ी या रञ्जिश पैदा हो इसवास्ते जबतक कोई अम्र तहक़ीक़ न हो अर्ज़ करना नामुनासिब है ।

अमीरहसन ने हरचन्द इसरार किया मगर मुसाहबीन ने यह मुअम्मा यहीं तक रहने दिया और एक लफ्ज़ भी न कहा ॥

इन दस दिनों में कोई वाक़आत ऐसे पेश नहीं आए जो तज़किरे के लायक़ हों लेकिन हमारे दोस्त इनायतअली और हिदायतरसूल अपने कामों में ग़ाफ़िल न रहे । हिदायतरसूल एक मशहूर शख़्स था नसबोहसब उसकी आजतक किसी को नहीं मालूम । वह तो अपने को सैयद और बारहे का रईस ज़ाहिर करता था और खां बहादुर सैयद जलालुद्दीन हुसैन असिस्टेंट कमिश्नर होशियापूर को अपना अज़ीज़ क़रीब ज़ाहिर करके हर मुहफ़िल और हर मजमअ में मुमताज़ और मोअक्किर बन जाता था । लेकिन ताड़नेवाले उसको मजहूलुलनसब और ज़लील समझते थे । आदमी ग़ज़बका चालाक और

क़यामत का लिख्खाड़ और ज़हीन था हर मौके पर हस्बहाल उसका गुफ्तगू करना शेवा था। खुदा बख्शे चौधरी ख़ुसलत हुसैन मरहूम को उसीने बिगाड़ा और ऐसा बिगाड़ा कि बेचारे की ऐन आलम शबाब में जान गई। नव्वाब यूसफ मिरज़ा साहब उसी के हाथों तबाह व बरबाद हुए, यह सब था और सबलोग उसके हालात जानते थे मगर ऐसा ज़रीफ और बज़्लासंज था कि एकही मुलाक़ात में नौजवानों और अनेले रईसों को तस्खीर कर लेता था। इनायतअली उसका खास चेला था जिस जगह जाते दोनों जाते और जहां रहते दोनों साथ रहते, इनायअली इतना लायक़ और ज़हीन न था जैसा खुशरू और खुशगुलू था, उसकी क़द्र ज्यादातर बवजह उसकी खुशगुलूई और रंगीन तबई के हुआकरती थी। खुदाबख्शे सैयद काज़िमहुसैन मरहूम के वक्त में यह लोग फाटक के अन्दर भी आने की जुरअत न कर सकते उनके लड़कों से मिलना या रस्म व मुहब्बत पैदा करना तो बहुतही दुशवार था। सैयदसाहब के मरते ही दोनों हज़रत अमीर हसन से मिलने आए और एकही दिन की नशस्त औ गुफ्त व शनूद ने अमीरहसन को अपने ज़ाहिरदार दोस्तों का दिलदादा कर दिया और दो ही तीन दिन में यह लोग खास मुसाहिब और रफ़ीक़ समझे जाने लगे।

हिदायतरसूल यह जानता था कि सैयदसाहब मरहूम ने बहुत काफी दौलत छोड़ी है जिसके मालिक दोनों साहबज़ादे हैं। नज़ीरहसन की सञ्जीदगी और मुतानत ज़रबुलमस्ल थी इस लिये उन पर ऐसे बेफ़िक्रों की कोई कोशिश कारगर होना ग़ैरमुमकिन थी अमीरहसन बेशक इस काबिल थे कि इनशिकारियों के शिकार बनते। चुनांचे तज़रिबाकार हिदायतरसूल ने अपना उल्लू ढूंढ निकाला। हिदायतरसूल ने शुरूही से अमीरहसन का रहनसहन अंग्रेज़ियत और जेण्टिलमैनी की तरफ पाया इसलिये वह भी इस रङ्ग में अपना काम करने लगा।

आगरे में उन दिनों चन्द रोज़ से एक यूरेशियन औरत रहा करती थी मिसेज़ स्टील उसका नाम मशहूर था अपने को कभी कपतान की बेवा और कभी सरजंट की बेटी ज़ाहिर करती थी और एक छोटे से खूबसूरत बँगले में

रखती थी बरायनाम कुछ असबाव भी फ़रोख्त के लिये रखती थी मगर असली पेशा उसका किसी को मालूम न था। उम्र उसकी बीस पचीस साल के दरमियान थी सूरत हसीन और तबियत हाज़िर और ज़हीन थी, उर्दू निहायत उम्दा बोल सकती थी और हिन्दोस्तानियोंसे उसकी राहोरस्म ज्यादा थी मुअज़िज़ अंगरेज़ बवजह उसके मुश्तबह चलनी और न मालूम होने असली हालात के उससे सख्त नफरत करतेथे और न वह किसी भलेआदमी के घर जाने पाती थी। हमारे दोस्त हिदायतरसूल ने चौधरी खसलतरसूल मरहूम के ज़माने की मुसाहबत में मेमसाहबा को देखा था और मेमसाहबा भी उसको अच्छी तरहसे जानती थीं। अमीरहसन की यूरोपियनपसन्दी देख कर हिदायत रसूल ने इससे बेहतर कोई तरकीब न समझी कि मेमसाहबा और अमीरहसन से रस्मोराह पैदा करा दें चुनांचे हिदायतरसूल ने पहिले मिसिज़ स्टील से मिलकर अमीरहसन का बखूबी तज़किरा किया और इधर अमीरहसनसे मेमसाहबा के इखलाक और औसाफ़ की इस क़दर तारीफ़ की कि हमारे दोस्त बवजह मुश्ताक़ हो कर एक रोज़ मुलाक़ात को गये और बहुत ही खुश खुश वापस आये और हिदायतरसूल से मेमसाहबा की बहुत तारीफ़ की।

एक रोज़ सुबहका वक़्त था और अमीरहसन अपने कमरे में मय मुसाहिबीन के बैठे हुये चाय पी रहे थे। इस मुकाम पर यह कहदेना काफ़ी है कि चन्दरोज़ से अमीरहसन ने अपने भाई के साथ खाना या चाय पीना करीब करीब छोड़ दिया था। वह बेचारा घरबार के इन्तिज़ाम, हिसाब किताब की दुरुस्ती, बाप के फातिहे दरूद के फ़िक्र में हैरान व परेशान था और मियां अमीरहसन दोस्तों की खुशगप और सैर व तफ़रीह में मशगूल रहते थे।

हिदायतरसूल— कल हुज़ूर ने जान कंपनी की दूकान पर छड़ी बहुत अरज़ां पाई परसों मेरे सामने राजा भरतपूर ने इक्कीस रुपै की वैसीही छड़ी खरीदी थी।

इनायतअली — जामसाहब और हुज़ूर से रस्म भी तो बहुत है, मालूम नहीं क्या बात है अंग्रेज़ लोग जितना हुज़ूर की तरफ़ मुखातिब और आमादा

रहते हैं किसी हिन्दुस्तानी की तरफ़ ऐसे मुतवज्जः नहीं होते।

हिदायतरसूल—वाक़ई यह बात तुमने खूब सोची मिसेज़ स्टील साहबा बेअखतियार हो होकर मुझसे हुज़ूर के हालात पूछती थीं, मैं समझता हूं वो आज ही कल में हुज़ूर को डिनर पर बुलाने वाली हैं, इस दर्जा हुज़ूर की तारीफ़ करती थीं कि मैं क्या कहूं।

अमीरहसन—भई मैं तो एकही दफा मेमसाहबा से मिला हूं मुझे वो क्यों बुलाने लगीं।

हिदायतरसूल—हुज़ूर ने एक ही मुलाकात में मालूम नहीं क्या जादू कर दिया, अबज्यादा कहना बेअदबी है, मुखतसर यह है कि—

असर लुभाने का प्यारे तेरे बयान में है। किसी की आंख में जादू तेरी ज़बान में है॥

इनायतअली—अंग्रेज़ीदां मैंने भी बहुत देखे मगर हुज़ूर का सा फसीह बोलनेवाला आज शहर में दूसरा नहीं है, नहर वाले साहब मुझसे आज फरमाते थे कि हुज़ूर ने शायद विलायत में तालीम पाई है, जब मैंने अर्ज किया कि नहीं, सख्त मुतअज्जिब हुये—वाक़ई ये बातें खुदादाद हैं।

हिदायतरसूल—मैं तो अंग्रेजी जानता नहीं मगर हुज़ूर की गिट पिट और असली फरंगियों की गिट पिट में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं पाता।

इतने देर में एक लड़का सुर्ख बानात की वर्दी पहने और अच्छी गोटे दार पगड़ी बांधे नज़र पड़ा, मोअद्दब होकर सलाम किया और एक चौड़ा लिफाफा निहायत अच्छे काग़ज़ का जिस पर सुनहरे फूल बूटे बने थे अमीरहसन के हाथमें दिया, अमीरहसन ने लिफाफा खोला, उस में एक निहायत खूबसूरत कार्ड छपा हुआ था जिस का मज़मून यह था—

Mrs Steel, requests the pleasure of Mr A Hassan's company at dinner this evening at 7 P M

मिसेज़ स्टील अमीरहसन साहेब की शिर्कत आज शाम के खाने में ७ बजे चाहती है और इस खुशी की इल्तिजा करती हैं।

अमीरहसन—यह लीजिये मेमसाहबा ने दावत का नेवता भेजा है आज सात बजे डिनर है।

हिदायतरसूल—फिर क्या, मजे हैं लेकिन हमको क्या? हमलोग थोड़े घुस

ने पायेंगे।

**इनायतअली**—सैयद नजीरहसन साहब के नाम भी नेवता है?।

• **अमीरहसन**—नहीं, और खुदा न करे उनके नाम हो, सब लुत्फ़ ही किरकिरा होजाय।

अमीरहसन ने उसी वक्त मंजूरी दावत की चिट्ठी लिख कर लौंडे के हवाले की।

**हिदायतरसूल**—खुदावन्द इसको कुछ इनाम मिलना चाहिये, बड़ी सरकारों में इनाम देनेका दस्तूर है।

**अमीरहसन**—अच्छा, पांच रुपे दिलवादो। बेशक इस लड़के को इनाम देना चाहिये।

**हिदायतरसूल**—मगर दारोगा काहे को देगा, वो तो नजीरहसन साहब के जेर-हुक्म है, बगैर उनके तहरीरी हुक्म के एक पैसा किसी को नहीं देता। कल हुजूर ने दस रुपे दिलाये वो भी नहीं दिये, मैंने बखयाल रफ़ा-शर्म खामोशी अख्तयार की।

**अमीरहसन**—अच्छा इसको रुपे देदो हम इसझगड़े को बहुत जल्द तय करते हैं, हमको खुद नजीरहसन की किफायतशारी सख्त नागवार है और हम उनके दस्तनिगर होकर नहीं रह सकते।

**हिदायतरसूल**—बहुत बेहतर खुदावन्द।

**इनायतअली**—क्यों हुजूर! आज किस लिबास से डिनर खाने तशरीफ़ ले जायेंगे? डिनरसूट तो शायद अभी हुजूरने नहीं तैयार कराई?

**अमीरहसन**—ये तो तुमने खूब याद दिलाया, हां मेरे पास बाकायदे पोशाक डिनर की तैयार नहीं है, मैं सिर्फ एक मर्तबा अब्बाजान के साथ मिस्टर माविल के यहां दावत में गया था वहां वह फ़ज़ीता हुआ कि बयान करने के काबिल नहीं।

**हिदायतरसूल**—सरकार कोई बढ़िया हिन्दुस्तानी लिबास पहन कर जांय जिसमें मेमसाहबा भी समझें कि आज किसी शाहज़ादे को नवेद दिया।

**इनायतअली**—टोपी भी कामदार हो और अचकन जो ज़री के काम की हुजूर के पास है वो बहुत ही प्यारी है।

**अमीरहसन**—मगर लेडियों के जलसों में तो ज़र्क़ बर्क़ पोशाक पहन कर जाना नामुनासिब है, मुझे बड़ा अफ़सोस है कि मेरे पास कपड़े तक दु-

हम नहीं, चलो अभी ह्वेल कंपनी की दूकान पर पांच चार जोड़े कपड़ों का हुक्म दे आयें।

हिदायतरसूल—और ये दकियानूसी कपड़े क्या होंगे?

अमीरहसन— सब तकसीम कर दूंगा, जो तुम्हारे पसन्द हों तुम लेलेना।

हिदायतरसूल—आदाब!

फ़ौरन् टमटम तैयार हुआ, हिदायतरसूल और अमीरहसन ह्वेल कंपनी की दूकान पर पहुंचे, ह्वेल ऐण्ड को शहर में निहायत फैशनदां सौदागर थे और अंग्रेज़ी लिबास इनके यहां से बेहतर दूसरी जगह तैयार नहीं होता था, लेकिन उनकी गिरांफरोशी भी ज़रब उल मस्ल थी, एक सुर्ख रेशमी पायताबा जो बाजार में व्हाइट वे लेडला कंपनी की दूकान पर दो रुपै को मिलता था ह्वेल कंपनी के यहां सोलह रुपै उसकी कीमत थी, अमीरहसन दूकान पर पहुंचते ही निहायत आवभगत से लिये गये और मिस्टर ह्वेल ने उनके जिस्म की नाप ली।

ह्वेल—कै सूट तैयार होंगे? और किस किस कीमत के?

अमीरहसन—मिस्टर ह्वेल! मैं अभी अंग्रेज़ी फैशन से वाकिफ नहीं हूं इस लिये एक आली दर्जे के जेंटिलमैन के वास्ते जो जो सामान दर्कार हों मेरे लिये तैयार कर दीजिये।

हिदायतरसूल— हमारे सरकार नीमवहशी मुल्क से निकल कर अब तहज़ीबाबाद में दाखिल हुआ चाहते हैं इसलिये एक लार्ड या रईस के लिये जो जो लवाज़मात अंग्रेज़ी हों मोहैया कीजिये कीमत का खयाल न फरमाइये।

ह्वेल—थैंक यू मैं अभी सब फेहरिस्त देता हूं।

थोड़ी देर में मिस्टर ह्वेल ने हसब जैल फहरिस्त पेश की जो अमीरहसन ने बखुशी पसन्द फर्माकर मंजूर की। ईवनिङ्ग ड्रेस सूट,(रातकी दर्बारी पोशाक) तीन सूट ८००) मार्निङ्ग सूट तीन ५५०) आफ़िस सूट चार ४००) वाकिङ्ग सूट चार४००), घोड़ेकी सवारी के सूट तीन ५००), ओवर कोट दो २००), अलस्टर एक ५०) ड्रेसिङ्ग गौन दो १००) बनियाइन रेशमी दो दर्जन २५) बनियाइन सूती दो दर्जन २५) शर्ट फलालीन एक दर्जन ५०) शर्ट सफेद दो दर्जन २२५) मोजा हर किस्म १००) दस्ताना हरकिस्म १००) क्रिकट सूट

३००), तौलिया व चादर पलङ्ग तकिया व गिलाफ़ ३००) बौक्स पौलादी पांच २५०) गिलैडस्टोनबेग पांच २५०) टोपियां हरकिस्मकी २२५) मुतफर्कात २००) सामान हजामत वगैरहका १५०) साबुन बिलायती व इत्र वगैरह २००) कम्बल विलायती ३००) बूट मुख़्तलिफ़ इक्साम ४००) मीज़ान ५८२५)

ड्रेल—मैने जहांतक मुमकिन हुआ निहायत किफ़ायत से हर चीज़ की कीमत रक्खी है और मैं उम्मेद करता हूं के आप हमेशा इस दूकान से मामला रक्खेगे मैं वसूल कीमत में बहुत तंग तलब नहीं हूं आप जब आसानी से दे सकें दे दिया कीजिये।

अमीरहसन—मैं आपका निहायत अहसानमन्द हूं मैं हमेशा अब आपही के यहां से अपनी जरूरियात ख़रीदा करूंगा वाकय आपने मुझसे ज्यादा कीमत नहीं ली, दो डज़न बनिआइन की कीमत आपने २५) रुपै ली है यही बाज़ार में भी दाम है और चीज़ ऐसी अच्छी नहीं।

हिदायतरसूल—खुदावन्द ड्रेलसाहब बड़े माकूल शख्स हैं।

ड्रेल— मगर हुजूरने कुछ स्टेशनरी यानी कागज़ कलम व दावात का सामान नहीं ख़रीदा यह भी ज़रूरियात में है और छुरी कांटे व बर्तन तो हुजूर के यहां सब मौजूद होंगे।

अमीरहसन—आहा वाकै में इसेमैं बिलकुल भूलही गयाथा मेहरबानी करके यह सब सामानभी दे दीजिये बारह आदमी के खाने का पूरा सामान दे दीजिये। ड्रेल ने उसकी भी फ़हरिस्त पेश की, जिसमें चांदी के बरतन और छुरी कांटे वगैरह शामिल थे, इसकी कीमत चार हज़ार रुपै हुई।

हिदायतरसूल—(कान में) आज हुजूर दावत में जाते हैं मेमसाहब के लिये कोई उमदा सोने की घड़ी लेते जायँ।

अमीरहसन—हाथ लाना, वल्लाह कितनी ज़रूरी बात मैं भूला जाता था। मिस्टर ड्रेल ! आपके यहां घड़ियां और सोने की जंजीर भी हैं ?

ड्रेल—बहुत किस्म की हुजूर- मगर सस्ती नहीं।

अमीरहसन—आप कीमत का ख्याल न कीजिये खुदा के फ़ज़ल से मैं मुफ़लिस नहीं हूं।

हिदायतरसूल—आप ऐसी छोटी

और ज़लील बातें ऐसी बड़ी सर्कारों में पेश करते हैं, मैं समझता हूं कि सिवा बनियों के और हिन्दुस्तानी रईस आप ने नहीं देखे?

मिष्टरड्रेल—मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं, मेरा यह मतलब न था।

मिस्टर ड्रेल ने सब किस्म की घड़ियां दिखाईं एक सोने की लीवर घड़ी जो निहायत खूबसूरत थी और जिसके ढकने पर ज़मुर्रद जड़ेहुए थे पसन्द आई।

अमीरहसन—ये घड़ी और जड़ाउ जंजीर हमको पसन्द है, दीजिये और क़ीमत बिल में दर्ज कर दीजियेगा।

मिष्टरड्रेल—बहुत बेहतर, सिर्फ़ ४२ सौ रुपै की ये घड़ी है और आठ सौ रुपै जंजीर की कीमत है।

अमीरहसन—बहुत बेहतर, अच्छा हमलोग अब रुखसत होते हैं। मिस्टर ड्रेल आपकी इनायत और अख़लाक़ का मैं एक मर्तबा फिर शुक्रिया अदा करता हूं, ये सब चीजें आप मेरे मकान पर भेज दीजियेगा घड़ी मैं खुद लिये जाता हूं महरबानी करके एक जोड़ा डिनर सूट का आजही भेज दीजियेगा मुझे एक दावत में जाना है, और कपड़े पीछे से सिलवाते रहियेगा।

मिष्टर ड्रेल—बहुत बेहतर।

अलग़रज़ चन्द मिनट में हमारे दोस्त पन्द्रह हज़ार रुपै का असबाब ख़रीद करके खुशी खुशी वापस आये और असबाब से बार बार मुसर्रत ज़ाहर करते थे कि ड्रेल ऐण्ड को ने उनसे किसी चीज़ की क़ीमत ना मुनासिब नहीं ली, हिदायत रसूल ने यकीन दिलाया था कि दोस्तों से ड्रेल साहब कभी नावाजब दाम नहीं लेते।

---

## बाब चौथा।

### मिसेज़ स्टील की डिनर पारटी।

अमीरहसन बार २ अपनी खरीददारी का ख़याल करके इज़हार मसर्रत करते थे और उनके खुशामदी मुसाहब हां में हां मिलाते थे एक मिनट के लिये इसका ख़याल न था कि इतनी कसीर तायदाद क़ीमत की कैसे अदाय होगी अमीरहसन वाक़ा में उस वक़्त तक यह भी नहीं जानते थे कि उनके पिदर मरहूम ने किस कदर दौलत छोड़ी है और उसमें उनको क्या मिलनेवाला है।

मिस्टर ड्रेल ने सब काम छोड़ कर एक जोड़ डिनर सूट का तैयार कर ४ बजे भेज दिया, अमीरहसन बहुत ही

खुश हुए और फ़ौरन नौ तैयार लिबास को जेबा बदन किया।

हिदायतरसूल—सुबानअल्ला! सुभान अल्ला! क्या खुश किता और नफ़ीस जोड़ तैय्यार हुआ है।

इनायतअली—और हुज़ूर इस वज़ा में कैसे प्यारे मालूम होते हैं, ब खुदा मैंने ऐसी नफ़ीस बानात आज तक कभी नहीं देखी और पतलून किस कदर सुडौल काटा है सच तो यह है कि अंग्रेज़ी दरज़ियों के पास कोई जादू है।

अमीरहसन—मेरा आइना लाओ मैं खुद देखूं।

आइना लाया गया और अमीरहसन ने सिर से पैर तक अपने को देखा और खुद भी बहुत खुश हुये।

अमीरहसन—क्यों हिदायतरसूल अबतो कोई कसर नहीं, पूरा जंटिलमेन मालूम होता हूं?

हिदायतरसूल—मेरा कहना हुज़ूर खुशामद समझेंगे, ब खुदा हुज़ूर इस वक़्त ताज़ा-विलायत मालूम होते हैं।

इनायतअली—ये कुछ कपड़ों की तारीफ़ नहीं है "जामा जेबी" इसीका नाम है।

अमीरहसन—हां वाक़ै, मैं जो कपड़ा पहनता हूं बुरा नहीं मालूम होता, अरे मियां एक बड़ी मुशकिल है, मेम साहबा ने तनहा मुझी को दावत में बुलाया है, तुम्हें नहीं; वहां मैं अकेला सख्त परेशान् होउंगा।

हिदायतरसूल—हुज़ूर, ऐसी पार्टियों में हम ऐसे गरीबों की पुर्सिश कहां, यह हुज़ूर ही की कदरदानी है कि हर मौक़े पर सरकार हम को याद रखते हैं, मैं गाड़ी में बैठा रहूंगा।

अमीरहसन—हां यह ठीक है तुम गाड़ी में बैठे रहना, शायद मुझे वहां कोई ज़रूरत पेश आये, मैं पेशाब के बहाने से बाहर निकल कर तुम से मिल जाउंगा।

हमारे दोस्त मिस्टर अमीरहसन बन ठन कर गाड़ी में सवार हुये और अपने खास मुसाहब मियां हिदायतरसूल के साथही साथ मिसेज़ स्टील की कोठी पर ठीक ७ बजे शाम को दाखिल हुये मिसेज़ स्टील गाड़ी की आवाज़ सुन कर खुद बाहर निकल आईं और मि॰ अमीरहसन से हाथ मिला कर गोल कमरे में ले गईं। मिसेज़ स्टील का गोल कमरा जिस लताफ़त और नफ़ा-

सत से आरास्ता किया गया था इल-फ़ाज़ में उसकी तारीफ़ नहीं हो सकती एक कोने से दूसरे कोने तक कमरा दुलहिन बना था, मकान की सजावट में सिर्फ यही तारीफ़ नहीं कि बहुत सी चीजें मौजूद हों बल्कि उनका तरीका और मौक़े २ पर रखना बहुत बड़ी बात है और मिसेज़ स्टील इस हुनर में लासानी थीं अगर खराब से खराब चीज़ भी उन्हें मिल जाती तो इस खूबी से उसे गोल कमरे में रख देतीं कि बे अखतयार सल्लेअल्ला कहने को जी चाहता, मिसेज़ स्टील खुद एक सौदागर की हैसियत से रहती थीं जिस कोठी में उनका क़याम था उसमें छोटे छोटे सात कमरे थे ५ कमरे खुद उनके ज़ाती इस्तमाल में थे और दो कमरों में अंग्रेज़ी असबाब बराये नाम रक्खा था, पहले रोज़ मिसेज़ स्टील से और अमीरहसन से दूकान वाले कमरे में मुलाकात हुई थी, इस वजह से उन्हें इसका अन्दाज़ा भी न था कि उनके मेज़बान का गोल कमरा किस दर्जः लतीफ़ और खुशवज़ा है।

अमीरहसन उस कमरे और सामान को और किस्सा मुखतसर हर चीज़ को देख कर बहुत ही खुश हुए, मिसेज़ स्टील भी लैंप की रोशनी और डिनर सूट में अज़हद हसीन मालूम होती थीं उनकी स्याह आंखें, बड़े २ बाल, सन्दली रंगत हाथों में बारीक २ सोने की दो २ चूड़ियां निहायत दिलफ़रेब थीं।

**मिसेज़ स्टील**—मि॰ अमीरहसन! आहा, मैं किस कदर आपके फिर मिलने को तरसी थी।

**अमीरहसन**—मैं आपका निहायत शुक्रगुज़ार हूं कि इतनी थोड़ी मुलाकात में आपने मुझे सरफ़राज़ किया।

**मिसेज़ स्टील**—थोड़ी मुलाकात में मिस्टर हसन! वो चन्द मिनट जो आपके साथ सर्फ हुये इतनी ज़िन्दगी के बेहतरीन औक़ात में मैं शुमार करती हूं, आपका सा संजीदह, खुश-मिज़ाज, ज़ी-लियाकत, जेंटिलमैन इस शहर में दूसरा मेरी नज़र में नहीं गुज़रा। मैंने आज आप को इस लिये तकलीफ़ दी है कि चन्द घंटे बात चीत रहेगी मैंने इसी वजः से और किसी जेंटिलमैन या लेडी को नवेद नहीं भेजा मैं समझती हूं कि आप भी इस इन्तज़ाम को पसन्द करेंगे।

**अमीरहसन**—तो आज डिनर में

और कोई महमान नहीं है? ।

**मिसेज़ इस्टील**— नहीं, क्या यह बात आपको नागवार: हुई ?

**अमीरहसन**—मैं तो इस बात से और खुश हुआ, मिसेज़ स्टील ! मुझे अभी सुसाइटी में जाने का बहुत इत्तफ़ाक नहीं हुआ है इसलिये अगर कोई अम्र खिलाफ़ कायदे मुझसे सरज़द हो तो माफ़ कीजियेगा, मेरा पहले इरादा हुआ था कि मैं कोई हीला शरई करके इनकार करदूं लेकिन फिर मैंने खयाल किया कि जिस नेक और अच्छी लेडी ने ऐसी इनायत की है वो ग़ालबन मेरी गलतियों को भी माफ़ करेंगी ।

**मिसेज़ स्टील**— मिस्टर हसन ! मैं किस दरजा आप की एहसानमन्द हुई बेशक अगर आज आप न आते तो मुझे बहुत रंज होता ।

इतने में डिनर का घंटा हुआ, मिसेज़ स्टील अंग्रेज़ी कायदे के मुताबिक अमीरहसन के हाथ में हाथ डाल कर खाने के कमरे में तशरीफ़ ले गईं, डाइनिङ्गरूम यानि खाने का कमरा भी बहुतही आरास्ता व पैरास्ता था । उम्दा शफ़्फ़ाफ़ अलमारियो, खुशनुमा और खूब सूरत तस्वीरें, आफ़ताब से ज्यादा रौशन, मोतियों से ज्यादा चमकते हुए चीन के बर्तन, चांदी के डोंगे, मरस्सा छूरी, कांटे; खिदमतगार और खानसामा की ज़र्क़ बर्क़ वर्दी देख कर हमारे दोस्त ने दोबारा दरूद पढ़ा— इनको बार बार हैरत होती थी कि मिसेज़ स्टील कहां की दौलतवर लेडी है जो एक वाइसराय के बराबर ठाठ से बसर कर रही है, उन्हों ने उस वक्त यह इरादा कर लिया कि जब खुदा उनको भी मकान सजाने का मौका देगा तो मिसेज़ स्टील ही की तरह अपना बंगला सजेंगे, उनके खयाल में उससे कम सजे हुए मकान में रहना ज़िल्लत और बे तहज़ीबी थी ।

**मिसेज़ स्टील**—मि॰ हसन ! आप क्या नोश फ़रमावेंगे ?

**अमीरहसन**— सादा पानी ।

**मिसेज़ स्टील**— सादा पानी ! आपने भी गज़ब किया, यह फ़र्माइये शेरी, शामपीन या क्या ?

**अमीरहसन**—शायद आप वाकिफ़ नहीं कि मुसलमानों में शराब का इस्तमाल जायज़ नहीं, इसलिये मुझको मेहरबानी करके इस से माफ़ रखिये ।

मिसेज़ ह्वील—यह मैं खूब जानती हूँ लेकिन आप मेरे मेहमान हैं और आपको हर तरह अपने मेहमान की ख़ातिर करनी चाहिये मेरी दिलकशी ग़ालिबन् आपको गवारा न होगी और ख़ास कर एक बेचारी बेवा औरत की। (हँसकर)

हम कहे देते हैं ओ ख़ातिरशिकन्।
दिल किसीका तोड़ना अच्छा नहीं॥

अमीरहसन—आप बराह मेहरबानी इस बारे में मुझसे इसरार न करें।

मिसेज़ ह्वील—मगर मैं इसी बारेमें आप से इसरार करूँगी मैं यह आप से नहीं कहती कि आप इतनी पियें कि मतवाले हो जायँ, बदमस्त हो जायँ, लेकिन सुरूर के लिये थोड़ी सी ज़रूर पीजिये और मुझे मसरूर कीजिये। देखिये आपसे कौन इसरार कर रहा है, मिस्टर हसन! मेरा दिल न तोड़िये-देखिये शराब दर असल कोई बुरी चीज़ नहीं है लेकिन उसका इस्तेमाल बेवकूफ़ों ने ऐसी बेवकूफ़ी से किया कि दुख्तरेज़र का नाम बदनाम कर दिया।

अमीरहसन—लेकिन तमाम अतिब्बाय यूनानी और डाक्टरी की राय है कि शराब सेहत के लिये निहायत मुज़िर है और इस वजह से दीनि इसलाम में शराब नाजायज़ हुई।

मिसेज़ ह्वील – मिस्टर हसन! मुआफ़ करो इसकी बहस मैं नहीं करना चाहती लेकिन इतना ज़ुरूर कहूँगी कि जो डाक्टर या हकीम शराब को मुज़िरे-सेहत बतलाता है वह खुद इलाज के क़ाबिल है और मुमकिन् है कि बुरी शराबें मुज़िर भी हों लेकिन कोई मेरे इस शामपीन को मुज़िर बतला सकता है?—देखो मैं आपके फ़ायदे के लिये कहती हूं अगर कलह कमिश्नर साहबकी बीबी या लेफ्टिनेण्टगवर्नर ने आपको नवेद भेजा और वहां भी आपने यही नख़रे फैलाए तो वह किस क़द्र कसीदा ख़ातिर होंगी और अपने दिल में क्या समझेंगी-माईडियर अमीरहसन! मुझसे अब ज्यादा खुशामद न कराओ,मेराही लहू पिओ अगर अब इनकार करो।

अमीरहसन जवाब भी न देने पाए थे कि मिसेज़ ह्वील ने एक ग्लास में शामपीन भर के खुद अपने हाथ से उनके मुँह में लगा दी। अमीरहसन पर क्या है कैसाही ज़ाहदे-खुश्क होता उस वक्त पिघल जाता।

अमीरहसन सख्त पसोपेश में थे

इधर अपने वालिद नामदार की सोह-बतका असर और अक़ायदे इसलाम का जोश इसक़द्र बाक़ी था कि शराब को नजिस नापाक और मुज़िरेसेहत समझते थे; उधर फैशन का तक़ाज़ा, परीवश मेज़बां का इसरार और कमिश्नर व गवर्नर की दावतों की चाट, लालच दिलाती थी। आख़िरकार मेमसाहब का कहना बाला रहा और हमारे दोस्त ने चन्द घूंट शामपीन के नोशजा फरमाए।

मिसेज़ ष्टील — मिष्टर अमीरहसन! मैं कहांतक तुम्हारी तारीफ़ करूँ और तुम्हारा शुक्रिया अदा करूँ इसवक्त मैं समझी कि वाक़ई मेरे दोस्त हो। अमीरहसन! मुआफ़ करना, मैंने तुम्हें तुम कहना शुरू कर दिया, दोस्तों में ज्यादा तकल्लुफ़ अच्छा नहीं होता।

अमीरहसन - हां तकल्लुफ मैं खुद नापसन्द करता हूँ।

अय ज़ौक़ तकल्लुफ़ में है तकलीफ़ सरासर। आराम से वह हैं जो तकल्लुफ़ नहीं करते॥

मिसेज़ ष्टील और अमीरहसन दोनों उस वक्त मजे में थे मगर मिसेज़ ष्टील एक चालाक औरत थी वह इस वक्त भी अपनी घात और अपने मतलब से ख़बरदार थी दोनों ने इधर उधर की बातें शुरू कीं।

मिसेज़ ष्टील—(नावाक़िफ़ बनकर) अमीरहसन! मैंने सुना कि आजकल शहर में कोई सबजज रेल के सदमे से मर गये और उनके दोनों लड़कोंमें तनाज़ा पड़ा है, बड़ा भाई छोटे भाई को कुल हिस्से से महरूम करने की फ़िक्र में है।

अमीरहसन—क्या, इस क़िस्से को ज़रा बयान कीजिये आपने जो कुछ इस बारे में सुना हो मुझसे साफ़ साफ़ बतलाइये।

मिसेज़ ष्टील—मैं ज्यादा तफ़सील से आगाह नहीं परसों एक दो मुअज़िज़ जेण्टिलमैन मेरी दूकान में आपस में बातें करते थे और कहते थे कि छोटा भाई नेकबख्त और सीधा है वह ग़ाफ़िल है और बड़ा भाई बङ्क से रुपया निकालने के फ़िक्र में है और जो रुपया नक्द सबजज साहब छोड़ गये हैं वह सब ग़ायब कर दिया है। मैं ताज्जुब करती हूँ कि वह छोटा लड़का कैसा बेवकूफ़ है? क्यों अपना हिसाब भाई से समझ कर अलैहदा नहीं कर लेता?।

**अमीरहसन**—मिसेज़ ह्वील! मैं आप का इसवक्त निहायत एहसानमन्द हुआ आपने मुझे बड़े ख़तर से आगाह कर दिया।

**मिसेज़ ह्वील**—क्यों आप से क्या वास्ता ? ख़तरा कैसा ?

**अमीरहसन**—वह बदनसीब छोटा भाई मैं ही हूं। मेरेही अब्बाजान ने इन्तिक़ाल किया और मेरे भाई जो दर असल मुझसे बड़े नहीं हैं बल्कि एकही दिन के पैदा हैं मुझे नुक़सान पहँचाने की फ़िक्र में हैं और मैं ग़ाफ़िल था। वाक़ई दुनिया बड़ी बुरी जगह है मेरे दोस्त हिदायतरसूल ने मुझे इशारतन् आगाह किया था मगर मैंने कुछ ख़्याल न किया।

**मिसेज़ ह्वील**—मिस्टर अमीरहसन! मैं आप से निहायत सच्चे दिल से मुआफ़ी चाहती हूं मैं हरगिज़ इस राज़ से वाक़िफ़ न थी वरन: आपके सामने ऐसी बात का तज़किरा न करती। देखिये मैं यह नहीं चाहती कि भाइयों में नफ़ाक़ हो, अय काश मैं अपनी ज़बान काट डालती जिससे यह बेमौके बात निकल गई।

**अमीर हसन**—आप उलटी मुआफ़ी क्यों चाहती हैं, मैं सच कहता हूँ कि आपने मेरे साथ बड़ा सलूक किया मैं इस वक़्त अजीब ख़्वाबेग़फ़लत में था ख़ुदा आपको इसका अंजाम दे कि आपने मुझे बेदार कर दिया।

**मिसेज़ ह्वील**—क्या हिदायतरसूल को आप जानते हैं ?

**अमीरहसन**—हां वह मेरे बड़े दोस्त हैं और आजकल मेरेही साथ रहते हैं।

**मिसेज़ ह्वील**—मैंने उनको बहुत दिनों से नहीं देखा जब मैं पहिलेपहल यहां आई थी उस वक़्त मैंने उनको देखा था निहायत उम्दा और ईमानदार आदमी हैं अगर आप उनकी सलाहपर अमल करेंगे तो हमेशा फ़ायदा उठावेंगे अच्छा अब इन बातों को जाने दीजिये और मज़े मज़े की बातें कीजिये। इतने में डिनर ख़तम हुआ और दोनों गोल कमरे में आये। हमारे दोस्त ने दूसरा जाम लिया और झूम झूम कर यह ग़ज़ल गानी शुरू की। **ग़ज़ल।**

लगचली बादेसबा क्या किसी मस्ताने से। झूमती आज चली आती है मैख़ाने से॥ चूर होजाऊँ मगर जाऊँ न मैख़ाने से। अहद शीशे से तो पैमान है पैमाने से॥ रूह किस मस्त की प्यासी

गई मैखाने से । मय उड़ी जाती है साकी तेरे पैमाने से ॥ फिक्र है दोस्त को अहवाल सुनाऊं क्योंकर । टुकड़े होता है कलेजा मेरे अफ़साने से ॥ गिर पड़ा हूं निगहे मस्त से चक्कर खाकर । साक़िया पहले उठा तू मुझे पैमाने से ॥ वही वहशत है वही खार वही वीराना । दहशत किस बात में अच्छा मेरे काशाने से ॥ सख्तियां खींचने की हो गई आदत दिल को । बुत चले आयें न खिंच कर कहीं बुतख़ाने से ॥ डर है तासीर न कर जाय किसी की फ़र्याद । कान भर लीजिये पहले मेरे अफ़साने से ॥ दिले बरबाद में आबाद हुए इश्क जनूं । कोई बस्ती नहीं बेहतर मेरे वीराने से ॥ शक्ल साबित नज़र आती नहीं अम्मामे की । शेख़ ने बदली है पगड़ी किसी मस्ताने से ॥ कर दिया साफ़ अलग दिल ने हमें उल्फ़त में । हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं बेगाने से ॥ जानशीं कैस के सब वहशि-ये सहरा होजायँ । दश्त आबाद न हो गर तेरे दीवाने से॥ निगहे मस्त तेरी गर है पड़ी दिल प मेरे । लग़विशे पा न सँभाली गई मस्ताने से ॥ उसकी बेदाद ने छोड़ी नहीं आलिम में जगह । नाले घबराये हुए फिरते हैं दीवाने से ॥ एक चुल्लू में बहुत दाग़ बहक उट्ठे थे । आज सुनते हैं निकाले गये मैखाने से ॥

मिसेज़ स्टील पियानो बजा कर अपने मेहमान को रिझाती रहीं और हमारे दोस्त गाते रहे । साढ़े बारह बजे तक जलसा रहा क़रीब एक बजे हमारे दोस्त रुखसत हुए, अपने मेज़बान के बहुत २ शुक्रगुज़ार थे और निहायत ही खुशी २ घर लौटे ।

हिदायतरसूल गाड़ी पर बाहर बैठे रहे और अपने आक़ा की वापसी का इन्तज़ार कर रहे थे ।

**हिदायतरसूल**—कहिये हुजूर कैसी निपटी ?

**अमीरहसन**—यार कुछ न पूछो वल्लाह दुनिया है और अंगरेज़ी सोहबत, ज़िन्दगी है और अंगरेज़ी फेशन, दीगर हेच, दीगर हेच, अब ज्यादः मुझसे इसवक्त बातें न करो मैं अपने आप में नहीं ।

**हिदायतरसूल**—खैर तो है क्या तौबा टूट गई ? ।

**अमीरहसन**—

अहद तो लाख किये पर न निबाही तौबा । मैं भी वह तौबाशिकन

हूँ कि इलाही तौबा ॥
इसका ज़िक्र न करो।

हिदायतरसूल—और हुजूर ने वह घड़ी मेमसाहब को देदी ?।

अमीरहसन—अरे तौबा! मैं बिलकुलही भूल गया घड़ी नहीं दी। यह देखो जेब में रक्खी है बतलाओ अब क्या सलाह है लौट के दे आऊँ ?।

हिदायतरसूल—नहीं कल्ह सवेरे चिट्ठी के साथ भेज दीजियेगा।

अमीरहसन—अच्छा सवेरे याद दिलाना। हिदायतरसूल कल्ह सवेरे एक खानसामां एक बावरची और दो ख़िदमतगार और अंगरेज़ी सरदार नौकर रक्खो, हम पुराना फैशन सब एक क़लम तर्क कर देंगे। ज़िन्दगी है और फैशन, दुनिया है और अंगरेज़ी सोहबत।

हिदायतरसूल—बहुत बेहतर खुदावन्द !।

अमीरहसन—मुझको हिन्दोस्तानी खानों से ऐसी नफ़रत हो गई है कि क़ोरमा पुलाव की सूरत से कै आती है।

हिदायतरसूल—खुदावन्द अंगरेज़ी खानों में लज़्ज़त ही ऐसी होती है कि जहां इन्सान ने एक दफ़ा खाया कि फिर उमरभर ज़बान चाटा करता है और ख़ास कर खुदावन्द टीन में बन्द हो कर जो मछलियां आती हैं।

अमीरहसन—तुम मुझे बनाते हो मछलियों में तो सख्त बिसाँहंद आती है मगर उनका खाना दाखिले-फैशन है।

हिदायतरसूल—मेरी मजाल है हुज़ूर को बनाऊं, फ़ैशनही के लिहाज से तो मैंने तारीफ़ की।

---

## बाब पांचवां।

### नज़ीरहसन की सलामतरवी।

नाज़रीन! थोड़ी देर के लिये हमारे फैशनेबुल दोस्त मिस्टर अमीरहसन को अलहदा छोड़ दीजिये देखिये उनके भाई सैयद नज़ीरहसन क्या कर रहे हैं। नज़ीरहसन को अपने वालिद माजद के इन्तकाल का बेहद ग़म था और जो इनक़लाब उनके इन्तक़ाल से हुआ और होनेवाला था वह उनकी नज़रों में घूम रहा था, दोही हफ्ते में अमीरहसन की बेहूदगी और बेपरवाही आशकारा होचली। या तो दोनों भाई हमेश: और हर जगह साथ रहते थे और या अब दो २ दिन नज़ीरहसन

को अमीरहसन की ज्यारत नसीब नहीं होती; जब नज़ीरहसन अपने भाई से शिकवा करते वो कोई न कोई जवाब देकर बात टाल जाते, नज़ीरहसन ने अपनी मां की अतायत पहिले से बहुत ज्यादा कर दी और यह मज़बूत इरादा कर लिया कि अपनी ज़िन्दगी मां की अतायत और भाई की मुहब्बत में बसर कर दूंगा। उनने पहले अपने वालिद नामदार के काग़ज़ात तलाश किये और उसमें वसीयतनामा पाया।

उनके बाप किसी के क़र्ज़दार न थे जो उसकी फिक्र होती, अलबत्ता अपनी मां के मशवरा से बाप के फ़ातिहः और दरूद के इन्तज़ाम में उनको बहुत सरगर्मी थी और उसके लिये कुल सामान मोहैया करना था; तजहीज़ व तकफ़ीन के अख़राजात सिर्फ़ ज़रूरीही नहीं बल्कि औलाद पर फ़र्ज़ भी हैं इस वजह से नज़ीरहसन का यह काम कोई फ़जूल या बेकार न था, मगर अमीरहसन को कुछ परवाह न थी, वो तो आज कल फैशन पर दिलदादः थे और वही काम करना चाहते थे जो डिक्शनरी आफ़ फैशन में दर्ज हो या जिसको फैशनदां हज़रात पसन्द करें। नज़ीरहसन इस फिक्र में थे कि किसी रोज़ अपने भाई से वसीयतनामे का ज़िक्र करें और उसके बाद जिस तौर पर राय करार पावे घरबार का इन्तज़ाम किया जाय; मगर एक मिनट भी अपने भाई को वो तनहा न पाते थे इस वजह से अब तक कोई बात तै न पाई। एक दिन नज़ीरहसन घर में अपनी मां के पास बैठे थे।

**मां**—बेटा क्या सबब है कि आज चार रोज़ से अमीरहसन घर में नहीं आते; पहले तो रात को घर में सोते थे अब वह भी मौकूफ़ कर दिया।

**नज़ीरहसन**—अम्माजान! मुझे खुद नहीं मालूम, मैंने अमीरहसन को परसों से नहीं देखा हर वक्त दोस्तों के साथ घूमा करते हैं।

**मां**—हां मैं देखती हूं कि अमीरहसन के रंग अब अच्छे नहीं मालूम होते। बाप के मरतेही खुल खेले, उस रोज़ मुमताज़बख़्श से लड़ते थे और कहते थे कि हिन्दुस्तानी औरतों में तमीज़ और लियाकत नहीं होती। बेटा! क्या होनेवाला है, मेरे होश उड़े जाते हैं, आखिर अल्लाह रक्खे, यह घर कैसे चलेगा?।

**नज़ीरहसन**—अम्मां! आप तरद्दुद न करें मैं हमेशः आप की और भावज साहबा की रज़ाजोई को तयार हूं।

**मां**—हां यह मैं जानती हूं लेकिन मुझे अमीरहसन के रंग दूसरे दिखाई देते हैं; या अल्ला मेरे बच्चे को बुरी सोहबत से बचाना।

**नज़ीरहसन**—सोहबत तो आज कल अमीरहसन की वाक़ई में अच्छी नहीं है लेकिन वो मोम की नांक नहीं हैं कि जिधर कोई घुमाये घूम जायेंगे यह भी चन्दरोज़ा शौक है जब नई सोहबत से जी भर जायगा सब बेफ़िकरे निकाल बाहर किये जायेंगे। इतने में मिस्टर अमीरहसन ड्रेल कंपनी की दूकान का एक अंगरेज़ी जोड़ा पहिने चुरट मुंह में लगाये हुए आ मौजूद हुए।

**नज़ीरहसन**—आहा! अमीरहसन! आजकल भाई कहां रहते हो, दिखाई नहीं देते।

**अमीरहसन**—आप कोई मेरे अतालीक तो हैं नहीं, जहां हमारे जी में आता है रहते हैं और जहां हमारे जी में आयेगा रहेंगे।

**मां**—हां बेटा! कैसी बातें कर रहे हो? तुम्हें क्या होगया है, खैर तो है?।

**अमीरहसन**—बस अम्मां! आप अपनी नसीहतबाज़ी रहने दीजिये मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूं अपना नफ़ा व नुकसान खूब समझता हूं। अब्बाजान की जिन्दगी में मैंने कुछ कम तकलीफ नहीं उठाई जो उनके मरने के बाद भी मियां नज़ीरहसन की मुहताजी गवारा कर सकूं।

**मां**—(रोकर) अरे यह नाशुक्रगुज़ारी! यह एहसान-फ़रामोशी! मेरे मालिक ने अपने बच्चों से ऐसा सलूक नहीं किया जो उमर भर वो फ़रामोश करने के लायक हो। अरे यह नालायकी! देखो तुमको शाहज़ादों की तरह पाला! अमीरों की तरह तालीम दिलाई! और क्या चाहते थे!।

**अमीरहसन**—अच्छा शाहज़ादे इसी तरह रहते हैं जैसे हम लोग रहते थे! पन्दरह रुपये माहवारी उसी में सब कुछ, यही शाहज़ादों के वज़ीफ़े हुआ करते हैं! खैर इससे कुछ मतलब नहीं उनका इन्तज़ाम उनके साथ गया अब अगर कोई चाहे कि अमीरहसन उसी तरह टके गज़ की चाल चलें तो गैर मुमकिन है! अम्मां आप हों या न-

ज़ीरहसन जिसको सुनना हो सुन ले मैं साफ कहे देता हूं, मुझसे किसी की मुहताजी या नाज़बर्दारी नहीं हो सकती और न मैं एक दिन इस घर में रहना चाहता हूं।

मां—(रोकर) मेरे बच्चे! मुझसे क्या खता हुई जो रूठेजाते हो? आखिर इस घर ने क्या बिगाड़ा है?।

नज़ीरहसन—भाई अगर मुझ से कोई खता हुई हो माफ़ करना और साफ़ २ बतलाओ मैं माफ़ी मांगूं, मैं तो हरतरह तुम्हारा जांनिसार भाई हूं आख़िर तुम इस घर में न रहोगे तो कौन रहेगा।

अमीरहसन—कोई रहे मेरी पापाश से! अपको यह महल, यह तोशकखाना, यह साज़ व सामान मुबारक रहे। हां ज़रा साफ़ साफ़ मुझसे बतला दीजिये कि अब्बाजान ने किसक़द्र जायदाद छोड़ी और इसमें मेरा क्या हिस्सा है? पस मैं और कुछ नहीं सुना चाहता।

नज़ीरहसन—भाई मैं खुद आज तीन रोज़ से इसी फ़िक्र में था कि तुम को तनहा पाऊँ और कुल काग़ज़ात दिखलाऊँ लेकिन मौक़ा ही न मिला इस देर में मेरा कुछ क़सूर नहीं।

अमीरहसन—ख़ैर अब फ़रमाइये, देर सवेर से कुछ नुक़सान नहीं बशर्ते कि गड़बड़ न हो गया हो।

नज़ीरहसन—क्या तुम समझते हो कि मैं बेईमान हूँ या खुदानख्वास्ता रुपये को तुम्हारी मुहब्बत से ज्यादा अज़ीज़ रखता हूँ? अमीरहसन। खुदा जाने तुम किन किन सोहबतों में रहे हो जो अपने भाई की मुहब्बत और अपने जांनिसार भाईका एतबार तुम्हारे दिल से जाता रहा।

अमीरहसन—यह सब ज़बानी जमा [illegible] मैं फिर सुन्ता रहूँगा और काग़ज़ात भी फिर देखूंगा इस वक़्त ज़बानी साफ़ साफ़ अलफ़ाज़ में यह बतला दो कि अब्बाजान ने क्या जायदाद छोड़ी और उसमें मुझे किस क़द्र पाना है?।

नज़ीरहसन—अब्बाजान के वसीयतनामे की रू से मालूम होता है कि ८००००) अस्सी हज़ार नक्द तो अपर इण्डिया बैङ्क में जमा है और मुहम्मदपूर की ज़मींदारी है जिसमें २००) दो सौ रुपये माहवारी की आमदनी है। गावँ अब्बाजान घर के मसारिफ़ के लिये दे गये हैं उसके इस्तेअमाल या फ़-

दौलत का मुझे तुम्हें या किसीको इख़्तियार नहीं । उसकी आमदनी अम्माजान को मिलेगी और बाद उनके जो इस ख़ान्दान में सब से सिनरसीदः औरत हो वह मालिक होगी और हां इसी आमदनी से एक हाफ़िज़-क़ुरान उनकी क़ब्र पर हमेशा मुक़र्रर रहेगा ।

**अमीरहसन**—क़ुरआनख्वां रहेगा और हदीसख्वानी होगी और मदरसा होगा इन वाहियात बातों से मुझे क्या तअल्लुक़ ! बतलाओ कि मुझ बदनसीब को भी कुछ मिलनेवाला है या नहीं ?।

**नज़ीरहसन**—जो अस्सी हज़ार रुपया बैङ्क में है उसमें निस्फ़ आपका है मगर जो इख़राजात अब्बाजान के फ़ातिहे वग़ैरह में हो रहे हैं वह सब इसमें से होंगे क्योंकि उसके अलावा और कोई रुपया नहीं है ।

**अमीरहसन** — सुनिये भाई साहब मैं आपकी हरकतों से वाक़िफ़ होचुका हूँ मैं एक पैसा फ़ातहे दरूद के लिये या किसी घरके काम के लिये नहीं देने का। आप जानें और घरबार जाने, चाहे इस वक़्त कुल घर में आग लगादो मुझे एक ज़र्रा बराबर परवाह नहीं मेरे चालीस हज़ार रुपये का इसी वक़्त बैङ्क के नाम चेक लिख दीजिये मैं अपना हिसाब अलग रक्खूंगा ।

**मां**—बेटा, तुमको क्या होगया है ? ख़ुदा इस घर को रहती दुनिया तक क़ायम रक्खे, तुम इसको ख़ुदा न करे आग पर धरते हो, बाप के फ़ातिहे दरूद से ऐसी नफ़रत ! हाय ! अगर वह मर न जाते तो आज यह बातें काहे को मैं सुनती !।

**नज़ीरहसन** - आप चालीस हज़ार नहीं कुल रुपया ले लीजिये मुझे ख़ुदा बहुत दे रहेगा, अब आप ख़ुश हैं ? अब्बाजान के फ़ातिहे वग़ैरः के कुल इख़राजात सब मैं अपने ज़िम्मे लेता हूँ आप एक पैसा न दीजिये बस मुझे रुपये की परवाह नहीं, तुम्हारी परवाह है ।

**अमीरहसन**—मैं आपका मुहताज नहीं और न ख़ैरात लेना चाहता हूँ आपका रुपया आपको मुबारक रहे लेकिन अब्बाजान के फ़ातिहे में मुझसे शिरकत ग़ैरमुमकिन है । फ़ातिहे वग़ैरः सब पुराने फ़ैशन की बातें हैं और शाइस्ता लोग ऐसे लग़वियात पसन्द नहीं कर सकते ।

**नज़ीरहसन**—अमीरहसन ! शाइस्तगी और फ़ैशन यह दो लफ़्ज़ तुम्हा-

रे मुँह पर आजकल बहुत जारी हैं, लेकिन यह याद रक्खो कि दुनियवी कामों में ये अलफ़ाज़ चाहे खुश आयन्द हों मगर मज़हबी उमूर में सख्त मुज़िर हैं ।

**अमीरहसन** – मुझे अब मालूम हुआ कि हिन्दुओं का मसला तनासुख़ अरवाह ग़लत नहीं । अब्बाजान मरगये लेकिन अपनी रूह तुम मे हलूल कर गये ।

**नज़ीरहसन**—देखो मैं तुम्हारी सब बातें अंगेज़ करूंगा लेकिन वालिद मर्हूम के साथ कोई गुस्ताखी बर्दाश्त नहीं कर सकता । तुम को शर्म नहीं आती कि अब्बाजान के मरने का तज़किरा मसखरेपन के साथ करते हो-अमीरहसन इतना जल्द अब्बाजान को न भूलो और याद रक्खो कि क्या२ अहसानात अपनी औलाद के साथ उन्होंने किये ।

**अमीरहसन** - मैं फिर कहता हूं कि अब्बाजान ने मेरे साथ कोई अहसान नहीं किया, जोकुछ किया होगा तुम्हारे साथ किया होगा—मैं उनकी जिन्दगी भर सख्त परेशान रहा सख्त आजिज़ रहा - जिन्दह दर गोर रहा - और कैदी से बदतर रहा और किस्सह मुख़्तसर ऐसा परेशान रहा के हर रोज़ दोआ करता था कि किस दिन वो मरें और मुझको कैद से रेहाई हो । बारे खुदा ने सुन ली और इतनी जलदी रेहाई दी कि जिसकी उम्मेद न थी ।

**नज़ीरहसन** — बस २ अब मैं नहीं सुन सकता, मैं उठा जाता हूं ।

नज़ीरहसन बाहर चले गये और बिचारी सिकन्दर बेगम भी रोती२ बेहोश हो गई । अमीरहसन भी बंक से नाम चेक लिये हुये बाहर तशरीफ ले गये-सिकन्दर बेगम के जब ज़रा होश दुरुस्त हुये उन्हों ने फौरन् नज़ीरहसन को बुलाया ।

**बेगम**—क्यों बेटा ! क्या होने वाला है-अमीरहसन के तेवर अच्छे न थे आखिर इस घर बार को कौन सँभालेगा?।

**नज़ीरहसन** — अम्मां आप ज़रा न घबरायें मैं आप की अतायत के लिये मौजूद हूं । अमीरहसन का जनून बहुत दिन नहीं रहेगा इसलिये कुछ तरद्दुद की बात नहीं-

**बेगम** — क्या सच मुच अमीरहसन अब तुम से जुदा हो जायेंगे मुझे बड़ा डर यह है कि अमीरहसन बुरी सोहबत में बैठकर अपने को खराब न करे ।

**नज़ीरहसन** — अम्मांजान ! उनके अलग होने की मुझे कुछ परवाह नहीं मैं जिसतरह दिलसे उन्हे पहिले चाहता था अबभी चाहता हूं और हमेशा चाहता रहूंगा । उनकी बेहूदनाई और बेहूदगी से मेरी मुहब्बत कम नहीं हो सकती अलबत्ता मुझे रंज इस बात का है कि तमाम शहर में अमीरहसन की बदनामी अभी से फैल चली, उन के बेफिकरे मुसाहब हर तरह खराबी के दर पै हैं । मैं अभी सुने चला आ रहा हूं कि किसी मेम से अमीरहसन की दोस्ती पैदा हुई है और एक अङ्गरेजी दूकान से हज़ारों रुपये की चीजें खरीद लाये हैं ; खुद हैरान हूं कि इसका नतीजा क्या होगा ।

**बेगम** — मैंने सुना चार रोज़ से वो अपनी बीबी से खफा हैं; मालूम नहीं क्या सबब है ? ।

**नज़ीरहसन**—सबब और कुछ नहीं, बुरी सोहबत का असर है । अमीरहसन हमेशा से आप जान्ती हैं ज़िद्दी और जल्दबाज़ हैं जिधर बदमाशों ने उन्हे लगा दिया अन्धों की तरह उसी तरफके हो रहे । अम्माजान!आप घबरायें नहीं मैं इनशाअल्ला जल्द उनको राहरास्त पर लाता हूं ।

**बेगम**—और तुम्हारे बाप के फातिहे का क्या होगा ? मेरा जो ज़ेवर है तुम ले जावो उसीसे सब इन्तज़ाम करदो ।

**नज़ीरहसन** — अम्मांजान!आप इस तरह मुतरद्दुद नहीं मैं कुल इखराजात अपने जिम्मे लूंगा आपके ज़ेवरों की कुछ एहतयाज नहीं । अलकिस्सा सैयद नज़ीरहसन ने अपने हिस्से में से दस हजार रुपैया खर्च करके अपने वालिद नामदार का फातिहा निहायत शान व शौकतसे किया और अपने कुल अखराजात जरूरी में तखफीफ करदी । नौकर चाकर जितने बेकार थे अलहदा कर दिये, गाड़ी घोड़ा जिसकी कुछ ज़रूरत न थी और अमीरहसन भी उनके ख्वाहां न थे निकाल डाले कुल अखराजात खानादारी का एक उम्दा तखमीना करके उसके आमदनी का बजट तैयार कर लिया और खुद दिन रात वकालत की तैयारी इम्तिहान में मसरूफ रहते थे । एक दिन उसी अशना में शेर खां कोतवाल सैयद नजीरहसन से मिलने तशरीफ लाए ।

**शेर खां** — सैयद साहब आप के वालिद माजद से और मुझसे बहुत

कदीम मरासम थे मुझे उनके नाम की तौकीर वैसे ही मंजूर है जो उनकी जिन्दगी में थी।

. नज़ीरहसन—मैं आप की इनायत का निहायत शुक्रगुजार हूं बेशक अ-ल्ला जान के अकसर दोस्त हैं जो उनके इन्तकाल के बाद भी पूरा २ ख्याल र-खते हैं।

शेर खां — लेकिन मुझे बड़ा अफ़-सोस है कि सैयद अमीरहसन बाप दादा का नाम जरुद डुबोया चाहते हैं वो २ हालात मैंने सुने हैं कि दिल दुखा जाता है।

नज़ीरहसन—किसी ने अदावत से अमीरहसन की बुराई आप से बयान की होगी वरना कोई हालत खुदा न-ख्वास्ता उनकी बुरी न थी।

शेर खां—जनाब! आप अभी साहब-ज़ादे हैं दाई से पेट नहीं छिपता। कोतवाल-शहर होकर कुल हालात से मुझे इत्तला न हो तो मेरी कोतवाली ही फ़जूल है मैंने तहकीक सुना है कि आपके भाई साहब ने शराबवाली फि-रङ्गिन से जिसका नाम शायद इस्टील है बहुत रसम पैदा किया है, दिन रात वहीं रहते हैं जिस कदर रुपैया वो आज कल फूंक रहे हैं उसको देखते हुये मालूम होता है कि महीने डेढ़ महीने में इस घर की ईंटें तक नीलाम हो जांयगीं।

नज़ीरहसन—खुदा नख्वास्ता ऐसा कलमा अपने मुंह से आप न निकालें।

शेर खां—चे खुश, बेटा तुम्हारी खा-तिर से एक मैं कौन हूं लेकिन ज़माने की ज़बान कौन रोक सक्ता है? वो २ कि-स्से शहर में मशहूर हैं कि कान नहीं दिये जाते, सुना एक रोज ह्वेल की दू-कान पर गये थे, वो मलऊन हिदायत-रसूल भी हमराह था तीस हज़ार का सौदा चन्द मिनट में खरीद कर के चले आये। आप यह भी नहीं समझे जब यह हालत हो वह घर क्योंकर रह सक्ता है?

नज़ीरहसन—क्यों जनाब इस हि-दायत रसूल के कुछ पिछले हालात भी आपको मालूम हैं?।

शेर खां — उसके हालात पोशीदा नहीं लेकिन मुझे इस वक्त बयान करने की ज़रूरत भी नहीं, तुम खुद जान जाओगे; अपने जान की हिफ़ाज़त मुक-द्दम रखना इससे ज्यादा मैं कुछ कहना नहीं चाहता—इसलइमकान अमीर हसन को सँभालो और उनके हालात

दुरुस्त करने की कोशिश करो अगर इसलाह हो जाय। वरना दूसरा इन्तज़ाम करना चाहिये जिसमें इस बने बनाये घर में कोई आफ़त न आवे— मैं दिल से तुम्हारा और तुम्हारे घर का खैरख्वाह हूं मेरे लायक जो काम हो बसरो चश्म बजाऊंगा।

नज़ीरहसन — मैं आप का फिर शुक्रिया अदा करता हूं लेकिन आप याद रक्खें मैं अमीरहसन का दिलोजान से फ़िदा होनेवाला भाई हूं उनके कोई अफ़आल मेरे दिल को उनकी तर्फ़ से नहीं फेर सकते।

शेरखां—खुद आप अपने पर और अपने भाई पर रहम करें अब मुझे ज़्यादा मौका बैठने का नहीं है, मैं रुखसत होता हूं।

---

## बाब छठवां।

### अमीरहसन की नई हालत ॥

इधर तो नज़ीरहसन पैसे२ की किफ़ायत कर के अपने रोज़मर्रा के मसारिफ़ घटा रहे थे और उधर अमीरहसन पर जेंटिलमैनी सवार थी। मीसेज़ स्टील की दावत खा कर उन्हे फैशन और जेंटिलमैनी का इस दर्जा ग़ल्बा हुआ कि तमाम दुनिया उनकी आंखों में जो अंगरेज़ी फैशन के मुताबिक न हो ज़लील मालूम होती थी। नौकर चाकर एक दम से अङ्गरेज़ी मुकर्रर हो गये- खाने पीने का सामान बिलकुल फैशन के मुताबिक अङ्गरेज़ी हो गया; कूरमा पुलाव साहब बहादुर को बदमज़ा मालूम होने लगा। सार्डिन मछली और अंचिनी केक का शौक इतना पैदा हुआ कि टीन में बन्द चीज़ देखते ही राल टपकी पड़ती थी। इनायतअली और हिदायतरसूल की सोहबत की वजह से भले आदमियों ने अमीरहसन का मिलना करीब २ तर्क कर दिया था। दावत के दूसरेही दिन सोने वाली घड़ी मीसेज़ स्टील को तोहफ़ा में दी गई और व शुक्रगुज़ारी तमाम मक़बूल हुई। मिस्टर अमीरहसन की आमदरफ्त रोज़ बरोज़ मेम साहब के यहां तरक्की पर थी। दिनरात वहीं रहने सहने लगे सिर्फ़ बराये नाम दिन को खाना खाने को और रात को सो रहने को घर आते थे, वरना मय मुसाहबों के मेम साहब के यहां हँसी खेल में दिन काटते थे।

ईस्ट कम्पनी के यहां से जो सौदा

खरीदा था उसके इलावा भी बहुत चीजें मेरे कम्पनी और ऊलासहाय कम्पनी की दूकान से खरीदी गईं।

खरीददारी के वक्त दाम पूछना या कीमत तै करना फैशन के खिलाफ़ था इस वजह से मिस्टर अमीरहसन यह भी नहीं जान्ते थे कि उन पर किस दर्जा कर्ज का बार बढ़ता जाता है। गो रुपया मौजूद था मगर सैयद साहब ने एक पैसा किसी दूकान्दार को नहीं दिया और सब चीजें कर्ज खरीदीं क्योंकि सौदागरों के यहां से कर्ज़ खरीदारी भी दाखिले-फैशन है — एक रोज मीसेज़ स्टील के यहां सिपहर को सब लोग जमा थे।

हिदायतरसूल— मेम साहब ! हमारे हजूर ने भी आपकी सोहबत में ऐसी तरक्की की है कि माशा अल्ला ! अब अंगरेजों से भी बढ़े हुये सामान हर किस्म के मौजूद हैं।

अमीरहसन — तुम भी क्या आदमी हो ! मेरे सामान की तारीफ मेम साहबा के सामने करना मुझे ज़लील करना है। अलबत्ता यह ज़रूर है कि रोज़ मर्रह के आराम के मुताबिक कुल चीजें मेरे यहां मुहैया हो गई हैं और अब मुझे किसी जेंटिलमैन को अपने घर बुलाते पशोपेश नहीं।

इनायतअली — हजूर का सामान देख२कर मियां नज़ीरहसन सख्त मुतअज्जिब होते हैं; परसों मुझसे पूछते थे कि चीनी के बर्तन कहां से आये ? मैंने ह्वेल कम्पनी का नाम लिया; सुन्तेही एक आह सर्द भरी और खामोश हो रहे।

हिदायतरसूल — हजूर, वो यह समझते हैं कि हम लोग हजूर के दुश्मनों को लूटे लेते हैं; उनका बस चले तो हम लोग शहर बदर करा दिये जावें।

अमीरहसन— नज़ीरहसन की सख्त हिमाकत है कि तुमसे खार खाते हैं। बात यह है कि नज़ीरहसन हमेशा से बखील और ज़ुज़रस हैं उन्हें किसी का खर्च करना गवारा नहीं होता।

मिसेज़ स्टील — किफायतशारी तो बुरी चीज़ नहीं है मगर इन्सान को अपने मर्तबा के मुआफ़िक खर्च करना भी ज़रूरी है। नज़ीरहसन शायद सेल्फ रेसपेक्ट कायम रखना नहीं चाहते; हालां के दुनिया में उसकी ज़िन्दगी बेकार है जिसकी इज़्ज़त नहीं।

हिदायतरसूल—खुदावन्द यह बात

नहीं, मियां नजीरहसन साहब चाहते हैं कि हमारे सरकार उनके दस्तनिगर रहैं, जो वो हाथ उठाकरदें लेलेवें खुद बगैर उनकी इजाज़त के एक पैसा खर्च न करें; हमारे सरकार अगर यह गवारा करें तो देखिये नज़ीरहसन कितना खुश रहते हैं।

अमीरहसन—अजी मैं इन सब किस्सों का अनक़रीब खातमा किये देता हूं, बङ्क का रुपैया मैं अपने हिस्से का ले चुका, मेरा इरादा है कि उसको किसी उम्द: तिजारत में लगा कर खुद नौकरी के वास्ते इटावा जाऊँ मिस्टर मार्वेल मेरे दोस्त हैं मुझे उमेद है कि उनके ज़रिये से अच्छी नौकरी मिल जावेगी।

मिस्टर होल—आपकी राय निहायत उम्दा है, मैं समझती हूं कि आज कल जितना फायदा आरे की मशीन याने कल में होता है दूसरी तिजारत में नहीं होता, नौकरी करना आपके लिये मेरे नज़दीक नामुनासिब है। अगर आप एक कल खरीद करके कायम कर दें, मैं समझती हूं आपको घर बैठे हज़ार बारह सौ रुपये माहवारी की आमदनी हो आयगी, आप खुदमुख़तारी से बसर करेंगे और हम आप जुदा भी न होंगे।

अमीरहसन—लेकिन कल का इन्तज़ाम करना निहायत दुशवार है मुझसे दर्दसरी नहीं हो सकती।

हिदायतरसूल—खुदावन्द हमलोग ऐसे नाकारा और कमहिम्मत नहीं हैं जितना हज़ूर तसौव्वर फर्माते हैं, आप कल मँगवाइये देखिये किस कल ऊंट बैठता है।

मिस्टर होल—मिस्टर हसन! आप को इन्तज़ाम में तकलीफ न होगी, मैं एक अँगरेज़ो मनेजर नौकर रख दूंगी और कलकत्ते से खुद जाकर असबाब खरीद लाऊंगी।

अमीरहसन—मेम साहब! आप शायद जानती हैं कि मेरे पास बहुत दौलत है मैंने अपने भाई से अलेहदगी अख्तियार कर ली है, नज़ीरहसन ने वालिद मरहूम की वसीयत के बमूजिब मुझे निस्फ रुपैया दे दिया इसके सिवाय मुझे और कुछ उमेद नहीं।

मिसेज़ होल—आप का हिस्सा किस क़द्र निकला?।

अमीरहसन—चालीस हज़ार।

हिदायतर॰ व इनायतअ॰—बस!

**मिसेज़ ह्वील**—ग़ैर मुम्किन ! यह तायदाद बहुत थोड़ी है मैं बखूबी जानती हूं कि आपके वालिद के पास लाखों रुपये थे मालूम होता है कि आप के भाई ने आपको लूट लिया।

**हिदायतरसूल**— हमारे सरकार रुपये को मिट्टी समझते हैं कोई दूसरा होता तो कौड़ी २ का हिसाब समझ कर अपना रुपैया अलहदा कर लेता। ग़ज़ब खुदा का, राजा के घर मोतियों का काल ! इतना बड़ा घर और उसमें सरकार को सिर्फ चालीस हजार ! ।

**इनायतअली**— ।

बड़ा शोर सुन्ते थे पहलू में दिल का। जो चीरा तो एक क़तरये खूं न निकला ॥ वाह उस्ताद चालीस हज़ार ! हूं ! ।

**अमीरहसन**—नज़ीरहसन ने यही तादाद बतलाई, बल्कि उसमें अखिराजात फ़ातिहः भी मुझसे मांगते थे मैंने वह नहीं दिये, नज़ीरहसन ने अपने ज़िम्मे ले लिये।

**मिसेज़ ह्वील**—अमीरहसन वाक़ई तुम बड़े नेकख्याल और सीधे आदमी हो, रुपये के मुकाबले में ईमान कायम रखना बहुत मुश्किल होता है, तुमको चाहिये कि कुल हिसाब व किताब बग़ौर जांचो और जो तुम्हारा हिस्सा हो अलग कर लो, तुम्हारे भाई ने तुमको धोखा दिया, क्या तुम्हारे मुअज़्ज़िज़ वालिद के पास सिवाय नक़्द रुपये के और कोई जायदाद न थी ? क्या तुम्हारे घर में जवाहरात और कीमती बर्तन न होंगे ? इन सब चीजों में तुम्हारा बराबर का हिस्सा है।

**हिदायतरसूल**—अगर सिर्फ़ जवाहरात में आपका पूरा हिस्सा मिले तो हज़ारहां रुपये की जायदाद है। देखिये वक़्त हाथ से न जाने दीजिये पीछे को पछताइयेगा, मियां नज़ीरहसन साहब अपना पूरा इन्तज़ाम कर चुके और कर रहे हैं, घोड़ा गाड़ी सब फ़रोख्त कर डाली, खुफ़िया तौर पर और भी असबाब जुदा किये डालते हैं, जब सब बिक बिका जायगा उस वक़्त आप उनका क्या करेंगे ? ।

**इनायतअली**—अफ़सोस यह है कि हजूर को इन बातों पर तवज्जह नहीं वरना कौड़ी २ का हिसाब भाईसाहब को देना पड़ता और मालूम होता कि पराया रुपया हज़म करना आसान बात नहीं है, अगर हजूर का इरादा

मुताबिक राय मेम साहब के तिजारत का है तो मेरी राय में जिस कद्र रुपया मिल सके हासिल कीजिये क्योंकि तिजारत का दारमदार रुपये पर है, हुजूर के पास जिस कद्र रुपया है वह हर्गिज़ ऐसे बड़े काम के लिये काफ़ी न होगा।

मिसेज़ होल—चालीस हज़ार रुपया सा मिल (Saw Mill) के कायम करने को बहुत काफ़ी है, आगरे में कोई ऐसा कारखाना नहीं है और रेलवे को हररोज़ तख्ता और लकड़ियों की ज़रूरत लगी रहती है, इसके सिवाय इञ्जीनियरी महकमे में और तमाम सर्कारी कारखानों में लकड़ी की ज़रूरत हमेशा रहती है, आपका कारखाना अगर हो जावेगा तो उसके सिवा दूसरी जगह कोई एक टुकड़ा भी लकड़ी न खरीदेगा

हिदायतरसूल—और शहर के सब बढ़ई, मिस्तरी, डंडा बजाते घूमेंगे !।

मिसेज़ होल—डंडा बजाते क्यों घूमेंगे उनमें से जो लायक और अच्छे हों वे उसी कारखाने में नौकर रख लिये जायँगे, अमीरहसन ! तुम चुप और उदास क्यों हो ?।

अमीरहसन—मैं इस वक्त सोच रहा था कि नजीरहसन से अपना मामला क्योंकर साफ़ करूं, मुझमें न इतनी लियाक़त है और न जुर्रत कि दूबदू नजीरहसन से बातचीत करूं और अलावा इसके मैं इन सब बातों में बहुत बामुरौव्वत हूं वह मुझसे कह देंगे मैं इनकार न कर सकूंगा, आंखों के सामने मुझसे बेमुरौव्वती नहीं हो सकती।

मिसेज़ होल—वाह क्या अच्छी मुरौव्वत है, एक भाई तो सब रुपया हज़म करने को तैयार और दूसरे भाई मुरौव्वत के आर्ज़ः में बीमार, फिर भला क्योंकर मामला तय हो सकता है। मिस्टर हसन ! मालूम होता है तुम्हारा दिल कमज़ोर है, मुरौव्वत और कोई चीज़ नहीं, दिल की कमज़ोरी को हम लोग मुरौव्वत कहते हैं, इन्सान को अपने फ़ायदे की तरफ़ ग़ौर करना चाहिये। हां अगर आपके पास लाखों रुपये मौजूद होते तो मैं कभी सलाह न देती कि चन्द हज़ार के लिये अपने भाई से बिगाड़ करो, मगर जब आप खुद खुदानख्वास्ता तंगहाल हैं तो सिवाय इसके कि जिस तरह मुमकिन हो अपनी हैसियत दुरुस्त करो और कोई सलाह मैं नहीं दे सकती।

अमीरहसन—फिर क्या कियाजाय

को बतलाइये मैं उसके मुताबिक कार-बन्द हूं।

मिसेज़ स्टोल—मेरी यह राय है कि आप खुद इस वक्त जाइये और इसब ज़ेल सवालों का जवाब अपने भाई से हासिल कीजिये।

( १ ) आपके वालिद ने बङ्क में किस क़द्र रुपया छोड़ा और मय सूद उसकी मीज़ान क्या हुई ?।

( २ ) इलावा बङ्क के, तहवील में किस क़द्र रुपया था?वह क्या हुआ ?।

( ३ ) घोड़ा, गाड़ी, फर्निचर किस कीमत का था और क्या हुआ?और दुशाले और कपड़े किस कीमत के थे और क्या हुए ?।

( ४ ) इलावा बाहरी कारखाने के लेडियों के पास किस क़द्र ज़ेवर और असबाब है और उसकी क्या कीमत है?।

( ५ ) तारीख़ वफ़ात तक की पेन्शिन किसने वसूल की और किस क़द्र थी?।

( ६ ) सवालात नम्बर १ लगायत ५ के जवाबात हासिल करने के बाद निस्फ हिस्सा तुम्हारा याफ़तनी मालूम हो जायगा उसमें से चालीस हज़ार रुपया मुजरा देकर तुमको और किस क़द्र मिलना चाहिये, अगर तुम खुद इसका जवाब हासिल करने में पसोपेश करते हो तो मुझको और हिदायतरसूल को भेज दो, तुम्हारे लिये हम लोग इस क़द्र तकलीफ गवारा करेंगे और कल मामला तय कर लावेंगे। इस वक्त तो बेमौका है कल सवेरे मैं चली आऊंगी और दूध का दूध और पानी का पानी अलग कर लाऊंगी।

हिदायतरसूल—बेशक इससे बेहतर कोई तदबीर नहीं हो सकती, मैं बसरो चश्म इस ख़िदमत के अंजाम देने को तैयार हूं।

अमीरहसन—मिसेज़ स्टोल!मैं आप का किस तरह शुक्रिया अदा करूं, खुदावन्द करीम आपको इसकी एवज़ ख़ैर दे, मैं भी समझता हूं कि आपसे ज्यादा लायक इस खिदमत के अंजाम देने के वास्ते कोई दूसरा शख्स नहीं हो सकता। हिदायतरसूल आप के हमराह होंगे और आपही जाकर भाई साहब से मिलिये और इस मामले को तय कर लाइये,। बेशक भाई साहब आपको देख कर पहिले घबरायेंगे और मुतअजिब होंगे लेकिन मैं उम्मेद करता हूं कि आपके आने से सब अमूर आसानी से हो जायेंगे।

## बाब सातवां।

### लड़कपन की ग़लती ।

अब तक मिसेज़ ह्वील मय हिदायत रसूल अपने ज़िम्मादार मिशन पर रवाना हों हों हमारे दोस्त मिस्टर अमीरहसन को एक अजीब बेचैनी थी। मिसेज़ ह्वील के सवालात को देखते हुए मालूम होता था कि लाखों रुपये की जायदाद नज़ीरहसन हज़म कर गये और उस सब में निस्फ़ हिस्सा अमीरहसन को मिलना चाहिये, अमीरहसन अपने दिल में बहुतही खुश थे, उनकी खुशी सिर्फ़ इस वजह से न थी कि कुछ और रुपये मिलने की उम्मेद है, बल्कि मिसेज़ ह्वील की हमदर्दी और खैरख्वाही के यकीन पर उनको बेहद खुशी थी, अपने दिलही दिल में वो सोचते थे कि आखिर इस ग़ैरमज़हब, ग़ैरक़ौम, ग़ैरमुल्क की औरत को उनके साथ हमदर्दी क्यों है, उसको उनकी खुशी से खुशी और उनके रंज से रंज क्यों पैदा होता है, आखिर इस औरत को खुदबखुद उनके साथ दिलचस्पी की क्या वजह है । रुपये का उसको लालच नहीं, वह खुद अमीर है, इज़्ज़त की वो भूखी नहीं खुद मौअज़्ज़िज़ है, फिर क्या है और क्या इसरार है। वो अपने आप ही सवाल करते थे कि तुम खुद बार २ मिसेज़ ह्वील के पास क्यों जाते हो, तुमको सिवा उसकी सुहब्बत के दूसरी जगह चैन क्यों नहीं पड़ता, सिवा उसकी बात के दूसरे की गुफ्तगू क्यों भली नहीं मालूम होती। आखिर उन भूरी २ और बड़ी २ आंखों और और सुर्ख़ २ बालों में क्या ऐसा जादू है जो कुल दुनियां तुम्हारी आंखों में नाचीज़ होगई। इसका कोई जवाब ज़ेहन में न आता था बार २ सोचते और फिर यह शेर पढ़ कर चुप हो रहते।

दिले नादान तुझे हुआ क्या है।
आखिर इस दर्द की दवा क्या है॥

उस रोज़ मिसेज़ ह्वील के यहां से अमीरहसन सवेरे लौटे, मिसेज़ ह्वील को कहीं बाहर जाना था, हिदायतरसूल और इनायतअली भी अपने आका के साथ थे, सब लोग नये सजे हुए कमरे में बैठे इधर उधर की बातें कर रहे थे।

हिदायतरसूल—आज हुज़ूर कुछ उदास मालूम होते, हैं इसका, क्या सबब है ? ।

**अमीरहसन** — कुछ नहीं दिल कुछ आपही आप बैठा जाता है।

**हिदायतरसूल** — आज कई रोज से हुजूर घर में भी तशरीफ नहीं ले गये डिनर तनावुल फरमाकर हुजूर घर में तशरीफ ले जावें।

**अमीरहसन** — अजी अभी तो डिनरमें बहुत अर्सा है-आज खाना खाने को जी नहीं चाहता।

**हिदायतरसूल** — हुजूर हम जांनिसारों से कोई बात न छिपाया कीजिये—वल्ला! जब हुजूर को उदास देखता हूं दिल बेचैन हो जाता है। आखिर मैं भी तो सुनूं इस रंज का क्या सबब है— मियां नजीरहसन साहब के मामलात का कुछ हुजूर तरद्दुद न फर्मावें खुदा चाहे तो कल सब बातें तै हो जायेंगी।

**अमीरहसन** — नहीं उसका तो मुझे ख्याल भी नहीं—हिदायतरसूल! मैं तुमसे एक बात पूछूं सच २ जवाब दो।

**हिदायतरसूल** — हुजूर को मेरी सदाकत में कुछ ताम्मुल है? भला ऐसा सवाल करना हुजूर को मुनासिब है?

**अमीरहसन** — अच्छा खफ़ा न हो बतलाओ मिसेज़ स्टील कौन शख्स है? और उसके हालात तुम्हें जो मालूम हों मुझसे मुफस्सल ब्यान करो।

**हिदायतरसूल** — हुजूर ने तो इस वक्त कमालही किया - यह हर वक्तका खला मला, यह गर्म सोहबतें, यह रब्त व मुहब्बत और फिर हुजूर मुझ से पूछते हैं कि 'ज़लेखा ज़न बूद या मर्दहा'

**अमीरहसन**—हिदायतरसूल! इस वक्त बातें न बनावो यह मैं अच्छीतरह जान्ता हूं कि वो यूरोपियन लेडी है तालीमयाफ़्ता है - हसीन है - अहल दौलत है - मुअज़्ज़िज़ है - लेकिन इस के इलावा जो हालात तुम्हें मालूम हों बतलावो।

**हिदायतरसूल** — खुदावन्द न्यामत - अगर हुजूर मिसेज़ स्टील से या किसी से हीलतन् या सरीहतन् इसका तज़किरा न फरमावें और कुरान मजीद पर हांथ रखकर मुझसे इकरार करें तो मैं हुजूर से कोई अमर न छिपाउंगा।

**अमीरहसन** — बेशक यह तो मैं खुदा को दरमियान देता हूं और तुमसे हलफन् इकरार करता हूं कि मरते२ मर जाउंगा और इस बात का किसी से जिक्र न करूंगा।

हिदायतरसूल— हुजूर ने सरजान गार्सटन का नाम सुना होगा। कलकत्ते में गदर से पहिले उनका बहुत बड़ा कारखाना तिजारत का था। आदमी बहुत आलीखानदान और साहब इख़्तयार थे, आनिरेबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक निहायत मुअज़्ज़िज़ मेम्बर थे ऐय्याम गदर में उन्हों ने बड़े २ कारनुमायां किये और गवर्नमेण्ट से उनको मुअज़्ज़िज़ ख़िताबात और कसीर जायदाद अता हुई उसी ज़माने में उनको एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम एलिस था। लन्दन में तालीम पाती थी सोलह बरस की उसकी उम्र थी उसी कालिजके करीब ब्वायज़ हाईस्कूल था जहां गुर्बा के लड़के तालीम पाते थे। सेन्ट जान्स कालिज् का जनाना बोर्डिङ्ग हौस बहुत आलीशान था सदहा लड़कियां मुअज़्ज़िज़ें और रऊसा की उसमें रहतीं थीं। आप ख्याल फर्मावें जहां कसरत होती है वहां अच्छी निगरानी नहीं हो सकती, यही हालत इस बोरडिंग में भी थी ब्वायज़ हाई स्कूल में हील नामी एक लोहार का लड़का पढ़ता था, सत्रह वर्ष की उसकी उम्र थी एलिस पर वो लड़का दिलो जान से आशिक था और कभी २ एकाद गुलदस्ता फूलों का बतौर तोहफा के भी दिया करता था, एक रोज़ सड़क पर आशिक व माशूक मिले।

हील—क्यों प्यारी! हमारी मुहब्बत का क्या बदला दोगी? देखो हमने तुम्हें कितने गुलदस्ते दिये!।

एलिस — जो कहो - बेशक जितने गुलदस्ते तुमने दिये किसी ने नहीं दिये।

हील—हमारे साथ ब्याह कर लो।

एलिस — अच्छा - कब ?।

हील — कल।

एलिस गो सोलह वर्ष की थी लेकिन उस वक्त तक यह भी नहीं जान्ती थी कि ब्याह किस जिम्मेदारी का नाम है और यही हालत मास्टर हील की भी थी। ब्याह करनेको तैयार मगर यह खबर न थी कि दूसरे दिन जोरू को कहां से खिलायेंगे, जिसतरह लड़के गुड़ियों का ब्याह किया करते हैं वैसेही यह दोनों ब्याह को खेल तमाशा समझे और उन्होंने कुबूलभी कर लिया। दूसरे दिन अतवार था दोनों ठीक दस बजे पादरी साहब के मकान पर पहुँचे और शादी की ख्वाहिश ज़ाहिर की।

पादरी साहब—तुमलोगों की उम्र बहुत कम मालूम देती है जब तक लड़की सोलह बरस से ज्यादा नहो और लड़का २१ वर्ष का न हो शादी नहीं हो सकती।

हील – मैं इक्कीस बरस का हूं और एलिस सत्रह बरस की।

पादरी—अगर तुम्हारी उम्र इतनी है तो शादी मुमकिन है।

पादरी ने मुताबिक़ दस्तूर के निकाह पढ़ दिया और रजिष्टर पर दोनों के दस्तखत करा लिये, मियां बीबी हंसी खुशी वापस आए। एलिस अपने बोर्डिङ्ग हाउस को चली गई और हील अपने स्कूल को। इस हरकत का तज़किरा न एलिस ने किसी से किया और न हील ने। पांच छ रोज़ के बाद हील को बाप ने बुला भेजा और कलकत्ते में किसी सौदागर के यहां अप्रेण्टिसी करने को लिखा। हील अपनी बीबी से रुखसत हुआ और कहा कि हम कलकत्तेसे तुमको अच्छे अच्छे खत लिखा करेंगे। उनके नज़दीक ब्याहके बाद बीबी सिर्फ खतों ही की मोहताज रहती है इसलिये सिर्फ खतकिताबत ही का वादा किया और चला गया। बेचारा हील सिवा चन्द बोसों के और यह भी वाक़िफ़ न था कि शादी किस चिड़िया का नाम है। इधर थोड़े बरसे बाद मिस गार्डन भी अपने बाप के यहां चली गईं।

हुस्न, लियाक़त, तेज़ी, तमीज़दारी यह सब सिफतें मिस गार्डनमें खुदादाद थीं इसलिये तमाम लन्दन में उनका शोहरा हो गया, हर जलसे में नाच में दावत में सिवाय मिस गार्डन के दूसरी नज़र भर के न देखी जाती थी। सर जान गार्डन भी अपनी बेटी के होशियार होने से बहुत खुश थे। लार्ड चार्ल्स एक बहुत अमीरकबीर नौजवान थे वह मिस गार्डन पर हज़ार जान से आशिक़ व शैदा थे। दिन में सौसौ चक्कर करते थे और निहायत दर्द-आमेज़ अल्फ़ाज़ में अफ़सानये मुहब्बत बयान किया करते थे। सर जान भी इस बात से खुश थे कि उनकी लड़की अनक़रीब लेडी चार्ल्स होनेवाली थी। खुद मिस गार्डन को भी लार्ड साहब से मुहब्बत नहीं बल्कि इश्क़ होगया था और उस ने अलानिय: तौर पर इज़हार तअश्शुक़ कर दिया था। लार्ड चार्ल्स ने कुल सामान शादी फ़राहम किये और बड़े धूम

धाम से ब्याह का इरादा था । बेचारी मिस गार्डन गो बज़ाहिर खुश थी मगर दिल ही दिल में सोच सोच कर पसमुर्दा हुई जाती थी । डील का ब्याह गो ब्याह न हो तब भी उसे भूला न था कानूनन् अगर्चे बवजह कमउम्री यह शादी जायज़ न थी जब भी इस राज़ का ज़ाहिर होना लार्ड चार्लसका दिल फीका करने को काफी था । एलिस ने बहुत पसो पेश के बाद यही मुनासिब समझा कि लार्ड साहब से इस किस्से को किसी तरह बयान कर दें, एक रोज़ लार्ड साहब तशरीफ लाये ।

**एलिस**—प्यारे ! मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं ।

**लार्ड**— जानी कहो क्या अपने शादी वाले जोड़े में कुछ तर्मीम कराना चाहती हो ? वो तो म्यडम छोटली ने करीब २ तैयार कर डाला, सिर्फ लैस लगाना बाकी है ।

**एलिस**—नहीं जोड़े का तज़किरा नहीं है । मैं तुमसे ब्याह न न न न न नहीं कर सकती ।

**लार्ड**— घबड़ाकर- क्यों? खैर तो है

**एलिस**—मेरा एक मर्तबा ब्याह हो चुका है, प्यारे चार्लस ! तुम्हारीही मोहब्बत की कसम मुझे सिवा तुम्हारे कभी किसी से मोहब्बत नहीं हुई मगर कालिज में बतौर एक खेल के एक लड़के ने जिसका नाम डील था मुझ से ब्याह कर लिया था, प्यारे ! मैं अब क्या करूं ?

**लार्ड**— अल्लाह रे ऐय्यारा छोटी सी उम्र और यह गुण ! बस मिसेज़ डील अब मैं जाताहूं खुदा शायद तुम्हारी खता माफ़ कर दे लेकिन मैं नहीं माफ करूंगा । हाय ! तुमने मेरे साथ सख्त दगाबाज़ीकी ! ।

एलिस हरचन्द मिन्नत और खुशामद करती रही मगर लार्ड चार्लस गुस्से से भर रहे थे फौरन् सरजान गर्डन से कुल किस्सा बयान करके हमेशा के लिये उस घर को अल् विदा कह दी और फिर रुख़ न किया सरजान गार्डन को भी निहायत रंज हुआ और अपनी बेटी को उस गुस्से में कुछ रुपै दे कर निकाल दिया ।

**सरजान**—एलिस ! तू अब इस काबिल नहीं रही कि मेरी बेटी कहलाये ले यह रुपै ले कर फौरन् अपने शौहर की तलाश में हिन्दुस्तान जा मुझसे तुझसे कुछ वास्ता नहीं ।

एलिस ने कुल हालात अपने बाप

से भी बयान किये मगर कोई उम्मीदवारी पज़ीरा न हुई- आखिर रुपये ले कर अपने शौहर की तलाश में कलकत्ता आई, वहां मालूम हुआ कि मास्टर स्टील मुद्दत हुई खुदागंज सिधार गये। मारे गैरत के अब विलायत नहीं जा सकती बेचारी इस शहर में मुकीम है। बाप अब तक जिन्दह है हज़ारों रुपे भेजता है और मरने के बाद उनकी कुल दौलत उसको मिलेगी लेकिन किसी से यह किस्सा बयान नहीं करती।

**अमीरहसन** — तुम्हें यह सब हालात क्यों कर मालूम हुए मैं तो कहता ही था कि यह औरत मामूली नहीं है।

**हिदायतरसूल** — हुजूर एक रोज़ खुद मुझसे मेम साहबा ने बयान फर्माये थे। वल्लाह अजीब औरत है और ऐसी बाउफ्त व बा असमत कि न दीद न शुनीद।

**अमीरहसन** — अच्छा अब यह बतलावो कि मेरे साथ इनको इस कद्र क्यों हमदर्दी है?।

**हिदायतरसूल** — वल्लाह हुजूर ने भी कमाल कर दिया वो बेचारी दिलो जान से आपकी शैदा हो रही है और आप यह पूंछते हैं कि उसको हमदर्दी क्यों है?।

**अमीरहसन**—भाई हिदायतरसूल! बखुदा मेरी भी बुरी हालत है इस दर्जा मुझे उल्फत हो गई है कि अब एक मिंट भी बगैर देखे चैन नहीं पड़ता, मगर यह हालत किसी से कहने के लायक नहीं।

शेर। दिल में पोशीदा तपे इश्क बुतां रखते हैं। आग हम संग के मानिन्द निहां रखते हैं।

**हिदायतरसूल** — आप लाख छिपायें मगर आतिशे इश्क छिप नहीं सकती दिल से दिल को राह हुआ करती है—

जो हमारे दोस्त ने फैशन के मुताबिक जदीद मुलाज़िम भर्ती किये थे उन में से बैरा आया और मुअद्दब खड़ा हो गया।

**अमीरहसन** — बैरा! क्यामांगटां है?

**बैरा** — कोतवाल साहब सलाम को आये हैं।

**अमीरहसन** — बोल दो हम रात को नहीं मिलना चाहता, कल साढ़े आठ बजे आवै।

बेयरा बाहर भी जाने न पाया था कि शेरखां कोतवाल अन्दर घुस आये।

शेर खां—मियां साहबजादा! आप लाख रंग बदलें हमारे नज़दीक वोही हो जो पहिले थे।

अमीरहसन — आपने निहायत खिलाफतहज़ीब हरकत की, किसी जेन्टिलमेन के घर बग़ैर इजाज़त नहीं आना चाहिये यह बात फैशन के खिलाफ़ है।

शेर खां — मैं फैशन और तहज़ीब दोनों पर लानत भेजता हूं आप इन बेहूदा बातों में पड़ कर खराब होंगे और यह मर्दूद हिदायतरसूल आपको तबाह कर देगा।

हिदायत रसूल—कोतवालसाहब! ज़बान सँभालिये किसी भले आदमी की निस्बत ऐसी गुफ्तगू नहीं करनी चाहिये।

शेर खां—ज़बान सँभालिये! खूब!! वह चांटेको जमाऊँगा कि याद कीजियेगा। हमारे लड़के को ख़राब कीजिये और हमीं से ज़बान सँम्हलवाइये!

अमीर हसन—आप अजीब किस्म के आदमी मालूम होते हैं, बिला वजह मेरे दोस्त को इन्सल्ट कर रहे हैं और बग़ैर मेरी इजाज़त के अन्दर घुस आये इस वक्त मैं पूरे कपड़े नहीं पहिने हूँ इस वजह से आप से मुतलक़ बात नहीं कर सकता।

शेर खां—आपको मेरी बातें चाहे नागवार हों मगर मैं अपना फ़र्ज़ अदा करने आया हूं। सैयद काज़िम हुसैन मेरे पुराने दोस्त थे उनके घर का इसतरह बर्बाद होना मुझसे नहीं देखा जाता, आप उस बदकार मेम और इन नमकहराम मुसाहबों की सोहबत तर्क कीजिये, अपने भाई से मुहब्बत क़दीमाना क़ायम रख कर उनको बजाय अपने बाप के समझिये इसीमें आपका फ़ायदा है वरना याद रखिये कोई कौड़ी को भी न पूछेगा महीने दो महीने में सब रुपया उड़ जायगा आप के मांगे भीख भी न मिलेगी।

हिदायतरसूल—हुजूर इन अल्फ़ाज़ को सुनते जाइये मैं सिर्फ हुजूर की ख़ातिर से नहीं बोलता।

अमीरहसन—आप इसी वक्त मेरा कमरा ख़ाली कर दीजिये मैं आप से हर्गिज़ मुख़ातिब होना नहीं चाहता, अगर मेरे बाप भी ऐसी गुस्ताखी करते

तो उनका भी मुंह न देखता ।

शेर खां—बहुत बेहतर मैं जाताहूं और खुदा फिर मुझे यहां न लाए। लेकिन शेर खां की बात याद रखना वर्ना पछताओगे !

शेरखां गुस्से में भरा हुआ था अगर ज़रा भी अमीरहसन या हिदायतरसूल बोलते वहीं फौजदारी होजाती। बारे शुक्र है कि शेरखां की तेवर पहचानने में हमारे दोस्तों ने ग़लती नहीं की ।

रसीद-बूद बलाए वले बखैर गुज़श्त।

---

## आठवां बाब।

### मियां बीबी की तकरार ।

अमीरहसन अपने ख्यालात परीशान की बदौलत उस रोज़ सख्त परीशान थे । हिदायतरसूल ने मिसेज़ हील का क़िस्सा बयान करके उनकी आतिशे इश्क़ भड़का दी, शेर खां के खिलाफ़ फैशन हर्कत ने उनको सख्त नाराज़ कर दिया था अगर उन्हें उमेद होती कि मिसेज़ हील अपने घर मिलेंगी तो वह यक़ीनन् मुल्ला की दौड़ मसजिद वाली मसल पूरी करते। जब उधरसे नाउमेदी थी और यहां हसरत् व ग़म गुस्सा व रञ्ज मौके मौके से अमीरहसन को मग़मूम कर रहे थे ऐसी हालत में अन्दर जाना और बीबी से बराय नाम जी बहलाना ही मुनासिब मालूम हुआ। कुलसुमुन्निसा बेगम यानी अमीर हसन की बीबी एक निहायत बा सिफ़ात औरत थी आगरे के मुसल्मानों में न उससे ज्यादा कोई औरत हसीन व जमील थी और न तमीज़दार व अक़ील। बहुत ही कामिल तौर पर उर्दू फ़ारसी और किसीक़द्र अरबी की तालीम पाई थी । मिज़ाज निहायत सलीम, तबीअत बहुत ज़हीन, चेहरा हसमुख, बातें प्यारी, अलग़र्ज़ ऐसी दिलफ़रेब और जोशअर बीबी उस ज़वार में दूसरी न थी। उसके वालिद माजिद मौलवी सैयद मुहम्मद अकरमखां बहादुर बहुत मुतमौअल और मुअज़िज़ शख्स थे शादी में हज़ारों रुपये का ज़ेवर और जायदाद जहेज़ में दिया और उसके बाद भी हमेशा अपनी बेटी को कुछ न कुछ देते ही रहे। दामाद से वह भी खुश न हुए गो लायक़ और तालीमयाफ्त: जानते थे मगर अमीर हसन की बदमिज़ाजी बेएतिनाई और अपनी बीबी से नफ़रत के हालात से वह बेखबर न थे। जब सैयद काज़िम हुसैन

ने इन्तिक़ाल किया मुहम्मद अकरम् खां रियासत जूनागढ़ में वज़ीर थे सैयद साहब के इन्तिक़ाल की ख़बर सुन कर अपने दामाद को एक मातमपुर्सी का ख़त भेजा मगर साहबज़ादे बलन्द-इक़बाल ने उसका कुछ जवाब न लिखा तबसे उनका दिल और भी खट्टा हो गया। अमीरहसन को अपनी बीबी पर कभी तवज्जह न हुई गो इनकी बीबी इसक़द्र हसीन और लायक़ थीं कि सौ पचास यूरोपियन् मिसों में भी उसका मिस्ल मिलना मुश्किल था मगर अमीर हसन हमेशा अपनी बीबी को बदतमीज़ फ़ुज़ूलख़र्च और मग़रूर समझते थे, इसी वजह से कभी अपनी बीबी की तरफ़ मुतवज्जह न हुए। उस रोज़ जब ज़्यादा परेशान हुए तीन चार दिन बाद घर में तशरीफ़ लेगये।

बीबी – आज किधर चांद निकला?

अमीरहसन — देखो मैं इन्हीं लग़ो बातों के सबब से घरमें नहीं आता, ख़बरदार शिकवा व शिकायत ज़बान पर न लाना।

बीबी—बहुत बेहतर –

न तड़पने की इजाज़त है न फ़र्याद की है। घुट के मरजाऊँ ये मर्ज़ी मेरे सैयाद की है॥ १॥

अमीरहसन — प्यारी! आजकल हम बड़ी मुसीबत में हैं देखो नज़ीरहसन हमको तबाह करने की फ़िक्र में हैं।

बीबी—मैं गो बेअक़ल हूँ जब भी इस घर में रहते सहते काफ़ी तजरिबा मुझे होचुका। तुम्हारे भाई से ज़्याद: नेक, सच्चा और तुम्हारा चाहनेवाला आदमी इस दुनियां में पैदा नहीं हो सकता तुम उनसे हर्गिज़ बदगुमांन न हो और न उनसे बिगाड़ो।

अमीर हसन—तुम उनके अफ़आल से वाक़िफ़ नहीं वह सब माल व असबाब हज़्म करने की फ़िक्र में हैं।

बीबी – हर्गिज़ नहीं, हर्गिज़ नहीं तुम्हारे भाई का दिल ग़नी है उनको तुम्हारे माल तुम्हारी जायदाद तुम्हारे हिस्से का कोई लालच नहीं, तुम अगर उनका भी हिस्सा ले लोगे तो वह उफ़ न करेंगे। आज चार पांच रोज़ से आप ने अलग खाना पीना अख़्तियार किया है इस पर भी मेरे साथ जो उन का बरताव था वही है बल्कि पहिले से ज़्यादा अब ख़ातिर करते हैं।

अमीरहसन— यह सब ज़ाहिरी

खातिर है मगर इसका नतीजा मालूम हो जायगा।

बीबी—आप ने खाना पीना अलैहदा क्यों इख्तियार किया? पुराने नौकर क्यों मौकूफ़ करदिये?।

अमीरहसन — तुम यह बातें क्या जानो। मैं अब जेण्टलमैन हो गया हूँ फैशनके खिलाफ़ कोई बात पसन्द नहीं। यहां सिवा गोश्त रोटी और कबाब के खाने को और क्या मिल सकता था! मेरा खान्सामा हर रोज़ दस्तूर के मुताबिक शोरवा केटलेस, मटनचाप पुडिङ्ग वगैरह सब किस्म के खाने तैयार करता है और तरीके से खिलाता है तुम भी अब छूरी कांटे से खाना सीखो।

बीबी—मैं नौज ऐसी सिड़िन हो जाऊं यह छूरी कांटे मर्दों ही को ज़ेबा हैं। भला आपने अङ्गरेज़ी पोशाक क्यों अख्तयार की?क्या हिन्दुस्तानी कपड़ों से अङ्गरेजी कपड़े अच्छे होते हैं?टाट ऐसे मोटे २ कपड़े आप को क्या पसन्द आये!।

अमीरहसन — यह पोशाक खास तुर्कों की है वो हमारे कौम के सरगना हैं, इलावा इसके मैं अब कोई काम खिलाफ़ फैशन् नहीं करना चाहता तुम भी फैशन् सीखो अगर कहो तो मिसेज़ डील से मैं तुम्हारे लिये भी फैशन दर्याफ्त कर आऊँ और अम्मांजान के लिये भी। तुम साफ साफ अम्मांजान से दर्याफ्त कर लो अगर वो नज़ीरहसन के साथ रहना चाहती हैं तो खैर, और अगर मेरी मुहब्बत उन्हें हो तो मैं उनको भी अपनी तर्फ ले लूं और विलायत में जो फैशन् मां का मुकर्रर है उसी मुताबिक उनसे बर्ताव करूंगा।

बीबी — आप को फैशन् का खुदा नख्वास्ता जनून हो गया है हम पर्दावालियां फैशन् बनाकर क्या करेंगी? हमारा जो फैशन अज़ल से चला आता है खुदा उसी को बर्करार रक्खे, रहा तुम्हारी मां और तुम्हारे भाई दोनों तुम्हारे खैरख्वाह हैं मैं साफ२ कहे देती हूं तुम उनसे न बिगड़ो तमाम दुनियां तुम्हीं को बुरा कहेगी और तमाम दुनियां उन्हींका साथ देगी मैं ऐसी बेहूदा बात अम्मांजान से कभी न कहूंगी, आप समझिये भाई का दर्जा खुदा ने बड़ा बनाया है और फिर ऐसा भाई जो तुम्हारे ऊपर जान व दिल से निसार हो, जो भाई का भाई, आशिक का आशिक और गुलाम का गुलाम हो – ऐसे भाई

खुदा सबको नसीब करे जिस रोज़ से तुमने अलग होने की धमकी दी तुम्हारे भाई की रंज से बुरी हालत है मैं देखती हूं और उनको रंजीदा पाकर खुद भी रंजीदा हो जाती हूं तुम्हें किसने बहकाया खुदा इन मुफ्सिदों को मटियामेट करे।

अमीरहसन — देखो खबरदार मुफ्सिदों को गाली न दो खुदा जाने किस किस ने मुझे बहकाया और किसी ने भी नहीं बहकाया।

बीबी—या अल्ला! मुफ्सिद अब ऐसे प्यारे हो गये कि हम उन्हें बुरा भी न कहें।

अमीरहसन— बेशक सब मुफ्सिद तो नहीं लेकिन एक मुफ्सिद तो जरूर प्यारी है।

**दिल में एक टीस उठी आखों में आंसू भर आये। बैठे २ हमें क्या जाने क्या याद आया॥**

बीबी — मैं आप के सब हालात सुन रही हूं खुदा के लिये आप अपनी हालत सम्हालिये। उस बदचलन मेम की सुहबत तर्क कीजिये, तमाम ज़माना हँस रहा है और ऐसी २ बातें आप के निस्बत मशहूर हैं कि सुन २ कर मेरा खून खुश्क हुआ जाता है।

अमीरहसन — खबरदार अबकी कहा तो कहा अगर दुबारा तुमने मिसेज़ हील को बदचलन कहा तो मुझ से बुरा कोई नहीं।

बीबी — परी व हूर हैगी, मैंने भी आंखों देखी है, मैं डर न जाऊंगी आंखे दिखाइये न मुझे। अल्ला अल्ला उस फिरङ्गिन के ऐसे दर्जे हुये कि बदचलन कहने पर इतना खफा होने लगे।

अमीरहसन — किसी शरीफ लेडी को बुरे अलफाज़ से याद करना फैशन् के खिलाफ है उस लेडी के मेरे ऊपर हज़ारहां अहसान है वो बड़ी नेकबख्त और माकूल औरत है अगर तुम मुझ को चाहती हो तो उसको भी बुरा न कहो और प्यार करो।

बीबी — मेरे दुश्मन किसी सरदार को प्यार करें — वाह अच्छे रहे! — अभी फिरङ्गिन को प्यार करने की दर्खास्त है कल किसी फिरङ्गी से मिलने को कहियेगा - न साहब मुझसे यह नहीं हो सकता - अगर आप जिस तरह मैं रहती हूं अम्मां जान के साथ रहने दीजिये तो बेहतर वर्ना मैं

अब्बाजान को आजही ख़त लिखती हूं कि मुझे जूनागढ़ में बुला लें। मैं भला इन बखेड़ों में काहे को अपनी जान हलाक करने लगी - खूब - आज चार रोज़ बाद आप आये भी तो एक सवांग लेकर आये।

**अमीरहसन** — जूनागढ़ जाने की धमकी नाहक देती हो - इसका ख्याल तो उसे हो जिसे तुम्हारे रहने की परवाह हो मेरे नज़दीक तुम्हारा अदम वजूद बराबर है।

**बीबी** — ( रो कर ) हाय मैं अब ऐसी हो गई कि मेरा अदम वजूद बराबर हो गया ! या अल्ला ! मुझे इस ज़िन्दगी से मौत दे।

अमीरहसन ने अपनी बीबी को इस दर्जा तंग किया कि वो बेचारी बहुत देर तक पहिले ज़ब्त करती रही आखिर को चिल्ला २ कर रोने लगी और तमाम घर में रोने की आवाज़ फैल गई।

**एक खादिमा**—( बड़ी बेगमसाहब से ) हजूर छोटी बहू साहब चीखें मार मार कर रो रही हैं मालूम नहीं कोठे पर क्या हो रहा है।

**सिकन्दरबेगम** — आज वो नालायक कोठे पर गया है उसी ने कोई आफत मचाई होगी ! या अल्ला ! मेरे घरमें क्या होनेवाला है। ऐ खालिक बेनियाज़ ! अपना रहम कर। यह कह कर बड़ी बेगम साहब कोठे पर गईं।

**सिकन्दर बेगम** — मैं आती हूं अमीरहसन क्या कर रहे हो ?।

**अमीरहसन** — अम्मां, आप यहां न आइये, आप का इस वक्त आना खिलाफ फैशन् के है और इस बेवकूफ औरत का रोना भी खिलाफ तहज़ीब है।

**सिकन्दरबेगम** — फैशन् गया चूल्हे भाड़ में ! - गज़ब खुदा का, मेरी लड़की ऐसी बिलक २ कर रो रही है बतलाओ क्या आफत तुमने मचा रक्खी है ?।

**अमीरहसन**—कुछ नहीं, नाहक रो रही है - मैंने सिर्फ यही कहा था कि इनका जैसा यहां रहना वैसा न रहना, मेरे नज़दीक दोनों एकसां हैं बकौल सखुसे कि-' जैसे कन्ता घर रहे वैसे रहे बिदेस '।

**सिकन्दरबेगम**—बेटी! क्यों रो रही हो ? आखिर मैं भी तो सुनूं- इनके तो दुश्मन मजनू हो रहे हैं इनकी बात

का बुरा न मानो।

बीवी — अम्मांजान! कुछ नहीं उन्हीं ने मुझे कुछ नहीं कहा-मैं आपही आप रो रही हूं- मुझे मेरी मां याद आई।

सिकन्दरबेगम — मैंने यह चोंडा धूप में नहीं सफेद किया है, मेरी भी पचास बर्स की उम्र होने को आई, मां को याद कर के इस्तरह कोई नहीं रोता।

अमीरहसन — आप इन सब बखेड़ों में नाहक पड़ती हैं! अम्मांजान! मैं आप से खुद मिलने वाला था, देखिये नज़ीरहसन मेरी तबाही और बर्बादी की फिकरें कर रहे हैं, सब रुपे पैसे जायेदाद हज़म किया चाहते हैं मुझे सिर्फ चालीस हज़ार दे कर टालने पर अमादा हैं, बतलाइये आप किसकी शरीक हैं? अनकरीब मैं यह घर छोड़ कर अलहदा रहने की फ़िक्र में हूं अगर मेरी शरीक हो तो साफ २ बतलाइये मैं अङ्गरेजी फैशन् के मुताबिक आपके रहने का सब इन्तज़ाम कर दूं।

सिकन्दरबेगम — बेटा मेरा फैशन् तो अब कब्र में तबदील होगा, इसकी तुम फिक्र न करो, रहा नज़ीरहसन वोह तुम पर जान व दिल से फ़िदा है तुम उस से नाहक बदगुमां हो, मुफसिदों के भड़काने में न आओ, यह बना बनाया घर खाक सिआह न करो। बेटा नज़ीरहसन तुम्हारा रुपैया कभी न मारेगा अगर वो अपना तुम्हें कुछ न देगा तो तुम्हारा भी न लेगा, तुम इस ख्याल खाम से दर गुज़रो और मैंने गो नज़ीरहसन से तुम को ज्यादा चाहा हमेशा से, लेकिन अब उसको नहीं छोड़ सकती उसी के साथ रहूंगी और इसी घर में रहूंगी और तुम्हारी बीवी को इस घर से कहीं न जाने दूंगी चाहे इसमें कुछही हो।

अमीरहसन — मेरी बीवी की यह मज़ाल नहीं कि मेरे दुश्मन नज़ीरहसन के साथ रहे और फिर मुझ से कोई ताल्लुक कायम रहे।

सिकन्दरबेगम—लड़के तुझे क्या हो गया है?गज़ब खुदा का ऐसा भाई दुनियां में किसको नसीब होताहै? औरतू उसे दुश्मन बतलाता है, तेरी अकल मारी गई है। रही बीवी बेचारी सो जब तुम मेहर्बान थे उसे कौन दौलत मिल गई जो अब खफगी में न मिलेगी?लड़के वो-

ह बात कर जो खुदा को भली लगे मेरे बने बनाये घर को न बिगाड़ो अगर तुम्हें फिसाद बर्पा करना हो तो थोड़ी सी संखिया ला दो मैं खाकर सो रहूं जहां तुम्हारे बाप गये उन्हीं के पास मैं भी चली जाऊं फिर तुम खुद मुख्तार हो कर खूब खुल खेलो, चाहे बीबी को फैशन् सिखाओ या मां को फैशन बतलाओ, मेरी जिन्दगी भर यह सब बातें नहीं हो सकतीं इसमें चाहे कुछ हो।

अमीरहसन—बस मालूम हो गया आप भी मेरी शरीक नहीं हैं। नजीरहसन ने सबको अपनी तर्फ कर लिया है और यह बेवफा औरत भी मेरी शरीक नहीं है, अच्छा मैं अब जाता हूं।

मियां अमीरहसन उस वक्त बाहर चले आये और फौरन् आदमी भेज कर हिदायतरसूल और इनायतअली बुलवाये गये।

हिदायतरसूल — खैर तो है सरकार! इतनी रात को घर मेंसे क्यो चले आये?।

अमीरहसन — भाई हमारा कोई नहीं - मां, बीबी सब नजीरहसन की तरफदार हैं बतलाओ अब हम क्या करें?।

हिदायतरसूल — मैं तो हमेशा से कहता चला आता था - मुझे यह डर है कि सरकार की जान पर कोई आंच न आये।

अमीरहसन — यह कैसा? क्या इसकी भी कुछ फिक्र हो रही है?।

हिदायतरसूल — जुम्मन् दारोगा हुजूर के नये बावर्ची से अकसर बातें किया करता है, मैं शुबहा करता हूं कि उसके ज़रिये से मियां नज़ीरहसन कभी खाने में ज़हर न डलवा दें-मेरी सलाह तो यह है कि आप यहां का रहना छोड़ दें, कल सबेरे मैं एक उम्दा सा बङ्गला हुजूर के लिये ठहरा दूंगा उसमें चल कर आराम से रहिये।

अमीरहसन — यही मेरी भी राय है - राजा साहब सर्कोट की कोठी खाली है वोही किराया पर ले लो— मिसेज़ स्टील के घर से भी करीब रहेगी।

हिदायतरसूल— बहुत बेहतर, मैं इस वक्त जाता हूं।

मियां हिदायतरसूल रातही को गये और राजा साहब के कारिन्दों से मिल कर सौ रुपे माहवारी

किराया पर कोठी ले ली - फर्नीचर वगैरह सब सामान नया खरीदा गया और सुबह तड़के मियां अमीरहसन बगैर किसी की इत्तला और सलाह के जदीद कोठी में उठ गये।

अमीरहसन — अब तो नज़ीरहसन का मुझ पर दस्तरस न होगा अब तो बेतमीज़ जोरू की नाकाबिल बर्दाश्त बातें न सुनी पड़ेंगी - अब तो शेर खां कोतवाल बेतमीज़ी से बंगले में न घुस आयेगा ? ।

हिदायतरसूल—यहां परिन्दा भी पर नहीं मार सकता - सरकार आराम से रहें हम लोग भी यहां हुजूर के साथ रहा करेंगे और शब को भी घर न जाया करेंगे-फर्नीचर जो हुजूर के मकान में लायक इस्तयामाल था मैं सब उठवा लाया अलबत्ता जो चीजें खराब थीं या फैशन् के मुताबिक न थीं मैंने ह्वेल की दूकान से मँगवालीं।

अमीरहसन — बहुत अच्छा किया अरे भई इस वक्त मेम साहब के यहां तुम्हें जाना था, भूल गये। मिसेज़ ह्वील नज़ीरहसन के यहां जाने को थीं।

हिदायतरसूल—आह हा ! मैं इन सब तरद्दुदात् में ऐसा फँस गया कि वहां जाना बिलकुल ख्याल से उतर गया — मैं अभी जाता हूं।

---

॥ नवां बाब ॥

## मिसेज़ ह्वील की तिजारत ॥

नाज़रीन ग़ालबन् मिसेज़ ह्वील के तफसीली हालात दर्याफ्त करने के मुश्ताक होंगे। एक रयायत् तो उनकी निसबत नाज़रीन हिदायतरसूल की ज़बानी सुन चुके हैं मगर वह महज़ बे असल है मिसेज़ ह्वील दर असल चूनार की रहने वाली एक यूरेशियन् औरत थी उसका असल नाम मिस गर्नर था। किसी ज़माने में एलिकज़ेन्डर उसका बाप नील का रोज़गार करता था और खुशहाल था। गदर के बाद जब ईस्ट इन्डिया रेलवे कलकत्ते से कानपूर तक जारी होगई और कानपूर अपर इण्डिया का मनचेस्टर बन गया मिर्ज़ापूर की मण्डी जो तिजारत के लेहाज़ से सदर मण्डी थी रोज़ बरोज़ टूटती गई उसी इनकिलाब में सदहा महाजन और कारखानेदार मिर्ज़ापूर में बिगड़ गये। गर्नर भी अपनी तबाही का सबब यही बयान किया करता था। गो यह बात

अलबत्ता शुबहा दिलाती थी कि नील के रोज़गार की ईस्ट इण्डिया रेलवे के हुजरा या मिर्ज़ापूर की मण्डी टूटने से कोई नुकसान नहीं पहुँचा इस लिये मिस्टर गर्नर की बर्बादी के शायद कोई दूसरे वजह होंगी, जो आज तक ज़ाहिर नहीं हुये, बल्कि बाज़ शक्की-मिज़ाज हज़रात को यह भी यकीन न था कि एलिस उसकी बेटी है क्योंकि सूरत में बड़ा फर्क था, ब-हरहाल मिस्टर गर्नर बहुत दिन अपनी लड़की को जो हुस्न व जमाल में अपनी आपही नज़ीर थी लिये हुये मुख्तलिफ़ मुकामात में रहे।

लखनऊ फैज़ाबाद बनारस मुज़फ़्फरपूर पटना इन सब शहरों में मिस्टर व मिस गर्नर का दौर दौरा रहा मगर कोई आंख का अन्धा और गांठ का पूरा ऐसा न मिला जो मिस गर्नर के साथ शादी कर लेता। गो उसके हुस्न व जमाल को देख कर बहुतेरे दौलतमन्द अङ्गरेज़ भी अौव्वल फरेफ़ता हो जाते थे मगर घर का रवैया और चलन देख कर सब का जी फीका हो जाता था और फिर उस तर्फ रुख भी न करतेथे। बारे खुदा२ करके एक साहब चुनारही में फँस गये। मिस्टर जान्स असिस्टेण्ट सर्वेयर एक निहायत सीधा सादा आदमी था ज़ाहरी हुस्न व जमाल पर ऐसा आशिक हुआ कि दोही तीन हफ़्ते की कोर्टशिप के बाद चुनार के गिर्जाघर में एक सुबह को दोनों मौजूद हुये और पादरी साहब ने बाकायदा शादी कर दी। लीजिये अब मिस गर्नर मिसेज़ जान्स हो गईं, महीने दो महीने तो अच्छी गुज़री, जान्स के पास दस बारह वर्ष की नौकरी में जो कुछ बचा बचाया था सब उड़ उड़ा गया, इधर बेचारा जान्स जोरूबाज़ी की फिक्र में ऐस महो हुआ कि नौकरी पर जाना भी नागवार था, तीन महीने की रुखसत पहिले ली वो गुज़र गई तब तीन महीने की और दर्खास्त की जब वो भी गुज़र हुई और मिस्टर जान्स काम पर न पहुँचे डाइरेक्टर जेनरल ने नाम काट दिया; लीजिये अब ससुर दामाद दोनों एक ही महकमे के यानि महकमे बेकारी के मुलाज़िम हो गये। मिस्टर जान्स से शादी की जो खुशी बाप बेटी दोनों को थी वो बेकारी की खबर ने फौरन् ज़ायल कर दी, जांन्स उसी दिन से

कमतरीन ग्रौहरों में से हो गये और अपनी जोरू के हांथ से तरह २ के मुज़ालिम बर्दाश्त करने लगे, एक दिन ज़ौजा व ग्रौहर में सख्त लड़ाई हुई।

ज़ौजह — आखिर तुमने क्या समझ कर ग्रादी की थी ? जब तुम्हारे पास रुपया न था तो ब्याह करने की क्या ज़रूरत थी ? तुमने मुझे तबाह कर दिया, हमेशा के लिये अपना पाबन्द कर दिया अब न मैं किसी हसीन आदमी से मिल सकती हूं और न किसी दौलतमंद से बात चीत कर सकती हूं अगर तुम्हारे साथ ब्याह न हुआ होता तो ग्रायद मैं एक रोज़ किसी लार्ड की जोरू होती।

ग्रौहर — प्यारी इस दर्जा ज़ालिम इस दर्जा बेमुरौव्वत और इतनी संगदिल न हो जाओ तुमने मेरी दौलत के साथ ब्याह नहीं किया था बल्कि मेरे साथ ग्रादी की थी।

ज़ौजह — बेग्रक मैंने तुम्हारे साथ इस वजह से ग्रादी की कि तुमने हमेशा अपने को दौलतमंद और खुग्रहाल ज़ाहिर किया, अगर मैं तुम्हें मुफ़लिस जानती तो हर्गिज़ हर्गिज़ तुमसे ग्रादी न करती।

ग्रौहर — अच्छा मैं अब जाता हूं जब मुफ़लिसी दूर होगी तब ही वापस आऊंगा।

बेचारा जान्स उसीवक्त अपना बोरिया बधना ले बर्म्मा रुपया कमाने को चल दिया और हमारी मिस गर्नर साहबा फिर एक मर्तबा आज़ाद होगईं। उस जवार में जान्स और उनकी ग्रादी का किस्सा अज़हद मशहूर होगया था इस वजह से वहां तरह २ की आवाज़ें हर रोज़ कान में पड़ती थीं जो मिस गर्नर की बदनामी और कुग्रादा बाज़ारी का बाइस होती थी इस वजह से वहां का कयाम तर्क करके आगरे में सकूनत अख्तयार की। मिसेज़ होल अपना नाम रक्खा और बराये नाम अङ्गरेजी असबाब की तिजारत शुरू कर दी; यह किसी को आज तक न मालूम हुआ कि इस तिजारत के लिये मिस गर्नर को रुपया कहां से मिला गो इस में कुछ ग्रुबहा नहीं कि आगरे के चन्दरोज़ा क़याम के बाद उसकी माली हालत बहुत काबिल इत्मीनान थी, बुढ्ढा गर्नर बेटी के साथ न था मगर एलिस हमेशा उसको खर्च भेजा

करती थी ।

हिदायतरसूल और मिसेज़ ह्वील से उस ज़माने में मुलाकात हुई जब वो चौधरी खसलतरसूल साहब मर्हूम की बर्बादी और तबाही में मसरूफ़ था और उस ने चौधरी मर्हूम से हज़ारहा रुपैया मेम साहब को दिलवा दिया था बल्कि जिस क़द्र कीमती असबाब आज मिसेज़ ह्वील के गोल कमरेमें मौजूद थे उसका बड़ा हिस्सा चौधरी खसलतरसूल की बदौलत था। जब सब से पहिले हिदायतरसूल ने मिसेज़ह्वील से अमीरहसन का तज़किरा किया मेम साहबा ने किसी कदर इश्तबाह ज़ाहिर किया और कहा कि एक तालीमयाफ्ता शख्स जिसने एम॰ए॰ तक पढ़ाहै क्या मुम्किन है कि खसलतरसूल की तरह शिकार हो सके? हिदायतरसूल ने जवाब दिया कि वोह! बेपढ़े आदमी तो इधर उधर भी देखते भालते हैं इस वजह से उनका फँसना मुश्किल होता है; हमारे एम॰ ए॰ साहब सिवा किताबों की दीवार के बाहर नहीं गये वो इंशा अल्लाह ऐसे चपरगट्टू होंगे कि देखने लायक़।

एक रोज़ हिदायतरसूल के कहने से मिस्टर अमीरहसन वहां गये और फिर मिसेज़ ह्वील ने डिनर पर बुलाया और फिर जो २ मरासिम बढ़ते गये वह नाज़रीन से पोशीदा नहीं है — मगर अब तक मिसेज़ ह्वील को सिवा उस घड़ी और ज़ञ्जीर के और कुछ हासिल न हुआ था।

इसलिये हिदायतरसूल और मेम साहबा दोनों इस फ़िक्र में थे कि कोई सूरत हसूल ज़र की होनी चाहिये। मिसेज़ ह्वील ने आरे की कल कायम करने की सलाह दे दी थी जिसकी खरीदारी वग़ैरह में बहुत कुछ कमीशन की उमेद थी और सबसे बढ़कर उमेद यह थी कि अपने बूढ़े बाप को किसी दूसरे नाम से मनेजर मुकर्रर कराऊंगी कि इस ज़रिये से भी मुट्ठी गरम होती रहेगी। मिसेज़ ह्वील ने अमीरहसन से वादा तो कर लिया कि नज़ीरहसन के पास जाकर वह इस मामले को तय करेगी मगर उसके पूरा करने में उसको बहुत कुछ तामुल था।

बहरहाल वह हिदायतरसूल की मुन्तज़िर थी कि जो मशवरा करार पावे उसके मुताबिक अमल किया जायगा। यहां हिदायतरसूल हसबवादा सबेरे

नहीं पहुंच सका क्योंकि वह नकल मकान के इन्तजाम में मसरूफ था, आठ नौ बजे मेम साहब के बँगले पर गया।

**मेम साहब**—मिस्टर हिदायतरसूल! अपने आने में देर की, कहिये नज़ीरहसन के पास किस वक्त चलना होगा?

**हिदायतरसूल**—रात लौंडा अपनी जोरू से भी लड़ बैठा, इस वक्त सर्कोट वाली कोठी में बन्द किये चला आरहा हूं, क्यों कैसी हुई?।

**मेम**—( हाथ मिला कर ) बहुतही खासी! वल्ला खुसलतरसूल से भी हिमाकत में यह छोकरा बढ़ा हुआ है मगर कुछ हाथ नहीं चढ़ता सिर्फ वही घड़ी आई है और कुछ नहीं।

**हिदायतरसूल**—हां ज़र की तो कमी नज़र पड़ती है, चालीस हज़ार रुपये कुल जमा मियां के पास हैं उसमें बीस हज़ार से ऊंचा ऊंचा क़र्ज़ होचुका फिर और क्या उमेद हो सकती है।

**मेम**—मेरी राय यह है कि कर्ज़ा ज्यों का त्यों रहने दो नकद रुपया जो बङ्क में है हासिल करलिया जाय, आरे की कल मँगवाने पर तो मुस्तैद होही चुके हैं, बङ्क का चेक मेरे नाम लिखवा दो मैं कलकत्ते से कल ख़रीद लाऊं मैंने अपनी कारगुज़ारी साबित करने को नज़ीरहसनवाली सिफारत अपने सिर ली है, खुदा करे इसमें कुछ कामयाबी हो जाय।

**हिदायतरसूल**—नज़ीरहसन निहायत शरीफख्याल और नेक शख्स है, पांच सात हज़ार रुपये और दे निकलेगा, मै इन्शाअल्ला दोही चार रोज़ में बङ्कवाला रुपया तुम्हारे पाकेट में भेजवाये देता हूं मगर मेरा हिस्सा भूल न जाना, खुसलतरसूल के वक्त में मुझे याद है तुमने हीरे का झूमड़ ले लिया और हमें कुछ नहीं दिया।

**मेम**—गुज़श्त: रा सलवात् इस मर्तबः मैं धोखा न दूंगी।

**हिदायतरसूल**—अच्छा इसी वक्त नज़ीरहसन को चिट्ठी लिखो और वक्त मुलाकात का दर्याफ्त करो।

मेम साहब ने हसब ज़ैल चिट्ठी लिखी।

डीअर सर,

मैं एक खास ज़रूरत से आपसे मिलना चाहती हूं, निहायत शुक्रगुज़ार हूंगी अगर वक्त फुर्सत से आप मुझे मुलता फर्मायें, मैं हरवक्त आ सकती हूं।

आपकी वफ़ादार

एलिस हील।

यह चिट्ठी नौकर लेकर नज़ीरहसन के पास गया और हस्ब क़ौल जवाब लाया।

म्याडम !

मैं हरवक्त मकान पर रहता हूं अगर आप दर्मियान दस और ग्यारह बजे दिन के तशरीफ़ लायें बाइस मसर्रत होगा।

आपका वफ़ादार
सैयद नज़ीरहसन।

जिसवक्त से नज़ीरहसन को शब की लड़ाई और अमीरहसन का तबदील मकान करना मालूम हुआ वह निहायत रंजीदः थे, घर में भी एक किस्म का हलचल मचा था, बड़ी बेगम साहब अपनी तरफ़ रो रहीं थीं और कुलसुमुन्निसा बेगम याने अमीरहसन की अहलखाना अपनी तरफ रो२ कर बुरा हाल कर रहीं थीं। बेचारा नज़ीरहसन सबकी तसल्ली व तशफ्फ़ी करता था और समझाता था कि यह सब मुसीबत चन्दरोज़ा है। उनको पूरी उम्मेद थी कि अमीरहसन बहुत जल्द इस ख्वाबग़फ़लत से बेदार होकर असली हालत पर आ जायंगे। इस चिट्ठी को पाकर उन्हें किसी कद्र ताअज्जुब और किसी कद्र तरद्दुद हुआ, अपने भाई और मेम साहब के मरासिम से उनको पूरी वाक़िफ़यत हो चुकी थी इसलिये मेम साहब की तशरीफ़आवरी उनके ख्याल में भी अमीरहसनही के मामले से कुछ ताल्लुक रखती थी, मगर अमीरहसन का उनके ख्याल में कोई मामला ही तस्फ़ीया तलब न था, अपने हिस्सेसे ज्यादः रुपया वह पा चुके, खाना पीना वो अलग करचुके,घर बार बिल्कुल छोड़ चुके आखिर वो कौन ऐसी बातहै जिसमें अब फ़ैसला दर्कार है, कोई और रफ़ीक़ और सलाहकार नज़ीरहसन का न था इसलिये उन्हों ने शेर खां कोतवाल पर इस मौके के लिये निगाह दौड़ाई और फ़ौरन् आदमी भेज कर बुलवा भेजा। कोतवाल साहब फ़ौरन् तशरीफ़ लाये और शब को जो ज़िल्लत अमीरहसन के हाथों उठा चुके थे बयान की।

नज़ीरहसन—इस्तग़फ़ार अल्लाह ! जनाब जो शख्स अज़खुद ख़प्त होजाय उसके किसी फ़ेल की शिकायत फ़ज़ूल है। देखिये कल अपनी बीबी से भी सख्तकलामी की, मां को भी बुरा भला कहा, मुझे बेईमान और खायन् बतलाया लेकिन मुझे इसकी भी शिकायत नहीं, अब यह फ़र्माइये आपको

राय में मिसेज़ स्टील का आना किस ग़रज़ से है, मैं नातजरुबेकार और ग़मज़दा हूं इसलिये आपको तकलीफ दी है।

शेर खां—शायद एक भाई को मूंड़ चुकी अब दूसरे की हजामत का इरादा हो।

नज़ीरहसन—(हँस कर) नहीं यह इरादा हर्गिज़ न होगा, मेरी चाल चलन से शायद कोई नावाकिफ़ नहीं।

शेर खां—यह तो मैं मज़ाकन् कहता था मगर वाक़ई उसकी आमद खाली अज़इल्लत नहीं, बड़ी फाहशा और हरामज़ादी औरत है, उसके कुल हालात् मैं दर्याफ्त कर रहा हूं अनक़रीब आपको बतलाऊंगा। इतने में नौकर ने आकर दो कार्ड दिये।

M. Hidayat Rasul
Mrs. A. Steel
of AGRA.

नज़ीरहसन—यह लीजिये, याजूज माजूज दोनों तशरीफ़ लाये हैं, यानि मेमसाहब के हमराह हिदायतरसूल भी हैं।

शेर खां—फिर क्या डर है दोनों को बुलवाइये। 'हक ने बनाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी'।

नज़ीरहसन—सलाम दो, दोनों को आने दो।

इतने में मेमसाहब निहायत उमदा बादामी रंग के रेशमी कपड़े की पोशाक पहने हुए बेशकूरत एक पंखा हाथ में लिये मुसकिराती हुई दिखलाई दीं, मियां हिदायतरसूल पीछे२ हमराह थे।

मेम—(हाथ बढ़ा कर) मिस्टर नज़ीरहसन गुडमार्निंग, मिज़ाज शरीफ आह हा! मैं किस दर्जा आपके मिलने की मुश्ताक थी।

हिदायतरसूल - मैं भी आदाब बजा लाता हूं, मिज़ाज अक़दस।

नज़ीरहसन—तसलीम आपकी इनायत से मैं बहुत अच्छा हूं! यह (शेर खां की तरफ इशारा करके) मेरे दोस्त मिस्टर शेरखां इन्स्पेक्टर शहर हैं, सिर्फ मेरेही नहीं बल्कि वालिद मर्हूम के बड़े दोस्त हैं।

मेम—(शेर खां से हाथ मिला कर) तसलीम इन्स्पेक्टर साहब आप बहुत अच्छे हैं?।

शेर खां—जी हां मैं बहुत अच्छी तरह हूं आप अपनी कहिये।

मेम—मिस्टर नज़ीरहसन! इसवक़्त

हम लोग एक निहायत काबिल-अफ़सोस सिफारत पर आये हैं, मुझे उमेद है कि आप हमलोगों की तकलीफदही माफ करेंगे, एलची को जवाल नहीं होता।

**नज़ीरहसन**—तमहीद की ज़रूरत नहीं मेम साहब ! जो इरशाद फ़र्माना हो शौक से कहिये।

**मेम**—आपके भाई मिस्टर अमीरहसन मेरे दोस्त हैं, मरौवत के ख्याल से वह खुद आपके पास नहीं आये मुझे भेजा है। आप संजीद:ख्याल और आकिल शख्स हैं, देखिये आपस की लड़ाई अच्छी नहीं होती, सदहा घर इस में बिगड़ गये, इस वास्ते यह झगड़ा बतौर खुद तय कर दीजिये। मिस्टर अमीरहसन किसीतरह कोई नावाजिब दर्खास्त नहीं करना चाहते, वह अपना हिस्सा चाहते हैं, उससे न एक पैसा ज्यादा न एक पैसा कम।

**नज़ीरहसन**—शायद आपको मेरे भाई ने यह नहीं बतलाया कि मैं चालीस हज़ार रुपै मिनजुमला अस्सी हज़ार मतरूके वालिद मर्हूम का दे चुका॥

**मेम**—मैं इससे वाकिफ हूं लेकिन मकान – इलाका – फर्नीचर – बर्तन – दुशाले – लिबास – जवाहरात् – जेवरात् – और वो असबाव व जायदाद जो लेडियों के कब्ज़े में हैं मिस्टर अमीरहसन उस सब में अपना हिस्सा चाहते हैं और कानून के रू से वो उसके मुस्तहक भी हैं।

**नज़ीरहसन**—यह मतलब आप की तशरीफआवरी का था, अब मैं समझा, खैर यह भी सही।

**शेर खाँ**—सूप चलनी झाड़ू सब में अमीरहसन अपना हिस्सा लेलें मगर यह तो फर्माइये कि आप कौन? कोई मुख्तारनामा आपके पास है? या आप कोई बारिस्टर हैं? आखिर आप कौन शै हैं?।

**मेम**—इन्स्पेक्टर साहब माफ कीजिये, गुफ्तगू मुझसे और मिस्टर नज़ीरहसन से थी आपको दखल दर माकूलात का कोई हक हासिल नहीं।

**शेर खां**—आप वाकिफ नहीं, मैं इस घर का कदीम निमकपर्वर्द: हूं और मुझे हर किस्म के इख्तियारात हासिल हैं।

**नज़ीरहसन**—वाकई मेमसाहब ! इन्स्पेक्टर साहब का यह फर्माना बहुत

बजा है, आपके पास कोई सनद मेरे भाई की तरफ से नहीं है अगर कोई बात मेरे आपके तय हो जाय और अमीरहसन उसकी पाबन्दी से इन्कार करें तो आपकी मेहनत महज़ बेकार ज़ाया जायगी और मेरा भी मुफ्त में वक्त रायगां होगा, इसवास्ते आप पहले कोई सनद हासिल कीजिये उसके बाद मामले की बातचीत हो।

**मेम** — मिष्टर नज़ीरहसन मैं आप की सलीमउत्तबै की मशकूर हूं आप अगर वादा फर्मायें कि यह कुल मामलात आप तै कर देंगें तो मैं कल या पर्सों अपने नाम मुख्तारनामा हासिल कर के आउंगी या कोई बैरिष्टर साथ लाउंगी। मेरा मतलब सिर्फ यह है कि आप हर किस्म की जायदात का मुफस्सिल हिसाब मुझे समझा दीजिये और जो आप के भाई की याफ्तनी निकले दे दीजिये, कुछ फायदा नहीं कि अदालत में आप और आपकी मां पर बाजाब्ता मुकद्दमा दायर हो कर फरीकैन की बदनामी का बाइस हो।

**शेर खाँ** — मुकद्दमा दायर करने की क्या धमकी देती हो, यहां खज़ाना रक्खा है ले जाइये।

**नज़ीरहसन** — इन्सपेक्टर साहब आप खामोश रहैं मैं किसी तरह अपने भाई का नुकसान करना नहीं चाहता, जो वसीयतनामे के रू से उन्हें मिलना वाजिब होय लें लें। अगर मैं हिसाब से ज्यादा दे चुका हूं मुझे वापस न दें अगर उन्हों ने कम पाया हो मैं आज देने को तयार हूं। मेमसाहब! आप को नालिश की धमकी देने की एहतियाज नहीं है मैं अपने भाई का आशिकज़ार और जांनिसार हूं; अफसोस कि मुफसिदों ने उनको मेरी तरफ से भड़का दिया मुझ को रुपए की मुतलक परवाह नहीं, वोह चाहैं मेरा भी हिस्सा ले लें लेकिन मुझ से मोहब्बत न तर्क करें।

**मेम** — मैं एक मर्तबा आप की इनायत और इखलाक का फिर शुक्रिया अदा करती हूं, इन्शाअल्ला यह मामला जल्द तै हो जायगा अगर मैं किसी तरह आप के काम आ सकूं तो अपने को खुशनसीब समझूंगी।

**शेर खाँ** — आप की इनायत दूर-ही से काफी है।

मेम साहब मामूली साहब सलामत के बाद रुखसत हुईं और दूसरे दिन

दस बजे फिर आने का वादा करगईं।

शेर खाँ — क्या अभी और कुछ इन बे-फिकरों के वास्ते देने का इरादा है ?।

नज़ीरहसन — जो वाजबी हिस्सा उनका हो मैं इस वक्त देने को तैयार हूं, चाहे वह खुद सर्फ करें या बे-फिकरों को दे दें; वसीयतनामे की रू से कुल जायदाद मनकूला और गांव अम्मां जान को वालिद मर्हूम दे गये हैं उस्में उनकी जिन्दगी भर न मेरा कुछ हक है और न अमीरहसन का, नक्द रुपया निस्फ २ हम दोनों भाइयों का था वोह मैंने अपने हिसाब पांच हज़ार ज्यादा उन्हें दे दिया अब मालूम नहीं बैरिष्टर साहब, मेमसाहब या अदालत जो कोई हिसाबफ़हमी करेगा तो और मुझसे क्या दिलायेगा।

शेर खाँ — अफसोस! बदमाश मिल कर लौंडे को खराब कर रहे हैं आप हर्गिज़ बगैर मेरे आये कल गुफ्तगू न शुरू कीजियेगा मैं दस बजे ठीक पहुंच जाऊंगा।

——※——

## दसवाँ बाब।

### वकील की तलाश

मिसेज़ व्हील और हिदायतरसूल नज़ीरहसन की बातचीत से मदहूश और मसरूर गये। उन्हें यह पूरी उम्मेद पैदा हो गई कि नज़ीरहसन से कुछ न कुछ ज़रूर वसूल हो जायेगा।

मेम — अगर इस वक्त वह कमबख्त इन्सपेक्टर मौजूद न होता तो उसी वक्त सब मामला तै हो जाता।

हिदायतरसूल — इसमें शक नहीं आपकी दवागत-आमेज़ गुफ्तगू का नज़ीरहसन पर बहुतही अच्छा असर पड़ा था मगर उस मुफसिद ने कितना बारीक नुक्ता निकाला, वाकई पुलिस वाले बड़े शरीर होते हैं।

मिसेज़ व्हील—फिर अब क्या राय है? चलो अमीरहसन से कुल किस्सा ब्यान कर आयें उनसे कुछ रुपे इस वक्त लेना चाहिये उसको दे कर कल के लिये बैरिष्टर का इन्तज़ाम किया जाये अगर तुम्हारी राय हो तो कोई हिन्दुस्तानी वकील दो चार सौ दे कर मुकर्रर कर लियाजाये बशर्तें कि हज़ार पन्द्रह सौ की रसीद देने में उसको तामुल न हो।

हिदायतरसूल—वल्ला! क्या सूझी है, मैं इसका बखूबी इन्तज़ाम करलूंगा बिलफैल कमसे कम पांच हज़ार ऐंठिये

पांससौ वकील के लिये, पन्द्रह सौ मेरे, बाकी आपके।

मेम — मैं समझती हूं अमीरहसन इन्कार न करेंगे और देखो आज पहिले पहल मैं उनके मकान पर जाती हूं।

हिदायतरसूल — मजाल है इनकार करे, वल्ला! तुम्हारे ऊपर उसकी जान आ रही है। कल मुझसे पूछते थे कि तुम्हारी तवारीख क्या है मैंने निहायत लच्छेदार तकरीर में ब्यान कर दिया कि सरजान गार्स्टन की बेटी है लार्ड चार्लस से तुम्हारी शादी ठहरी थी मगर एक लोहार के साथ तुमने लड़कपन में ब्याह कर के कुल मामला खराब कर दिया और वोह लौंडा भी मर गया।

मेम—तोबह तोबह! तुम भी किस दर्जह शरीर हो, ख्वाहमख्वाह मुझे लोहार की जोरू बनादिया; मेरा प्यारा शौहर वहां मैं इस वक्त तक मौजूद है मगर इस शहर में मेरे किस्से से सिवा तुम्हारे कोई नहीं वाकिफ।

हिदायतरसूल—खूब! लोहार की जोरू बने से खफा हुईं और बेरोनेट् की लड़की बने का जिक्र ही नहीं।

मेम — कुछ ही हो अगर मुझ से पूछेंगे तो मैं भी वोही कहूंगी जो तुम ने ब्यान किया है, अमीरहसन बहुत अच्छा आदमी है मुझे उसकी बातें सूरत और अन्दाज सब पसन्द हैं, अफसोस रुपया नहीं।

हिदायतरसूल — ज़र अजीब चीज़ है, आपने सुना नहीं 'बेज़र ढ़ेंक टें टें' मियां के पास चालीस हज़ार रुपया है और बीसही पचीस हज़ार कर्ज़ा है।

मेम — अब चालीस हज़ार बार २ क्यों कहते हो, इस वक्त पैंतीस हज़ार रह जायगा। हिदायतरसूल! किसी तरह यह रुपया भी मुझे दिलवा दो कर्ज़दार अमीरहसन से लेते रहेंगे और मेरा काम निकल जायगा।

हिदायतरसूल — कोई तर्कीब बतलाओ तो उसकी भी कोशिश की जाये।

मेम — तर्कीब यह है कि आज मुझे पांच हज़ार दिलवा कर शाम को ट्रेल से उसके रुपये का बिल भेजवा दो और अमीरहसन से यह कहो कि अगर रुपया तुम्हारे पास रहेगा या बंक में रहेगा तो ट्रेल वसूल कर लेगा, ज़रूरत के वक्त तकलीफ होगी, मिसिज

हील के नाम बेची कर दी जब जुरूरत हो मेम साहब से ले लिया करना।

हिदायतरसूल — वाकई तर्कीब उम्दा ज़ेहन में आई खुदा चाहता है तो कलही वारा न्यारा है।

मिस्टर अमीरहसन सुबह से मुन्तज़िर थे और बार बार आदमी दौड़ाते थे कि मेमसाहब नज़ीरहसन के यहां से वापस हुईं या नहीं, थोड़ी देर में बेयरा ने मिसेज़हील का कार्ड दिया। उसवक्त की खुशी अमीरहसन तमाम उम्र नहीं भूल सकते—बज़बाने हाल यह शेर पढ़ते थे—

हमनशीं जब मेरे ऐयाम भले आएंगे। बिन बुलाए हुए वह आप चले आएंगे॥

अमीरहसन फ़ौरन् बाहर निकल आए और दरवाज़े से मेमसाहब को लेकर अन्दर गये, इस दर्जे रेशाखतमी और ग़बन ग़बन थे कि सिवाय शुक्रिया के अलफ़ाज़ के दूसरी बात न निकलती थी।

अमीरहसन—शेर-

वह आएँ घर में हमारे खुदा की कुद्रत है। कभी मैं उनको कभी अपने घर को देखता हूँ॥

मेम — मैं इस वक्त तुम्हारे भाई के पास से आ रही हूँ।

अमीरहसन — हां-अब काम में किसतरह आपका शुक्रिया अदा कर सकूं।

मिसेज़ हील—मेरा शुक्रिया उस वक्त अदा करना जब मेरी कोशिश कारगर हो जाये, मैं अभी वहीं से चली आ रही हूँ, नज़ीरहसन ने पहिले साफ़ जवाब दिया बल्कि उन्होंने यह कहा कि तुम अपने हिस्से से ज्यादा रुपया पा चुके, मगर मेरे सवालात ऐसे बेढब थे कि वह जवाब न दे सके; उन्होंने शेरखां कोतवाल को बुला भेजा। उस खौफ़नाक शख्स ने यह क़ानूनी बहस पेश की कि मेरे पास कोई मुख्तारनामा नहीं बगैर सनद के क़ायममुक़ामी कैसी ? मैं इस पर चुप होरही अब कल दस बजे फिर रूबकारी है, मैं इसी वक्त जाकर कोई लायक वकील मुकर्रर करती हूं जो सवाल व जवाब में उस मुफ़सिद कोतवाल को नीचा दिखा सके।

हिदायतरसूल—हुजूर आज मेम साहब ने क़यामत ढा दी, वह २ सवाल किये कि सब बगलें झांकते थे मगर मुख्तारनामा न होने से मजबूर रहगईं।

अमीरहसन — आखिर किस क़द्र

मिलने की उमेद है ?।

हिदायतरसूल—असली तादाद तो हिसाब किताब की जांच से मालूम हो सकेगी मगर मेरे अन्दाज में कम से कम चालीस हज़ार और।

अमीरहसन—चालीस हज़ार ! —
या रब ईं आर्जूए मन चे खुश अस्त,
तू बदीं आरजूम बेरसां।

मिसेज़ स्टील—अब ज्यादा वक्त नहीं है, मैं इसी वक्त जाती हूं किसी लायक वकील से मिल करके कुल मामला समझा आऊंगी।

हिदायतरसूल—मेमसाहब ! आप की इनायत के हम लोग एहसानमन्द हैं, वकील का खर्चा हर्गिज़ हम लोग आप को न देने देंगे।

अमीरहसन—मिसेज़ स्टील ! आप तकलीफ न करें, बेशक जिस कदर रुपया इसमें सर्फ हो मुझसे लीजिये यह काम मेरा है।

मिसेज़ स्टील—मिस्टर हसन ! मालूम नहीं क्यों मैं अपना कुल रुपया अपनी कुल दौलत और खुद अपने को आपही की मिल्क समझती हूं, पांच हज़ार में मैं ग़रीब न हो जाऊँगी यह रुपया मुझी को देने दो।

हिदायतरसूल—हर्गिज़ नहीं आप के पास जो रुपया है वह किसी और वक्त काम आएगा इस वक्त आप तकलीफ़ न फ़र्माएं।

अमीरहसन ने फ़ौरन् बकस में से चेकबुक निकाली और बंक के नाम बग़ैर ज्यादा सवाल व जवाब के पांच हज़ार रुपए का चेक मिसेज़ स्टील का याफ़तनी लिख दिया। मिसेज़ स्टील ने मामूली इन्कार और इसरार के बाद थैंक्स कह कर चेक जेब में रक्खा और हिदायतरसूल को साथ लेकर फिर रवाना हुईं। हिदायतरसूल और मेमसाहब दोनों आज की कारगुज़ारी से बहुत खुश थे। मेमसाहब तो अपने बँगले तशरीफ़ लेगईं और हिदायत रसूल वकील की तलाश में निकले। शहर के मुअज्ज़ज़ीन वकला और बैरेस्टर हिदायतरसूल के जाने बूझे थे उन से यह उमेद न हो सकती थी कि थोड़ा सा रुपया ले कर ज्यादा की रसीद लिखदें इसवास्ते उन लोगों के पास जाना भी हिदायतरसूल ने फ़ुज़ूल समझा। मुफ़्ती करीमुल्लाह एक पुराने फ़ैशन के वकील हिदायतरसूल के पड़ोसी थे, सिवा अर्जियों पर शिना-

ख्त करने या रजिष्टरी में शिनाख्त की गवाही देने के और कोई उनका पेशा न था, मुश्किल से बीस पचीस रुपया माहवार की उन्हें आमदनी थी। हिदायतरसूल ने उन्हीं को इस काम के वास्ते तजवीज़ किया।

हिदायतरसूल—(दर्वाज़े पर पहुँच कर) 'वकीलसाहब! ज़रा बाहर तशरीफ लाइये'।

वकील—क्या कोई शिनाख्त लिखानी है? कौन साहब हैं?।

हिदायतरसूल—बाहर आइये तब काम बतलाऊंगा।

वकीलसाहब बाहर आये, बाहर की दालान में एक टूटा सा तख्त बिछा था उस पर एक मैला सा कालीन और मुरादाबादी हुक्का रक्खा था। हिदायतरसूल को वकील साहब ने बखातिरदारी तमाम बैठाया और अन्दर से एक पान लेते आये थे वोह नज़्र किया।

हिदायतरसूल—वकीलसाहब! चन्द घण्टे के लिये आप को एक मेमसाहब के हमराह कहीं चलना होगा, दो सौ रुपये दूंगा लेकिन पांच हजार की रसीद आपको लिखनी पड़ेगी, अगर मंजूर हो तो इसी वक्त मेरे साथ चलिये।

वकील—जनाब दो सौ बहुत कम हैं मेरी हैसीयत के लिये तो बहुत ज्यादा हैं मगर रसीद के देखते हुये बहुत कम हैं और अलावा इसके मैं बुढ्ढा आदमी मेमसाहब के पास मुझे क्यों ले जाइयेगा!।

हिदायतरसूल—मैं समझा था कि आप मुसलमान आदमी हैं और पड़ोस में रहते हैं आपही को फायदा पहुँचे, अगर नामंज़ूर है तो मैं इसी वक्त जाकर किसी और को ठहरा लूंगा। यह तो ख्याल कीजिये इस रुपये में न आपको कोई दहेक देनी है न कमीशन देना है न कहीं रूबकारी करनी है और न कोई काम है चन्द मिण्ट में दो सौ रुपये मिलते हैं आप खुदा का शुक्र नहीं करते। रहीं मेमसाहब उनसे आप न डरिये चश्म बद दूर आपकी उम्र बहुत कम है।

वकील—बहुत बेहतर मुझे मंज़ूर है लेकिन—यह समझ लीजिये बखूबी, पीछे को कोई फिसाद न पड़े।

हिदायतरसूल—क्या आप मुझे लौंडा जानते हैं, हजरत मैंने कची गोलियां नहीं खेलीं हैं।

अलगरज़ वकीलसाहब ने एक ऐन-

क हाथ में ली और हिदायतरसूल के हमराह मेमसाहब के यहां पहुँचे। मेम साहब से मुलाकात हुई कुल मरातिब उनके गोशगुज़ार किये गये और दो सौ रुपये देकर उसी वक्त पांच हज़ार की टिकेटचस्पां रसीद हासिल की गई।

**मेम** — हिदायतरसूल वकील को यहीं रहने दो और तुम जा कर मुख़्तारनामा लिखा लाओ।

वकील साहब ने खुद एक कागज़ पर हस्ब ज़ैल मुख़्तारनामा लिखा और दस्तखत के लिये हिदायतरसूल के हवाले किया।

## मुख़्तारनामा।

मन्के सैयद अमीरहसनखां वल्द सैयद काज़िमहुसैनखां बहादुर साकिन शहर अकबराबाद उर्फ आगरा मुमालिक मग़रबी व शुमाली का हूं चूंके दरबारह फ़हमीदगीये हिसाब व किताब व तकसीम जायदाद मतूरके पिदरी मन्कूला व गैरमनकूला असबाब व ज़ेवरात व जवाहरात वगैरह दर्मयान मेरे और मेरे भाई मुसम्मी सैयद नज़ीरहसन के व तनाज़आत चन्द दरचन्द बर्पा हैं इस वास्ते मुफ्ती सैयद करीमुल्ला साहब वकील अदालतआलियह अर्ज़ी को अपना वकील बखुशीये खातिर व बिला जब्र व एकराह मुकर्रर करके इकरार करता हूं कि वकीलसाहब मौसूफ जो कुछ सवाल व जवाब करें या जो तसफीया करदें या जो रुपये लेकर तै करदें ख्वाह रसीद लिख दें वोह सब मुझको कबूल व मंजूर होगा। वकीलसाहबका किया धरा सब करदह ज़ात खास मुतसौव्विर होगा फिर मुझको किसी किस्म का दावा या मतालबा बाकी न रहेगा। लेहाज़ा बाद देने मुबलिग पांच हज़ार रुपे नकद मेहनताना के यह मुख़्तारनामा लिख दिया कि सनद रहै और काम आवे फक्त, अलमकूम।

हिदायतरसूल ने रसीद भी वकील साहब से पांच हजार की लिखवा कर अपने कब्जे में की और मुख़्तारनामा दस्तखत के लिये अमीरहसन के पास लाये।

**अमीरहसन**—कहां से आ रहे हो?

**हिदायतरसूल** —सिवा मेमसाहब के बँगले के और कहां से आता, यह लीजिये मुख़्तारनामा है दस्तखत कर दीजिये और यह वकील साहबकी रसीद है अपने पास रख लीजिये।

**अमीरहसन** — मुझे रसीद की क्या जरूरत है ?।

**हिदायतरसूल** — गो जरूरत न हो मगर हिसाब साफ रखना चाहिये सिर्फ हुजूर के इतमीनान के लिये बज़ाबता रसीद ली गई।

**अमीरहसन** — मगर मौलवी करीमुल्ला कोई नामी वकीलों में नहीं हैं मेमसाहब ने उन्हें क्यों तज़वीज़ किया और इतना मेहन्ताना उन्हें क्यों दे दिया।

**हिदायतरसूल** — मुफ्ती करीमुल्ला मिल गये इसको ग़नीमत समझिये, शेरखां कोतवाल के डर से इस वक्त कोई वकील या मुख्तार नजीरहसन के खिलाफ कोई मुकद्दमां नहीं ले सकता और आप मौलवी करीमुल्ला को समझे क्या हैं बड़े २ नामी मुकद्दमात में सिवा उनके दूसरा नहीं पूछा जाता।

**अमीरहसन** — मैंने कभी उनका नाम भी नहीं सुना।

**हिदायतरसूल** — आपको इत्तफाक कहां हुआ, जब चौधरी खुसलत रसूल मर्हूम पर मुकद्दमा कायम हुआ था मौलवी करीमुल्ला ने ऐसी रोबकारी की कि शायद व बायद।

अलगरज़ मिस्टर अमीरहसन ने मुख्तारनामे पर दस्तखत कर दिया और हमारे दोस्त फिर मेमसाहब के दौलतखाने पर वापस आये, वह दिन खुदा२ करके खतम हुआ रात भी कटी दूसरा दिन नमूदार हुआ। मौलवी करीमुल्ला सफेद पगड़ी नैनू की अचकन नैनसुख का चूड़ीदार पायेजामा और डोरिये की अबा पहने मिसेज़ शील के हमराह सैयद नज़ीरहसन के मकान पर वक्त मोआइना पर पहुंचे बुलाये गये, शेर खां कोतवाल और सैयद नज़ीरहसन पहिले से मुन्तज़िर बैठे हुये थे।

**मिसेज़शील** — मिस्टर नजीरहसन मैं आज अपने साथ आपके भाई का वकील लाई हूं जिनको कुल अखतियारात हासिल हैं आप मेहर्बानी करके कुल हिसाबात मुलाहिज़ा करा दीजिये।

**शेरखां** — जरा मुख्तारनामा तो दिखलाइये।

वकीलसाहब ने जेब में से वकालतनामा निकाल कर दिखाया।

**शेरखां**—वाह मौलवीसाहब ! बड़े मजे में रहे पांच हज़ार तो शायद फो-

पकी तमाम उम्र की मजमूई कमाई भी न होगी।

**मिसेज़ होल** — मैं आप लोगों से इल्तिजा करती हूं कि सिवा मुआमिले की बात चीत के वाहियात गुफ्तगू में औक़ात ज़ाया न कीजिये कोतवाल साहब को इससे क्या तअल्लुक़ कि हमारे वकील ने क्या पाया और क्या नहीं पाया!।

**शेरखाँ**—मेमसाहब मुझसे तड़तड़ न करिये, मेरा सब से तअल्लुक़ है और किसी से भी नहीं, आप जानती नहीं हैं मैं खुदाय फौजदार हूं।

**नज़ीरहसन** — बहुत अच्छा मेम साहब, मुआमले ही की बातचीत शुरू कीजिये।

**करीमुल्लाह** — यह फ़र्माइये कि सैयद काज़िम हुसैन खां मर्हूम ने कुल किसक़द्र जायदाद छोड़ी और उसमें मेरे मुअक्किल का कितना हिस्सा है और किसक़द्र वसूल हो चुका और किसक़द्र बाक़ी है?।

**नज़ीरहसन**—वसीयतनामा मुलाहजा फ़र्माइये इसके रू से कुल जायदाद मन्‌कूल: मय मकाने मस्कूना व असबाब वगैरह ताहयात वालिदा सुकरेमा किसी को पाने का इस्तहक़ाक़ नहीं। अस्सी हज़ार रुपया नक्द जो बंक में था, उसमें निस्फ २ हम दोनों भाइयों को वालिद मर्हूम दे गये, चुनांचे चालीस हज़ार आपके मोअक्किल को मिल चुके।

**मिसेज़ होल**—और जवाहिरात व ज़ेवरात वगैरह?

**नज़ीरहसन**—कोई जवाहिरात या ज़ेवरात वालिद मर्हूम ने नहीं छोड़े जो ज़ेवर जिस औरत के इस्तेमाल में हैं उसी की मिल्क हैं।

**मिसेज़ होल**—जो ज़ेवरात आप की वालदा के पास हैं उनमें निस्फ हमारे मोअक्किल को मिलना चाहिये।

**नज़ीरहसन**—बेशक, मगर उनकी ज़िन्दगी भर नहीं।

**मिसेज़ होल**—आप यह तस्लीम करते हैं कि ज़ेवरात व जायदाद जो आपकी वालदा के कब्ज़: में है बाद उनके इन्तक़ाल के निस्फ २ तकसीम हो जाँयगी।

**नज़ीरहसन**—बेशक।

**मिसेज़ होल** — तारीख़ इन्तक़ाल तक जो पेंशिन बरामद हुई उसमें आप ने भाई का हिस्सा क्यों नहीं दिया?।

**नज़ीरहसन** — २१२) मिले हैं १०६) ले कर रसीद दे दीजिये।

**मिसेज़ ह्वील** — आप के वालिद मर्हूम ने जो कपड़े और दुशाले छोड़े वह क्या हुये ?।

**नज़ीरहसन**—सब मौजूद है, अमीरहसन का जी चाहे इस वक्त ले लें।

**मिसेज़ ह्वील**—बहुत बेहतर उनके हिस्से के कपड़े और दुशाले अलाहिदा कराइये, परसों जान कम्पनोकी दूकान पर फ़रोख्त करवा लिये जायगे।

**नज़ीरहसन**— यह ज़िल्लत मैं गवारा नहीं कर सकता आप जो कीमत अन्दाज़ा करें मैं दे दूंगा।

**शेरखां** — सैयद साहब मर्हूम के कलमदान और जूते की कीमत क्या हुई ? खूब चे खुश।

**मिसेजह्वील**— मैं आपको फैयाज़ और नेकनीयत समझती हूं आपही बतलाइये क्या कीमत होगी।

**नज़ीरहसन** — मेरे नज़दीक कुल कपड़े और दुशाले कम से कम चार हजार के होंगे।

**मिसेजह्वील** — दो हज़ार अपने भाई का हिस्सा अलग कीजिये, अगर आप कीमत दे दें तो हमको कपड़ों की ज़रूरत नहीं है।

**नज़ीरहसन** — बहुत बेहतर मैं दाम दे दूंगा। इसीतरह हर चीज़ की तफ़्तीश हुई और तीन हज़ार चार सै बारह रुपै, नज़ीरहसन ने अमीरहसन का याफ्तनी कबूल किया, मकान व गांव व ज़ेवरात मकबूज़ बेगम साहबा इसके इलावा, क्योंकि ज़िन्दगी भर बेगमसाहबा अज़रूये वसीतनामा उसकी मालिक थीं।

**मिसेज ह्वील** — आप मेहर्वानी फर्मा कर यह रुपये मुझे दे दीजिये और एक इकरारनामा लिख दीजिये कि फलां २ जायदाद में आपके भाई का हिस्सा महफूज़ है।

**नज़ीरहसन**— बहुत अच्छा, रुपए की रसीद दे दीजिये और मैं स्टाम्प मँगाकर इकरारनामा लिख दूंगा। मैं अपने भाई का एक ज़र्रह बराबर नुकसान नहीं करना चाहता।

**मिसेज़ ह्वील** — आप वह हकूक जो आपके भाई को हासिल हैं उन्हें खरीद कर सकते हैं या नहीं ? शायद मिस्टर अमीरहसन अपने हकूक फरोख्त करना चाहैं।

**शेरखां** — हां हम हकूक खरीद

लेंगे, लेकिन इस वक्त नहीं, दस पांच रोज़ बाद। वकीलसाहब को आप कल भेज दीजिये इकरारनामा तहरीर हो जाय रजिस्ट्रार बुलाये जायेंगे रजिस्ट्री भी हो जायगी।

**मिसेज़ होल** — मगर मेहर्बानी से रुपये इसी वक्त दिलवा दीजिये और मामलात पीछे से तै होते रहेंगे।

**करीमउल्ला** — जनाब अगर आप के वालिद माजिद का मतरूका कोई खुशनुमां हुक्का हो तो वह मुझे इनायत कीजिये मुझे एक मुरादाबादी हुक्के की निहायत ज़रूरत है!

**नज़ीरहसन** — बहुत बेहतर कल आप तशरीफ लाइयेगा एक इकरारनामा आपको भी रजिस्ट्री कराना होगा।

**शेरखां** — इकरारनामे की रजिस्ट्री का आपको अखतियार है ?।

**करीमउल्ला** — कानूनन् वकालत नामा के ज़रिये से दस्तावेज़ रजिस्ट्री नहीं हो सकती।

**शेरखां**—जनाब मेमसाहब! पहिले बज़ाबता रजिस्ट्री शुदह मुख्तारनामा हासिल कीजिये उसके बाद रुपये लीजिये अभी नहीं मिलसकता क्योंकि रसीद देने का वकीलों को अख्तियार नहीं है।

**नज़ीरहसन** - वाकई यह कानूनी एतिराज़ है जब तक यह रफ़ा न हो मैं रुपये देने से मजबूर हूं।

**शेरखां** — अगर मियां अमीरहसन को इस घर में आते शरम आती है तो इसपेशल सबरजिष्ट्रार को बंगले पर बुलवा कर रजिस्ट्रीशुदह वकालतनामा हासिल कर लीजिये वोही सबरजिष्ट्रार यहां चले आवें, मियां नज़ीरहसन का भी इकरारनामा रजिस्ट्री कर दें।

**नज़ीरहसन** — मेमसाहब मैं आप का शुक्रगुज़ार हूं कि आप के सबब से हमेशा के लिये यह खानगी झगड़ा तै हुआ जाता है, मेरी तरफ से न कोई तनाज़ा था न है और न होने का खौफ़ था मगर शुक्र है इस इन्तज़ाम की वजह से अमीरहसन को भी मेरी तरफ से कोई बदगुमानी का मौका बाकी न रहेगा।

**मिसेज़ होल** — हां इसी वजह से मैंने यह सब तकलीफ गवारा की, मेरा इसमें ज़ाती मतलब क्या है कुछ नहीं, सिर्फ आपही लोगों के फायदे की गर-

ज़ से मैंने यह ज़हमत उठाई।

**करीमुल्ला** — अच्छा फिर इस वक़्त रुख़सत कीजिये। कल दस बजे इनशा-अल्ला हाज़िर हूंगा।

**मिसेज़ स्टील** — बहुत बेहतर —

वहां से सब लोग रुख़सत होकर सीधे अमीरहसन के पास आये सब हाल बयान किया। कुल जायदाद में हिस्से के कायम हो जाने की खुश-ख़बरी दी।

**अमीरहसन** — कुल जायदाद में याने वाल्दा के ज़ेवरात वगैरह में भी?

**मेम** — जी हां, और इलाका मकान ज़िमींदारी में भी।

**अमीरहसन**—अल्ला तेरा शुक्र है। नज़ीरहसन तो मुझे तबाही कर डालते अगर यह फ़िरिश्तहतबीयत लेडी ग़ैब से मेरी मदद के लिये खड़ी न हो जाती।

**मेम** — मैं बेचारी क्या कर सकती थी। सच यह है कि वकीलसाहब ने भी ख़ूबही तकरीर की और शेरखां ऐसे मुंहफट का मुंह बन्द कर दिया।

**अमीरहसन** — वोह मर्दूद क्या आज भी मौजूद था?।

**मेम** — जी हां। सिर्फ मौजूद ही न था बल्कि अपनी शरारत से बाज़ न आता था। उसी ने फिर मुख़्तारनामे के रजिस्टरीशुदह होने का बखेड़ा पैदा किया। आप आजही मुख़्तार-नामा रजिस्टरी करा दीजिये ताकि कल फ़ैसला हो जाए।

———※———

## बाब ग्यारहवाँ।

॥ वकीलसाहब की दियानतदारी ॥

**अमीरहसन**—मुख़्तारनामा रजि-स्टरी शुदह की क्या ज़रूरत है क्या कोई दस्तावेज़ वकीलसाहब को मेरी तरफ़ से लिखना होगा?।

**मेम** — जी हां। अगर पूरी कीमत मिल सके तो मैं आपके कुल हकूक जो आइन्दा पैदा होनेवाले हैं नज़ीरह-सन के हाथ फ़रोख़्त कर डालूंगी। वरना दीगर जायदाद के एवज़ में जो रुपये मिलनेवाले हैं वह वसूल कर लूंगी और बकीया हकूक जिस हालत में है वैसेही छोड़ कर नज़ीरहसन से ज़रूरी इकरारनामा लिखवा लूंगी।

**अमीरहसन** — बहुत बेहतर।

अमीरहसन उसी वक़्त वकीलसाहब को साथ लिये हुए दफ़्तर सबरजिस्ट्रार में गये वहां दो बजे का वक़्त मुकर्रर था

हरचन्द वहां भी अमीरहसन ने जेन्टिलमैनी दिखलाई और चाहा कि फ़ौरन् रजिस्टरी हो जाए लेकिन सब रजिस्ट्रार ने जो इत्तफ़ाक़ से बङ्गाली था एक न सुनो। आख़िरकार ढाई बजे मुख़्तारनामा आम जिसमें कुल अख़्तियारात् इन्तक़ाल-जायदाद व बै व रेहन व इन्तकाल-हक़ूक़ जो अब हासिल हैं या आयन्दा पैदा हों दर्ज थे, मौलवी करीमुल्ला के हक़ में रजिस्टरी करा दो।

अमीरहसन — लीजिये मौलवी साहब ! अब आप मेरे आम मुख़्तार हो गये जो मुनासिब समझिये कीजिये।

करीमुल्ला — मैं इन्शाअल्ला अल-अज़ीज़ कुल अमूरात बदयानत तमाम अंजाम दूंगा आप इत्मिनान रक्खें।

अमीरहसन अपने बङ्गले पर तशरीफ ले गये और हमारे मौलवी करीमुल्लासाहब मुख़्तार आम मैं दस्तावेज़ रजिस्टरीशुदह अपने मकान पर गये। वकीलसाहब की बीबी दिन भर की ग़ैरहाज़री से बहुत मुतफ़क्किर थीं कि आज मियां कहां चले गये।

बीबी — आज सुबह से तुम ग़ायब थे। मुझे सख़्त तरद्दुद था, खैर तो है।

वकील — बीबी मैंने बड़ा भारी शिकार मारा। यह तो दो सौ रुपै नक़द एक मुक़द्दमे में मिले हैं और खुदा चाहे तो अभी बहुत कुछ मिलने की उम्मेद है।

बीबी—दो सौ रुपै ! ऐ रब्बकरीम तेरा लाख २ शुक्र है ऐहसान है ! लड़की के ब्याह की मुझे इतनी फिकर थी कि रात २ नींद न आती थी। अब अल्ला इस बार से भी हमको सुबुकदोश कर देगा। लेकिन यह तो बतलाओ कहां से यह रकम पाई ? इक्कीस बर्स मुझे भी इस घर में हुये दो रुपै से ज्यादा एक दिन भी तुमने नहीं दिये आज एक बारगी यह रकम कहां पाई ?।

वकील — काज़िमहुसेन सदराऽला मर न गये उनके लड़कों में तकरार है छोटा लड़का मुफ़सिदों के हाथ में फंस कर कुल दौलत बर्बाद कर रहा है उसमें दो सौ रुपै मेरे हाथ भी चढ़ गये।

यह बातें होरही थीं, रात अंधेरी थी आठ बजे का वक़्त था बाहर से आवाज़ आई।

आवाज़ - वकीलसाहब ! पिछवाड़े की तरफ छिपकर आइये आपके फ़ायदे का सामान है।

वकील — आप कौन साहब हैं ?। दर्वाज़ा छोड़ कर पिछवाड़े क्यों बुलाते हैं ?।

• आवाज़ — दर्वाज़े पर मिलने में आपही का नुकसान है, देर न कीजिये मैं पिछवाड़े जाता हूं खिड़की खोल. कर फौरन् निकल आइये।

बीवी — जाओ देखो कौन है और क्या मामला है, खुदा चाहेगा तो कुछ और मिलेगा।मेरी बाईं आंख आज कई दिन से फड़क रही थी और हथेली खुजला रही थी। ऐ खालिक बे नेआज़! तेरा शुक्र है।

वकीलसाहब फौरन् बाहर गये। देखते क्या है कि शेरखां कोतवाल एक फकीर के लिबास में कम्मल ओढ़े खड़े है।

वकील —कौन ? कोतवालसाहब ? खैर तो है ?।

शेरखाँ — देखिये मुझे इस वक्त कोतवालसाहब न कहिये। हां खैरियत है, कहिये आपका मुख्तारनामा रजिस्टरी हो गया ?।

वकील — जी हां और निहायतही वाजह शरायत उसमे दर्ज हैं।

शेरखाँ — यह बतलाइये कि आप को सब अमीरहसन से कितना मिला? मै दोस्ताना पूछता हूं।

वकील — भाई मुझे तो सिर्फ दो सौ मिले। गो बेईमानों ने विचारे से पांच हजार रुपये लेलिये। मुझसे देखिये रसीद भी पांच हज़ार की लिखवा ली। मैं यह समझा कि अगर रसीद नहीं देता हूं तो ये दो सौ भी जायेंगे। वकील शख्से 'जाता धन देखिये तो आधा दीजे बांट'।

शेरखाँ— क्यों, आपने तो आधा भी न पाया बलकि करीब २ सबही दे दिया।

वकील — करता क्या, मजबूरी थी अमीरहसन उस मालज़ादी और हिदायतरसूल के हांथ में है।

शेरखाँ—अगर मैं पांच सौ रुपै आप को दिलवा दूं तो शुक्रगुज़ार हूजियेगा।

वकील — शुक्रगुज़ार वल्ला! बन्दा बेदिरम हो जाऊंगा। मेरी दुख्तर १७ बरस की होगई उसकी शादी करना है और कहीं एक पैसे का ठिकाना न था, यह दो सौ जो मिले हैं हर्गिज़ शादी के मुसारफ को काफी नहीं है अगर आप की बदौलत कोई दूसरी रकम मिल जाय तो कुल फराएज़ नि-

हायत उम्दगी से अदा हो जायँगी।

शेरखाँ—कहीं आड़ में चलिये यहां कोई आ जायगा तो सब राज़ अफ़्शां हो जायगा।

वकील — आप ठहरिये मैं घर में पर्दा करा के आपको अन्दर ले चलूं। वहीं ब इत्मीनान तमाम सब बातें तै हो जाँयँगी।

शेरखाँ — बहुत बेहतर।

वकील ने अन्दर आकर बीबी को दूसरी तर्फ के मकान में कर दिया और शेरखां को अन्दर बुला ले गये। चारपाई पर दोनों साहब बैठे हैं हुक्का सामने धरा है और खासदान में पानकी गिलौरियां रक्खी हुई हैं।

शेरखाँ — आप भी वकीलसाहब मर्द शरीफ हैं किसी भले आदमी का घर बिगाड़ना पसन्द न करेंगे।

वकील — हज़रत् क्या कहूं मुझे कल से जो रंज है, यह बदमास कुल रुपये बर्बाद करा देंगे। बेचारा अमीरहसन इस दर्जा सीधा और बेवकूफ़ है कि उस मेम और हिदायतरसूल के हाथों कठपुतली का नाच नाच रहा है मोम की नाक हो रहा है जिधर फेरते हैं फिर जाता है।

शेरखाँ — और नज़ीरहसन देखिये किस कद्र नेक है अपने भाई पर हज़ार जान से शैदा और जांनिसार है किसी तरह उसकी नीयत में दग़ा नहीं है।

वकील — मैं खूब जानता हूं अगर उनकी नीयत में फिसाद होता तो चालीस हज़ार इस तरह हवाले न कर देते।

शेरखाँ— मैं यह भी आप से इमानन् कहता हूं कि नज़ीरहसन भी इस वक्त की हर्कत से ना-वाकिफ हैं और इंशाअल्ला तमाम उम्र नावाकिफ़ रहैंगे सैयद काज़िमहुसैनखां मेरे कदीम दोस्त थे और मुझपर उनके एहसान हैं उनके इन्तकाल के बाद अगर मैं उनके ख़ान्दान की बर्बादी किसी तरह रोक सकूं तो अपने को खुशनसीब समझूंगा, अगर आप मेरी मदद फर्मायें तो सब इन्तज़ाम मुमकिन है।

वकील—क्यों कर? मैं हर तरह तैयार हूं बशर्ते कि मुझपर कोई इल्ज़ाम न आये।

शेरखां — कल जब फिर पंचायत होगी मैं दुशालों की कीमत और पेन्शिन वाला रुपया दिलवा दूंगा! जो जेव-

रात व असबाब व इलाका व ज़िमींदारी है आप उस वक्त उसको भी फारखती लिख दीजिये कि अमीरहसन को आइन्दह कोई मुतालबा किसी क़िस्म का बाक़ी न रहे। पांच सौ रुपये मैं आप की नज़र करता हूं और ब खुदाये काबा यह रुपया मैं अपने पास से दे रहा हूं। आप भी मुलाहज़ा फर्मायें कि इस वक्त अगर अमीरहसन को दो लाख रुपये भी मिल जायें तो उन्ही पाजियों के नज़र हो जायेंगे। इस लिये उनको रुपये देना कूयें में डालना है अगर नज़ीर हसन के पास बचा रहेगा तो जब अमीरहसन अपने होश में आवेंगे और अपनी हिमाकतों से आगाह होंगे उस वक्त उन्हीं के काम आयेगा, और उस वक्त अमीरहसन यक़ीनन् शुक्रगुज़ार होंगे। बतलायें आप क्या फरमाते हैं।

वकीलसाहब—मुझे खुद आप की राय पसन्द है मगर वोह चुड़ैल वहां मौजूद होगी मुझे ऐसी फारखती लिखने का मौका कैसे मिलेगा ?।

शेरखाँ — मैं यह कह दूंगा कि जायदाद वग़ैरह के हकूक जिस तरह इस वक्त बाक़ी हैं वैसेही बाक़ी रहेंगे सिर्फ नक़्द रुपया जो दिया जाता है उसकी रसीद लिख दीजिये। आप रसीद में सब बातें जो मैंने आप को बतलाई हैं लिख दीजियेगा कोई उस वक्त पढ़ने न पायेगा; सब रजिस्टार को मैं कमाशन् के ज़रिये से बुला रक्खूंगा आप रजिस्टरी करा दीजियेगा पीछे को कोई क्या कर सकता है और इसमें अगर कुछ बखेड़ा होगा मैं कुरानपाक की कसम खाकर कहता हूं कि तमाम उम्र आपकी मदद करूंगा और आप का बाल न बीका होने दूंगा। अगर आपको कोई नुकसान इस मामले में पहुंच जाये तो मुझे शेरखां न कहियेगा बकरे की औलाद कहियेगा, बस अब आपको इतमीनान हुआ।

वकील— बस बस कोतवालसाहब आप ज्यादा न कहिये मुझे इतमीनान है। कौल मरदां जांदारद।

कोतवालसाहब ने उसी वक्त पांचसौ रुपये का नोट वकील साहब के हाथ धरा और वहां से सीधे नज़ीरहसन के पास आये।

शेरखाँ — सैयदसाहब मैं इस वक्त आपके पास इस ग़रज़ से आया हूं कि कल पंचायत के वक्त आप गुफ्तगू न कीजियेगा मैं जो मुनासिब समझूं

बातचीत करूंगा।

**नज़ीरहसन**—मगर खांसाहब अब गुफ्तगू का कौन मौका बाकी रहेगा जो कुछ अमीरहसन को और पाना है दे दूंगा और वालिदा की जायदाद का इकरारनामा लिख दूंगा।

**शेरखाँ** — क्या आप चाहते हैं कि अमीरहसन कलही कौड़ी २ के मोहताज हो जायें? क्या आप इस बात को गवारा करते हैं कि सैयदकाज़िमहुसैन खां बहादुर की औलाद आगरे में भीख मांगती फिरे? क्या आप वाकई अपने भाई के दुश्मन हो गये हैं?।

**नज़ीरहसन** — तोबह २ आप यह क्या कह रहे हैं, मगर मैं या आप जो जिसकी किस्मत हो उस्से क्योंकर बचा सकते हैं?।

**शेरखाँ**—मैं बचा सक्ता हूं बशर्ते कि आप मेरे कहने पर अमल करें। कल दो तीन हज़ार रुपये खैर आप कह सुन कर शौक से दे दीजिये इलाका या जायदाद बेगमसाहब का कोई तज़किरा न कीजियेगा अगर वोह ऐय्यारा जिक्र छेड़े तो साफ कह दीजियेगा कि जब तक बेगमसाहबा ज़िन्दा हैं इसका तज़किरा बेकार है उनके इन्तकाल के बाद अपना निस्फ ले लेंगी। लेकिन अब कोई इकरारनामा वग़ैरह लिखने पर कल रज़ामन्द न हो जाइयेगा।

**नज़ीरहसन** — मैं आप का मन्सा कुछ नहीं समझा ज़रा साफ २ मुझसे कहिये तो मैं अपनी राय कायम करूँ।

**शेरखाँ** — मैं इस्से ज्यादा एक लफज़ भी आप से न कहूंगा। जिस कद्र मैंने कहा है वही आप कल कीजिये और बस मैं रुखसत होता हूँ।

दूसरे रोज़ ठीक नौ बजे कोतवालसाहब सब रजिस्टरार के पास गये।

**सबरजिस्टरार** — इन्सपेक्टर साहब मिजाज तो अच्छा है। हम बहुत रोज़ से आपको नहीं देखा।

**शेरखाँ** — जी हां इन दिनों से मुझे काम ज्यादा रहा शहर में चोरियों की कसरत थी इस वजह से हाज़री का इत्तफ़ाक नहीं हुआ।

**सबरजिस्टरार**—मेरे पासभी काम बहुत रहा। कल सबजज का लड़का एक मुख्तारनामा रजिस्टरी कराया। हम सुना भाई २ में कुछ गोलमाल हो रहा है।

**शेरखाँ** — जी हां मैं भी यही सुन

रहा हूं आज फिर आप को थोड़ी तकलीफ करनी होगी । मैं इसी वास्ते हाज़िर हुआ हूं ।

**सबरजिस्टार**— क्या कोई मुख्तारनामा फिर होगा ? ।

**शेरखाँ** — आज कोई और दस्तावेज़ रजिस्टरी होगी आप मेहर्बानी करके मेरे साथ चले चलिये । कमीशन् के ज़रिये से रजिस्टरी होगी आपको फीस मय कमीशन् दी जायगी ।

**सबरजिस्टरार** — आप ज़िम्मादार हैं कि हमारा फीस और गाड़ी का किराया सब मिलेगा ? ।

**शेरखाँ** — जी हां आप मेरे साथ इस गाड़ी पर चलिये और इसी गाड़ी पर लौट आइयेगा मगर मैं आप का मामूली दस रुपये किराया गाड़ी इलावा कमीशन् फीस के दूंगा ।

**सबरजिस्टरार** — ठीक तो ।

दस बजने को दस मिन्ट बाकी थे कि सबरजिस्टरार और शेरखां दोनों पहुँच गये । सबरजिस्टरारसाहब दूसरे कमरे में बैठाये गये और शेरखां और नज़ीरहसन वकीलसाहब के मुन्तज़िर थे ।

ठीक दस बजे मिसेज़ स्टील बहुतही बनी ठनी मैं वकीलसाहब व हिदायतरसूल के हमराह हुई ।

**मिसेज़ स्टील** – हाउ डू यू डू गुडमानिंग मिस्टर इन्सपेक्टर ! ओफ़ आज बहुत गर्मी है ।

**शेरखाँ** — बन्दगी ।

**नज़ीरहसन**—जी हां कहिये आप मुख्तारनामा रजिस्टरीशुदा लाईं ? ।

**मिसेज़ स्टील** — हां मुख्तारनामा मौजूद है । अब फर्माइये मिस्टर अमीरहसन को कुल कितना मिलना है ? ।

**नज़ीरहसन** — कल मेरे आप के सब अमूर तै हो चुके हैं आप अपनी पाकेट बुक में देखिये मुझे याद नहीं ।

**मिसेज़ स्टील** — तीन हज़ार चार सौ बारह रुपये । मगर इसमे कीमत मकान व ज़ेवरात व इलाका शामिल नहीं है, बेहतर होगा अगर आप अपने भाई का हुकूक जो इन सब जाएदाद मे है खरीद लीजिये और हमको रुपये दे दीजिये । आपके भाई का इरादा सा मिल ( Saw mill ) खोलने का है उसमे बहुत रुपये की ज़रूरत होगी जो रुपये उनके पास मौजूद हैं वोह बहुत कम हैं हर्गिज़ इतने बड़े कारखाने चलाने को काफी नहीं हैं इस वास्ते अगर आप

नक़्द रुपये देने पर रज़ामन्द हों तो मैं बहुत किफ़ायत में उनके हकूक आप के हाथ फ़रोख़्त कर डालूंगी। मिस्टर नज़ीरहसन आप के भाई पर यह बड़ी इनायत होगी और मेरा यह कहना बेकार है कि वोह निहायत एहसानमन्द होंगे।

**शेरखाँ** — मेमसाहब इस वक़्त जो बातचीत है वोह मौजूदह जायदाद के निस्बत है मकान या इलाक़ा या ज़ेवरात जब तक सिकन्दर बेगम साहबा ज़िन्दा हैं न नज़ीरहसन की है न अमीरहसनकी। बेगमसाहबा मुमकिन है अभी सौ बर्स और जीयें तो ऐसी हालत में कच्ची उम्मेद पर इस जायदाद की खरीदारी नज़ीरहसन नहीं कर सकते।

**मिसेज़ स्टील**— लेकिन आप याद रक्खें शहर में बहुत ऐसे महाजन मौजूद हैं जो उस हक़ की खरीदारी को आज दिन तैयार है।

**शेरखाँ** — आप शौक से उनके हाथ फ़रोख़्त कर डालिये,जब बेगमसाहबा मरेंगी अगर कोई नज़ीरहसन को इस मकान से बेदखल करने आवेगा तब की तब है। आपही ग़ौरकर फ़र्मायें कि नज़ीरहसन को कितने काम हैं अमीरहसन अपना रुपया लेकर अलग होगये फ़ातिहादरूद बरबार आमदरफ़्त मेहमान मेज़बान शादी ब्याह सब दुनियां के बखेड़े तो नज़ीरहसन के सिर पड़े; अगर वोह सब रुपए इसी तरह बर्बाद कर दें तो कल क्या भीख मांगेंगे?।

**मिसेज़ स्टील** — मैं नहीं समझी कि मिस्टर इन्सपेक्टर आप क्यों दख़ल दरमाकूलात करते हैं। बातचीत मुझसे और नज़ीरहसन से है आप नाहक दर्मियान में अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाना शुरू कर देते हैं। (नज़ीरसहन की तर्फ़ मुख़ातिब होकर) मिस्टर नज़ीरहसन यह किस क़द्र बे तहज़ीबी की बात है, आपको रोकना चाहिये।

**शेरखां** — नज़ीरहसन की यह मज़ाल है कि मुझे रोक सके। और मैं आपकी आंखें दिखाने से डर नही सकता हूं मुझे इस घर में जब तक सैयद साहब मर्हूम की बीबी मौजूद हैं कोई नहीं रोक सकता। अगर आप को तीन हज़ार चार सौ बारह रुपए लेने मंजूर हों, बिसमिल्ला लीजिये रसीद दीजिये वर्ना मा बखैर शुमा सलामत्।

**मिसेज़ ह्वील** — बहुत बेहतर मैं रुपये लेती हूं। लेकिन अगर कुल हुकूक मिस्टर अमीरहसन के फरोख्त हो जायें तो फिर आपको शिकायत का मौका न रहेगा और न हक़ शफ़ा।

नज़ीरहसन ने तीन हज़ार चार सौ बारह रुपये मँगवा कर वकीलसाहब के हाथ में दिये, और वकीलसाहब ने एक दस्तावेज़ हस्ब ज़ैल लिख दी।

मनके मौलवी करीमुल्ला वकील अदालत आगरा व मुख्तार आम सैयद अमीरहसन खां का हूं।

चूं मुनाकिज़ा बाबत जायदाद मतरूका सैयद काज़िमहुसैन खां बहादुर मर्हूम के दर्मियान मेरे मोअक्किल अमीरहसन और उनके भाई सैयद नज़ीरहसन के था उसका आज कुल हिसाब किताब हुआ। मुबलिग़ चालीस हज़ार रुपये मेरे मुअक्किल को पहिले वसूल हो चुके हैं। मुबलिग़ तीन हज़ार चार सौ बारह रुपये कि निस्फ उसका एक हज़ार सात सौ छ रुपया होता है आज बाद हिसाब किताब के बाबत जायदाद मन्कूला व ग़ैर मन्कूला असबाब व ज़ेवरात व ज़िमींदारी वगैरह के मुसम्मी सैयद नज़ीरहसन से वसूल पाया। अब मेरे मुवक्किल को कोई दावा किसी किस्म का बाकी न रहा, जो हकूक इस वक्त उनको हासिल थे या आइन्दा हासिल हों उन सब की बाबत कुल रुपये तमाम व कमाल सैयद नज़ीरहसन और उनकी वालिदा नवाब सिकन्दरबेगम साहबा से वसूल हो गया मेरे मुवक्किल को कोई दावा किसी किस्म का न रहा और न रहेगा इस लिये यह दस्तावेज़ बतौर रसीद व फ़ारग़खती के हस्ब अख्त्यार मुख्तारनामा आम रजिष्टरीशुदा के लिख दिया कि सनद रहे और काम आवे— अलमरकूम।

**मिसेज़ ह्वील** — वकीलसाहब आपने रसीद लिख दी।

**वकील**—जी हां, मैंने रसीद लिख दी, आप सबरजिस्ट्रार को बुलवायें रजिष्टरी होजाये। मेमसाहब आप इसपर गवाही कर दीजिये और एक गवाही इन्स्पेक्टर साहब आप कर दीजिये।

मेमसाहबा ने फौरन् दस्तखत कर दिये। शेरखां ने जब दस्तखत करने को दस्तावेज़ हाथ में ली, हिदायतरसूल ने कुछ बोलना चाहा मगर शेरखां ने

इस गुस्से से उसकी तर्फ़ देखा कि हिदायतरसूल के हवास गायब हो गये और फिर हांथ बढ़ाने की जुर्रत न रही। बाद तकमील दस्तावेज़ सबरजिष्टरारसाहब बुलाये गये उनके रूबरू दस्तावेज़ वास्ते रजिष्टरी के पेश हुई और उसकी तकमील व तहरीर व वसूलयाबी ज़र मुन्दर्जा से मौलवी करीमुल्ला ने इकरार किया और दस्तावेज़ हस्ब ज़ाबता रजिष्टरी हो गई।

**सबरजिष्टरार** — एक अर्ज़ी आठ आने के टिकट पर मेरी तलबी के लिये होना चाहिये वह भी दाख़िल कर दीजिये।

उसी वक़्त दर्ख़ास्त भी तहरीर हो कर मौलवी करीमुल्ला के दस्तख़त से मुज़ैयन हो गई और सबरजिस्टरार के हवाले कर दी गई।

**शेरखाँ** — और आपकी फ़ीस कौन देगा? दस रुपये किराया गाड़ी का तो मेरे ज़िम्मे है।

**सबरजिष्टरार** — हमारा फ़ीस और कमीशन कायदे के रू से मौलवीसाहब को देना चाहिये।

**मिसेज़ स्टील** — मगर मैं इस रुपये में से नहीं दे सकी।

**करीमुल्ला** — कानूनन् आपही को देना चाहिये।

चुनान्चे दस रुपये कमीशन और फ़ीस रजिष्टरी भी मिसेज़ स्टील को देने पड़े।

**सबरजिस्टरार** — यह दस्तावेज़ हम नज़ीरहसन को देगा।

**वकील** — जी हां।

वकीलसाहब, मिसेज़स्टील और हिदायतरसूल वहां से रुख़सत हुये। इधर तो शेरखां अपनी कामयाबी पर मसरूर थे मगर हिदायतरसूल के आये हवास ग़ायब थे।

**हिदायतरसूल** — मौलवी साहब आप के पास रसीद का मसौदा है जब आपने पढ़ा अच्छी तरह मेरी समझ में नहीं आया।

**मिसेज़ स्टील** — हां मैं भी कुछ अच्छीतरह से नहीं समझी।

**वकील** — उसमें समझना क्या था मैंने कुल रुपये की रसीद लिख दी आपको हिन्दी की चन्दी निकालना था तो मेरे नाम मुख़तारनामा ही नाहक़ को किया।

**हिदायतरसूल** — ग़लती तो हुई मगर ख़ैर कुछ हम समझे कुछ तुम

समझे ।

वकील — ( आहिस्ता से ) जनाब अगर आप लोग मेरी इस तरह से इत-बारी करेंगी तो मैं आजही अदालत में बकीया मेहनताने का दावा दायर कर दूंगा, आपने मुझे समझा क्या है ? ।

मिसेज़ स्टील — नहीं २ मौलवी साहब हम आप से खुश हैं, आप खफ़ा न हों ।

हिदायतरसूल — आप सीखपा क्यों होती हैं । शुदनी शुद दिगर चे ख़्वाहद शुद ।

---

बाब बारहवाँ ।

ट्रेल एण्ड को० का बिल ।

मौलवी करीमुल्लासाहब रास्ते ही से घर तशरीफ ले गये मगर मिसेज़स्टील और हिदायतरसूल को अमीरहसन के पास आना ज़रूरी था । ज्यादा जल्दी रुपये देने की न थी जो नज़ीरहसन से मिले थे बल्कि हालात से मुत्तला करना मकसूद था ।

मिसेज़ स्टील—यह रुपये सब अ-मीरहसन को दे देने चाहियें ।

हिदायतरसूल—हां इस वक्त चल कर रुपये दे दो, थोड़ी देर में ट्रेल का बिल आता होगा, इन्शा अल्ला यह भी और बङ्क में जो जमा है सब तुम्हें दि-लवा देता हूं ।

मिसेज़ स्टील—क्या तुम ट्रेल के यहां तकाज़ा करने को कह आये ? ।

हिदायतरसूल—हां मुझे खुद उस का बाबू मिला था मैंने बतौर खुद बिल करने की फ़र्मायश कर दी है, मैं सम-झता हूं बिल आ चुका होगा या रास्ते में होगा ।

मिसेज़ स्टील—क्या तुम्हें इस व-कील की कार्रवाई पर कुछ शुबहा मा-लूम हुआ जो तुमने बार २ उससे तंज़ीया गुफ्तगू की और उसे ख्वाहम्-ख्वाह नाराज़ कर दिया ।

हिदायतरसूल—शुबहा वल्ला उसने हम सबके चूना लगा दिया मगर अब दम मारने का मौका नहीं है, क्योंकि ज़रा लब हिले और कुल मामला ग़-तर्बूद होगया ।

मिसेज़ स्टील—खैर तोहै, बताओ वकील ने क्या चालाकी की ? ।

हिदायतरसूल—उसने रसीद में कुल माल असबाब इलाका वगैरह हर शय से फ़ारखती कर दी, अब तो एक फूटी कौड़ी भी नज़ीरहसन से नहीं

मिल सकती, मेरा माथा उसी वक्त ठनका था, जब कल शेर खां ने रजिस्टरी शुदा मुख्तारनामे की पख लगा दी थी, कम से कम इस बेइमान वकील को पांच हज़ार नज़ीरहसन से मिले होंगे बलके ज्यादा । वल्ला नज़ीरहसन का बड़ा कारी जोड़ चल गया हम तुम सब उल्लू रहे, वकील का मतलब बन गया।

मिसेज़ स्टील — अरे ग़ज़ब ! कुल की फारिग़ख़ती हो गई, तुमने वहीं क्यों न टोका ?।

हिदायतरसूल— जी हां टोक कर तुमको और अपने को दोनों को जेलखाने भिजवाता। वकील उस वक्त कह देता कि दो सौ रुपये उसको दे कर पांच हज़ार की रसीद हम लोगों ने लिखवाई हम दोनों पर ज़ालसाज़ी का मुकद्दमा कायम होता, जेलखाने जाते।

मिसेज़ स्टील — उसकी पांच हज़ार की रसीद टिकिटचस्पां मौजूद थी वह क्यों कर अब इनकार कर सकता था ?।

हिदायतरसूल — चेक का रुपया तक अभी बङ्क से नहीं आया और आप कहती हैं वकील कैसे इनकार करता। मेमसाहब अब जो होना था हो गया, दिलही दिल में रखिये ज़बान न खोलिये वर्ना खुदा जाने क्या २ फिसादात बर्पा हों, चलिये मियां अमीरहसन को यह रुपये दीजिये और आरे की कल खरीदने की इजाज़त हासिल कीजिये, अल्लाह २ खैर सल्लाह।

मिसेज़ स्टील और हिदायतरसूल कमरे में पहुँचने भी न पाये थे कि अमीरहसन के चश्म बराह दिल ने उन्हे दर्वाज़े पर पहुँचा दिया।

अमीरहसन—माई डीअर मिसेज़ स्टील ! कहो आज क्या कर लाईं ?।

मिसेज़ स्टील — यह लीजिये कीमत पोशाक और पेनशिन की बाबत आपका हिस्सा है इससे ज्यादा कुछ नहीं मिल सका, इलाका और ज़ेवरात में आप का हिस्सा महफूज़ है जब तक आप की वालिदा ज़िन्दा हैं उसमें किसी का हांथ नहीं पहुँच सक्ता उनके इन्तकाल के वक्त निस्फ आपका कोई हज़म नहीं कर सकता, अगर शेरखां न होता तो उसके एवज़ में भी मैं नक्द रुपये ले लेती मगर उस कमबख्त ने नज़ीरहसन को भड़का दिया।

अमीरहसन — उस मर्दूद को मालूम नहीं मुझ से क्या अदावत पड़ गई है कि हर रोज़ मौजूद रहता है, खैर जिस क़दर मिला वोही ग़नीमत है। 'अज़ ख़िर्स मुए बस अस्त' वक्त अगर इस कद्र पैरवी और कोशिश आप न करतीं तो नज़ीरहसन मुझे एक पैसा भी न देते यह सब आपही की बदौलत है और उसके लिये मैं दिल से मिसेज़ स्टील तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूं और ज़िन्दगी भर एहसानमन्द रहूंगा।

इसी दर्मियान में बैरा ने एक लिफ़ाफ़ा दिया, अमीरहसन ने खोला और पढ़ा।

अमीरहसन — हाई चार्ज ! इक्कीस हज़ार छ सौ पंचानवे !

हिदायतरसूल— क्या हुजूर ने फर्माया, इक्कीस हज़ार छ सौ ! खैरियत तो है !।

अमीरहसन— कुछ नहीं, सब खैरियत है। ट्रेल एण्ड को॰ का बिल है, मैं नहीं जानता था कि उसका इतना रुपया हो गया है।

हिदायतरसूल — हुजूर यह खबर तमाम शहर में मशहूर है, कि नज़ीरहसन से रुपया मिल गया सब ही मुंह फैलाये हुये हैं, शाम तक सब के बिल आन मौजूद होंगे, अगर हुजूर सब का रुपये दे देंगे तो आरे की काल कहां से खरीदी जायगी। मेरी राय यह है कि हुजूर सब रुपये का इस वक्त मिसेज़ स्टील के नाम चेक कर दीजिये हम लोग कलही कल खरीदने रवाना हो जायें, बिल वाले बिलबिलाते फिरेंगे जब खुदा रुपया देगा और तिजारत में फ़ायदा होगा सौदागरों को भी दिया जायगा। इस वक्त कर्ज़ अदा करना और अपना रुपया दूसरे के हाथ में दे देना अकल के खिलाफ़ है, आइन्दा जो आप की राय हो।

अमीरहसन— मिसेज़ स्टील ! तुम्हारी इसमें क्या राय है ? आप ने सुना हिदायतरसूल ने जो इस वक्त कहा ?।

मिसेज़ स्टील — मुझे हर्गिज़ मालूम न था कि आप को कुछ कर्ज़ भी देना है और वह भी थोड़ा नहीं, बल्कि बहुत। बेहतर है आप फौरन् किसी अपने मोतमिद या दोस्त के नाम बड़े वाले रुपये की बेची कर दीजिये जिसमें कर्ज़ख्वाहों के हाथ से रुपये बचे रहें और अगर वाकई आप का इरादा कल कायम करने का है तो मुझ से

साफ २ कहिये मैं हिदायतरसूल को हमराह ले कर कल मेल ट्रेन में कलकत्ते चली जाऊँ कल खरीद लाऊं और एक लायक अंगरेज़ मनेजर और एक होशियार इञ्जीनियर नौकर रखती लाऊँ जिस्से फ़ौरन् काम शुरू हो जाए।

अमीरहसन — मुझ को तुम से ज्यादा मोतबिर और मोअज़्ज़िज़ दोस्त कौन मिलेगा मैं आपही के नाम बेची किये देता हूँ, यह रुपये जो आप लाई हैं इसको भी लेती जावें। बेशक मुक़्तज़ाये अकल यही है जो आपकी और हिदायतरसूल की सलाह है।

मिसेज़ स्टील — और कल के बारे में आपने क्या राय कायम की?।

अमीरहसन — 'सलाह माहमा नस्त कां सलाह शुमा अस्त' मेरी वही राय है जो आप की राय हो. सिर्फ मुझे यही पसोपेश होता है कि आप अपना हर्ज कर के मेरे लिये इस कदर तकलीफ न उठायें।

मिसेज़ स्टील—मिस्टर हसन ! मुझे सख्त रंज होता है जब आप पुरानी फैशन् की तकल्लुफ़ी बातें मुझसे करना शुरू करते हैं, क्या खुदा ने आपको पत्थर का बनाया है या खुदा ने आपके जिस्म में दिल नहीं बनाया? फिर क्या सबब है जो इस वक्त तक आप नहीं तमीज़ कर सकते कि मेरी क्या हालत है, मैं क्यों आपके पीछे सरगर्दां हूं, मैं हर वक्त आपही का नाम क्यों वज़ीफा किये हुये हूँ, मैंने सोसाईटी में मिलना जुलना दावत जलसा दोस्त अहबाब सब को क्यों छोड़ दिया। (यह कह कर मिसेज़ स्टील की नीली नीली बड़ी बड़ी और प्यारी प्यारी आंखों से मोतियों से भी ज्यादा खूबसूरत आंसू बहने लगे) मिस्टर अमीरहसन ! अफसोस तुमने आज तक मुझे न पहिचाना और मैं समझती हूँ कि मेरी मुहब्बत मेरी मेहनत मेरी जांनिसारी सब ज़ाया हुई।

हिदायतरसूल —

की छेड़ इस कदर गमे उलफत के खार ने। घबड़ा के रो दिया दिले बेअख्तियार ने॥

इस वक्त अमीरहसन की हालत नाज़रीन खुदही गौर करसक्ते हैं। दफ़ातन् एक परीज़ाद, माहरू, गुल अन्दाम और सब से ज्यादा फैशनएबुल लेडी का इसतरह किसी नाकदरी पर रो

देना हँसी ठट्ठा न था। इस दफ़ातन् कलाई ने अमीरहसन पर जो असर डाला उसकी तहरीर की कुछ एहतियाज नहीं। आतिशे इश्क जो उनके दिल में जल रही थी इन आंसुओं ने उन पर तेल का काम दिया, जो ज़ख़म उन के जिगर पर छिपे हुए थे इन दुज़्दीदह निगाहों ने उनको हरा कर दिया। किस्सा मुख्तसर बेचारा जोशेइश्क से बेचैन हो गया। हिदायतरसूल ने भी यह हालत देख कर आशिक व माशूक को उस वक्त तनहा छोड़ देना मुनासिब समझा और दूसरे कमरे में चले गये। उनके जातेही अमीरहसन ने अपनी माशूका के गले में बांहें डालदीं और उस आलिमेबेखुदी में उनके गुस्ताख़ हाथों और बेअदब होंठों ने मालूम नहीं क्या २ गुस्ताखियां और बेअदबियां कर डालीं।

**अमीरहसन**—प्यारी! तुमने आज खुद बखुद मुझ से जुर्मउलफत का इकबाल करा लिया, ले अब आंसू पोंछो और मेरी तर्फ देखो, बखुदा जिस रोज़ से मैंने तुमको देखा मेरी अजीब हालत होगई है। सोते जागते उठते बैठते तुम्हारा ही तसौव्वर और तुम्हाराही ख्याल रहता है, बकौल दाग़ कि —

किस्ना बावज़अ्है ख्याल उसका।
बेकसी में भी आही जाता है।

प्यारी! मैं जिस क़दर तुम्हारा एहसानमन्द हूँ दुनियां में किसी का नहीं तुमने मेरे दिलमें अपनी प्यारी मुहब्बत डाल दी, मैं बेदिल था, मुझे दिलदार करदिया। मैं वाकिफ़ भी न था कि उलफत क्या चीज़ है, तुमने मुझे ज़ायेका इश्क चखा दिया। इसके इलावा मेरी मुसीबत में मेरे लिये काम आईं, मुझे हर तरह मदद दी, मेरे लिये तकलीफ़ सही, मेहनतें उठाईं खुदा तुमको तुम्हारी मोहब्बत और मेहनत का इनाम दे।

**मिसेज़ स्टील** — हां खुदा इनाम दे, मगर तुम न दोगे!।

**अमीरहसन** — मैं गरीब बिचारा बेकस किस काबिल हूं जो तुम्हें इनाम दे सकूं!।

**मिसेज़ स्टील** — तुम मेरे लिये बादशाह हो, मुझे कुछ नहीं चाहिये सिर्फ तुम्हारी उलफत चाहिये।

**अमीरहसन** — मेरी प्यारी! मेरी जानी! हाय मैं किस तरह अपना दिली इश्क तुम पर जाहिर कर सकूं

अपने दाग़ हाए जिगर की बहार किस्तरह तुम्हें दिखा सकूं, न मैं लुक़्मान हूँ और न फ़ने आशकी में तजरुबाकार; मगर मुझे पूरा यक़ीन है कि जज़्ब दिल मेरी वकालत करेगा और किसी न किसी तरह तुम्हारे दिल पर साबित कर देगा कि —

**ख़ुदा शाहिद किसी की ओर उलफ़त हो तो काफ़िर हो। तुम्ही पर जान देते हैं तुम्ही पर दम निकलता है।**

प्यारी मिसेज स्टील !

**झूठ कहता नहीं मैं सच जानो, काफ़िरे इश्क़ हूँ मुसल्मानो। तुम्हीं से हुई मुझ को उलफ़त कुछ ऐसी, न थी वर्ना अपनी तबीयत कुछ ऐसी। कहा हाल दिल और निकल आये आंसू ; बिगाड़ी मोहब्बत ने आदत कुछ ऐसी।**

**मिसेज़ स्टील** — मेरे प्यारे शहज़ादे ! मुझे एक मर्द से अपने इश्क का इज़्हार करते हुये शर्मिन्दा होना चाहिये, लेकिन शरा में शरम क्या ? मैं तुम से कोई नाजायज़ मोहब्बत नहीं करना चाहती, जो कुछ चाहती हूं वह यही कि तुम मेरे हो जाओ और मैं तुम्हारी।

**अमीरहसन** — मैं अब तक यह समझता था कि तुम मेरे असली हालत से वाकिफ हो। ऐ जान ! मैं सिवा इन चन्द हज़ार रुपयों के और कोई दौलत नहीं रखता, इलावा इसके मेरी शादी हो चुकीहै, गो मैं सच कहता हूँ वह ब्याह बिलकुल पुराने फ़ैशन से हुआ और मुझे ज़रा भी अपनी बीबी से उल्फत नहीं तब भी मेरे लिये उनका वजूद एक बड़ी भारी मोहीब ज़ञ्जीर है।

**मिसेज़ स्टील** — क्या मेरी मुहब्बत ऐसी कमज़ोर है कि धागे से भी पतली ज़ञ्जीर को नहीं तोड़ सक्ती ? क्या मेरी उलफत ऐसी बेतासीर है कि तुम्हारे दिल को मेरी तरफ मायल नहीं कर सक्ती ? ऐ ज़ालिम जिस तरह मैंने तुझे चाहा, जिस्तरह दिलही दिल में तेरे लिये जली अगर फ़ौलाद या पत्थर से उतनी मुहब्बत करती तो वह भी पसीज जाता, बेरहम से बेरहम इनसान को रहम आ जाता है। सौ बातों की एक बात यह है कि तुम को मुझसे उलफत नहीं अफसोस मेरी उलफत और मेरी मुहब्बत रायगां हुई, हाय

दुनियां में ऐसे लोग भी हैं जिनके माशूक भी आशिक की पर्वाह करते हैं और सच तो यह है कि वोही इश्क असली है—उलफत् का यह मज़ा है कि दों वो भी बेकरार; दोनो तरफ हो आग बराबर लगी हुई ।

अमीरहसन—मैं हर तरह तुम्हारा ताबये फ़र्मा हूं अगर तुम चाहो मैं इसी वक्त अपनी बीबी को तिलाक़ दे सकता हूं लेकिन तुम्हें नहीं छोड़ सकता, बस खुदा के लिये यह झगड़ा खतम कर दो और एक बोसा दे दो ।

मिसेज़ स्टोल थोड़ी देर बराबर रोती रहीं जब हिचकियां बन्द हुईं अचश्म पुरनम् सर से पैर तक अमीरहसन को देखा और खुद गले में बाहें डाल दीं ।

अमीरहसन — मेरी जानी मेरी क्वीन ! मेरी चांद ! खुदा मुझको हमेशा ऐसाही बा-इकबाल रक्खे जैसा इस वक्त हूं ।

मिसेज़ स्टोल तुम मेरी असली हालत से वाकिफ़ नहीं । हिदायतरसूल बखूबी जान्ता है, मैं अपनी ज़िद से यहां पड़ी हूं, लार्ड डिलन, सर जार्ज कूपर्स के पास मेरे बाप की चिट्ठियां मेरी तलबी की आती हैं मगर मैं ऐसी ज़िद्दी हूं कि ज़रा पर्वाह नहीं करती यहां भी कमिश्नर कलक्टर सभी मेरे मिलने को मुश्ताक रहते हैं, मैंने जब से तुम्हें देखा कहीं नहीं गई, तुम्हारे साथ शादी करना मेरे लिये दायमुल हब्स है क्योंकि फिर अंगरेजी सुसाइटी में घुसने न पाऊंगी, किसी बाल या ड्राइङ्ग रूम में पूछी न जाऊंगी अङ्गरेजों को जो नफ्रत हिन्दुस्तानियों से सोशियल मामलात में है वह कोई छिपा हुआ राज़ नहीं, जब शाह ईरान तक लण्डन में बनाये गये तो कोई दूसरा क्योंकर बच सकता है सबब यह है कि हम लोगों के ज़ाब्ते व क़ायद ऐसे बँधे हुये हैं कि ज़रा फ़र्क़ गुज़श्त हुये और हँसे गये, सफेद नेक-टाई के एवज़ अगर किसी जेन्टिलमैन ने सुर्ख डिनर सूट के साथ इस्तैमाल कर ली उसी वक्त नज़री हो गया, मैं इन सब नुकसानात को जान्ती हूं लेकिन तुम्हारे लिये सब गवारा करूंगी और ऐ प्यारे सिर्फ तुम्हारी हो कर रहूंगी ।

अमीरहसन — मुझे इस बात से इत्तफाक नहीं है कि कुल अङ्गरेज़ हिन्दुस्तानियों से नफरत् करते हैं, क्योंकि

मुझे सदहा ऐसे आलीख्याल अङ्गरेज़ मालूम हैं जो हिन्दुस्तानियों से निहायत मोहब्बत और खुलूस से मिलते हैं, आनरेबुल मिस्टर अमीरअली, मिस्टर सी० रुस्तम जी, मिस्टर मुहम्मद अहमद, कुंअर हरनामसिंह बहादुर, सी० आई० ई० इन सब जेन्टिलमेनों ने बिलायती मेमों से शादी की है कुछ भी तकलीफ या नुकसान उन लेडियों को नहीं पहुँचा।

मिसेज़ व्हील — हां मगर यह तो देखो कि उन्हों ने किन आलो-पायेगाह जेन्टिलमेनों से ब्याह किया, आनरेबुल मिस्टर जस्टिस अमीर अली किस ल्याकत और किस दर्जा के शख्स हैं हिन्दुस्तानियों में अगर आनरेबुल सर सैयद अहमद खां बहादुर के बाद मुसलमानों की खैरतलबी में किसी ने हिस्सा लिया है तो वह मिस्टर जस्टिस अमीरअली ने, कुँअर हरनामसिंह को कौन नहीं जानता उनके मर्तबे से कौन वाकिफ नहीं, मिस्टर महमूद अहमद किस बाप के बेटे हैं, नवाब वकारउलमुल्क इन्तसार जंग बहादुर की काबलियत और इज्ज़त क्या दुनियां में इतना भी असर न रखती कि उनकी इङ्गलिश बङ्ग सुसाईटी में अच्छी तरह की जाती ?।

अमीरहसन — हां यह तुम्हारा कहना सच है, इस लिये मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं भी दुनियां में कुछ हो लूं उसके बाद तुमसे शादी करूँ।

इतने में मियां हिदायतरसूल बरआमद हुये।

हिदायतरसूल — आज तो आप लोगों ने पूरी मसनवी गुलज़ार-इश्क खतम कर दी इश्कबाज़ी के लिये बहुत वक्त मिलेंगे पहिले यह तै कीजिये कि कल खरीदने कलकत्ते जाना है या नहीं, जाने का इरादा हो तो वैसा कहिये, मैं इन्तज़ाम करूँ।

मिसेज़ व्हील — कल डांक गाड़ी में चलना है आप तैयारी कीजिये।

अमीरहसन — कहो तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूं।

मिसेज़ व्हील — सिवा ज़ेरबारी के और कोई नतीजा नहीं, हम और हिदायतरसूल अपने खर्च से कलकत्ते जायंगे। अमीरहसन! अब रुपये को रुपया समझना सीखो और फज़ूलखर्ची तर्क करो, इंगलैण्ड को से नाहक हज़ारहा रुपये की चीज़ें तुमने खरीद लीं।

अमीरहसन — कोई शै मैंने फ़जूल नहीं खरीदी, सब रोज़मर्रा के इस्तैमाल की थीं ब-हरहाल अब एहतियात रक्खूंगा ।

हिदायतरसूल — और कल कहां कायम होगी कोई जगह भी तजवीज़ हुई ?

मिसेज़ स्टील — इस बँगले में बहुत बड़ा हाता है जगह बहुत है स्टेसन भी बहुत करीब है मेरे नज़दीक इस्से बेहतर दूसरी जगह कोई नहीं ।

अमीरहसन — मगर डर यह है कि शायद राजा साहब अपने बँगले में कल न कायम होने दें ।

हिदायतरसूल — और इस बँगले का किराया भी ज़्यादा है ।

मिसेज़ स्टील — अच्छा मैं अपने बँगले में इन्तज़ाम करलूंगी मेरा मालिक मकान कुछ उज्र न करेगा ।

हिदायतरसूल — और मनेजर साहब कहां रहेंगे ?।

मिसेज़ स्टील — हां यह मैं भूल गई, मनेजर साहब बहुत मोअज्ज़िज़ जेन्टिलमैन हैं मैं उन्हें अपने बँगले में एक कमरा दे दूंगी, बूढ़े आदमीको एक बँगले में रहने देने में कुछ हर्ज नहीं ।

अमीरहसन ने उसी वक्त बंक के नाम कुल रुपये का चेक मिसेज़ स्टील के हक़ में लिख दिया सिर्फ़ एक हज़ार रुपये अपने सर्फ़ के लिये मँगवा लिये ।

मिसेज़ स्टील—एक सादे कागज़ पर मुझे अपनी तर्फ़ से खरीदारी कल का इजाज़तनामा भी लिख दीजिये और उसमें मनेजर की तकर्रुरी की भी इजाज़त हो ।

अमीरहसन ने हसब ज़ैल इजाज़तनामा लिख दिया ।

## इजाज़तनामा ।

मिसेज़ स्टील मेरी तरफ से वास्ते खरीदारी सा मिल ( Saw Mill ) के कलकत्ते जाती हैं, मैं उनको इजाज़त देता हूं कि जिस कीमत की कल जहां चाहें खरीद करें और जिस शख्स को पसन्द करें बतौर मनेजर या असिस्टेंट मनेजर कारखाना मज़कूर मुकर्रर कर लें और जो चाहें उसकी तनखाह मुकर्रर कर दें मुझको कोई उज्र उसकी मंजूरी में न होगा । दस्तख़त सैयद अमीरहसन दस्तखत अङ्गरेजी मरकूम , माह, सन्

अमीरहसन— मैं समझता हूं यह इजाज़तनामा काफ़ी है ।

मिसेज़ स्टील — हां अब इसमें कुछ

तर्मीम या इज़ाफ़े की ज़रूरत नहीं है, थैंक यू।

मिसेज़ हील मय हिदायतरसूल के मिस्टर अमीरहसन से रुखसत हुईं, चलते वक्त खूब बोसेबाज़ी हुई।

---

## बाब तेरहवां।

### या मिल की खरीदारी

मिसेज़ हील बहमराही हिदायत रसूल रवाना कलकत्ता हुईं, स्टेशन पर हमारे दोस्त सैयद अमीरहसन खुदा हाफ़िज़ कहते मौजूद थे। मेमसाहब ने अपने लिये औव्वल दर्जे का रिटर्न टिकिट लिया था और मियां हिदायतरसूल दर्जा दोयम में रौनक अफ़रोज़ थे; दूसरे दिन सुबह को पटने पहुंचे जहां मिस्टर गर्नर साहब यानि मेमसाहबा के वालिद माजिद तशरीफ़फ़र्मा थे। मेमसाहब अपने बाप के घर मेहमान होना या अपने को मिस्टर गर्नर की बेटी बतलाना मसलहत के खिलाफ़ समझीं, इस लिये ग्रेट ईस्टर्न होटल में मुकीम हुईं और अपने वालिद को वहीं बुलवा भेजा।

हिदायतरसूल - क्या वालिदसाहब को भी कलकत्ते ले चलियेगा?।

मेम — हां वोह इन मामलात में वाकिफ़कार हैं।

हिदायतरसूल — चूल्हे भाड़ में जायें ये मामलात! क्या सचमुच कल की खरीदारी मंज़ूर है? अजी किस बखेड़े में पड़ती हो आगरे में कल वल एक न चलेगी चलो कलकत्ते में मज़े उड़ायें दो हिस्से तुम्हारे एक हिस्सा मेरा लौट के हज़रत से कह देंगे कि रुपये होटल से चोरी गये।

मेम — ओ नो, ऐसा नहीं हो सकता, ऐब करने को हुनर चाहिये दो चार हज़ार की पुरानी कल खरीदना ज़रूर चाहिये और वहां एक मर्तबा खड़ी भी कर दी जायेगी, चलने की किस मसखरे को उमेद है। इस तरह ब-आसानी रुपया हज़म हो सकता है चोरी का फ़िकरा बहुत मोटा है और उसमें बहुत फ़िसाद हैं, पुलिस से तहकीकात होगी बंक से नोट के नम्बर दर्याफ़्त होंगे, कलई खुल जायगी।

हिदायतरसूल—अच्छा यही सही, और एक फ़िकरा मेरे ज़ेहन में आया है, कलकत्ते में चल कर किसी बड़े जौहरी को लूटेंगे।

मेम — वोह कैसे?।

**हिदायतरसूल**— अच्छा कलकत्ते पहुँचो तब यह गुर बताऊंगा।

**मेम** — नहीं मैं इस वक्त सुना चाहती हूँ किसी से तज़किरा न करूंगी।

**हिदायतरसूल**—मैं इस वक्त हर्गिज़ न बताउंगा, तुम से सिर्फ यही मदद चाहता हूँ कि मुझे अपने साथ कलकत्ते मत ले जावो, मैं तनहा जाऊंगा जिस रोज़ बता दो तुम्हें इसी होटल में मिल जाउंगा और जो लाउंगा उसमें निस्फ २ बांट दूंगा बशर्ते कि कल वाली रकम में तुम भी मुझे बराबर का हिस्सा दो, इस वक्त मुझे पांच सौ रुपै सिर्फ चाहिये। वोह दे दो, बाकी फिर देखा जायगा।

**मिसेज़ होल** — बहुत बेहतर।

मेमसाहब के वालिद माजिद भी तशरीफ लाये और अपनी साहबज़ादी से मिल कर और अमीरहसन के हालात सुन कर बेहद खुश हुये।

**मिसेज़ होल**—पापा! आप अपना नाम बदल दीजिये और मुझसे आप अपनी कराबत का इज़हार वहां या कलकत्ते में हर्गिज़ न कीजियेगा।

**मिस्टर गर्नर** — बहुत बेहतर, मेरा असली नाम चार्ल्स बेर्सफोर्ड है।

**मिसेज़ होल** — हां नाम भी मोअज्ज़िज़ है थाकर के यहां अपने कार्ड छपवा लीजियेगा।

मिसेज़ होल और मिस्टर गर्नर दोनों कलकत्ते आये और चारङ्गी होटल में मुकीम हुये, दोनों दूसरेही रोज टामस एण्ड को॰ के कारखाने में तशरीफ ले गये और सब किसिम की कलें मुलाहज़ा कीं।

**टामस** — आप किस कीमत की सा मिल चाहती हैं, एक छोटी कल चार हज़ार रुपये की मेरे यहां मौजूद है साल दो सालकी मुस्तैमिला है मगर दो चार बरस अच्छी तरह काम देगी अगर पसन्द हो तो आज ही रवाना कर दूं।

**मिसेज़ स्टोल** — थैङ्क यू, मुझे ऐसी ही कल की ज़रूरत है भला यह तो बताइये कि उसको आगरे में चलायेगा कौन, न मैं जान्ती हूँ और न मेरे मनेजर चार्ल्स बर्सफोर्ड जान्ते हैं अगर आप मेहर्बानी करके कोई लायक शख्स बतौर असिस्टेण्ट मनेजर के मुकर्रर कर दीजिये तो मैं निहायत शुक्रगुज़ार हूंगी।

**टामस** — मिस्टर वीलियम् ऐटकिंस

नामी एक नौ जवान शख्स पार्क ष्ट्रीट में रहते हैं और जहां तक मैं ख्याल करता हूँ नौकरी के मुतलाशी भी हैं अगर कहिये तो मैं उन्हें बुलवा भेजूं।

**मिसेज़ स्टील** — बहुत मुनासिब, मैं चन्द मिनिट इन्तज़ार कर सकती हूं।

मिस्टर ऐटकिंस बुलाये गये वह एक यूरेशियन् नौजवान शख्स थे किसी ज़माने में बहरामघाट पर गवर्मेण्ट सा मिल में नौकर रह चुके थे इस लिये कारखाने के कामों में पूरा तजरुबा रखते थे, एक सौ पचास रुपये पर उस वक्त वोह नौकर रक्खे गये उन्हों ने सा मिल और उसके जुमला लिवाज़मात मुलाहज़ा कर के पसन्द किये और चार हज़ार रुपये दे कर कुल आलात उसी वक्त मिसेज़ स्टील ने खरीद किये।

**मिसेज़ स्टील**— मिस्टर ऐटकिंस मैं इस वक्त आप से मिलकर बेहद मसरूर हुई। चलिये आज मेरे साथ होटल में खाना खाइये आगरे में हम आप एकही बँगले में रहेंगें और मुझको उम्मेद है कि वहां आप बहुत खुश रहेंगे, मैं आपको जो ज़रूरत हो ऐडवांस दे दूंगी। मिस्टर टामस ! बराह मेहरबानी इन सब कलों को हस्ब ज़ैल निशान से रेल में बेरिङ्ग भेजवा कर रेलवे रसीद डांक में मेरे पास भेज दीजिये।

**मिष्टर टामस**—थैङ्क यू म्याडम, मैं आजही निहायत हिफाज़त से रवाना कर दूंगा।

मिसेज़ स्टील मिस्टर गर्नर (हाल मिस्टर चार्ल्स बेरेसफोर्ड) व मिस्टर ऐटकिन्स तीनों गाड़ी में सवार हो कर चारशी होटल में तशरीफ लाये। वालिद बुर्जुगवार कोई बहाना करके बाहर चले गये और मिसेज़ स्टील और मिस्टर ऐटकिन्स दोनों बातें करनेलगे।

**मिसेज़ स्टील** — मिस्टर ऐटकिन्स मैं आज बहुत खुशनसीब थी कि आप से मुलाकात हुई।

**ऐटकिन्स** — हां म्याडम यह मेरी खुशनसीबी थी कि छ महीने की बेकारी के बाद मुझे नौकरी मिली।

**मिसेज़ स्टील** – देखिये मुझे म्याडम न कहिये, हमारे आपके तकल्लुफ बर-तरफ, दोस्ताना बरताव में जो लुत्फ है वोह वाहियात तकल्लुफ में हर्गिज़ नहीं, आपकी शादी होचुकी है? मेरे इस सवाल को माफ फर्माइयेगा।

**मिस्टर ऐटकिन्स**—हां मेरा व्याह एक मर्तबा हुआ था, मगर मेरी प्यारी